A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 02 जून, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 263, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

'सैन्य-सत्य' को 'सियासी-सच ' से टैग करना मुनासिब नहीं

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

पाकिस्तान के हालिया सैन्य संघर्ष के तीन सप्ताह बाद सिंगापुर में प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने भारत-पाक संघर्ष में भारतीय लड़ाकू जेट विमानों की क्षति के बारे में जो बयान दिया, वह काफी कुछ बयां करता है। सीडीएस जनरल चौहान 31 मई को आयोजित शांग्री-ला डायलॉग में भाग लेने के लिए सिंगापुर पहुंचे थे। शांग्री-ला-डॉयलॉग के भाषण में सीडीएस चौहान का यह दर्द भी छलक पड़ा कि 'ऑपरेशन-सिंदूर' के दौरान सैन्य-बलों की 15 फीसदी ताकत फर्जी खबरों, अफवाहों एवं भ्रामक तथ्यों से लड़ने पर खर्च हुई ।

'बिटवीन द लाइन्स' सीडीएस जनरल चौहान के कथन के निहितार्थ की व्याख्याओं के लिए बड़ा स्पेस है, जहां दक्ष-अदक्ष सैन्य-विशेषज्ञ और राजनेता उन पुराने सवालों का सिलसिला शुरू कर सकते हैं, जो राष्ट्रीय-सुरक्षा के कवच में पीछे दुबके पड़े हैं। केन्द्र सरकार इन सवालों से बचना चाहती है। हालांकि जनरल चौहान के कथन में रणनीतिक हितों की लक्ष्मण रेखाओं का स्पष्ट सीमांकन भी है, जिन्हें लांघा जाना मुनासिब नहीं है। फेक-न्यूज के संदर्भ में सीडीएस का यह दर्द गोदी-मीडिया की अतिरंजित कारगुजारियों पर निर्णायक तीखी टिप्पणी है। और उन ट्रोलर्स के लिये चेतावनी है, जो सोशल-मीडिया पर छद्म राष्ट्रवाद का पट्टी-पहाडा पढ़ा रहे थे। वैसे भी 'सैन्य-सत्य' को 'सियासी-सच' से टैग करना मुनासिब कतई नहीं है।

वैसे सीडीएस जनरल चौहान के बयान के बाद सियासत में लहरें उठने लगी हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने सीडीए अनिल चौहान के बयान का हवाला देते हुए कहा है कि केन्द्र सरकार देश को गुमराह कर रही है। सीडीएस की टिप्पणियों के मद्देनजर कई महत्वपूर्ण सवाल उभर रहे हैं। सवालों का जवाब देने के लिए केन्द्र सरकार को संसद का विशेष सत्र तुरंत बुलाना चाहिए। ये सवाल संसद के विशेष सत्र में ही पूछे जा सकते हैं। खरगे की मांग है कि कारगिल समीक्षा समिति की तरह स्वतंत्र विशेषज्ञ समिति का गठन होना चाहिए, जो मौजूदा रक्षा तैयारियों की समीक्षा कर सके।

सिंगापुर में ही 'ब्लूमबर्ग टीवी' पर साक्षात्कार में 7-10 मई के दर्मियान भारत-पाक सैन्य संघर्ष के संदर्भ में जनरल चौहान से पूछा गया था कि पाकिस्तान व्दारा छह भारतीय विमानों के मार गिराए जाने का दावे मे कितना सचाई है ? सीडीएस जनरल चौहान ने भारत के छह लड़ाकू जेट विमानों को खारिज करते हुए पाकिस्तान के दावे को बिल्कुल ही गलत बताया है। रायटर्स को दिये एक साक्षात्कार में उन्होने कहा कि भारत को भी हवा में शुरूआती नुकसान उठाना पड़ा।

जनरल चौहान ने कहा कि-''महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि जेट क्यों गिराया गया, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि उन्हें क्यों गिराया गया ? संख्या महत्वपूर्ण नहीं है, सिर्फ यही समझना महत्वपूर्ण है कि क्या गलतियां हुईं? अच्छी बात यह है कि हम अपनी सामरिक गलतियों को समझने में सक्षम थे, उसे सुधारा, उसमे सुधार किया और दो दिन बाद इसे फिर से लागू किया गया और लंबी दूरी पर निशाना साधते हुए अपने जेट को फिर से उड़ाया।'' जनरल चौहान के इस कथन में 'बिटवीन द लाइन्स' काफी कुछ पढ़ा और समझा और समझाया जा सकता है। सीडीएस का यह कथन अपरोक्ष स्वीकारोक्ति है कि हमने सामरिक गल्तियों के कारण युद्ध में लडाकू विमान खोये हैं, लेकिन उनके इस कथन को सिर्फ विमान खोने तक रखना सेना के साथ अन्याय होगा। इस घटना को उसके बाद की गई सार्थक सफल रणनीतिक आक्रमण की सफलता के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

फर्जी खबरों, अफवाहों और भ्रामक तथ्यों की चुनौतियों का हवाला देते हुए सीडीएस ने कहा कि सैन्य बलों को इनसे निपटने के लिए अपनी 15 फीसदी ऊर्जा खर्च करना पड़ी। ऑपरेशन-सिंदूर के दौरान गलत सूचनाओं का प्रसारण सबसे बड़ी चुनौती थी। युद्ध कैसे लड़ा जाता है, ऑपरेशन सिंदूर इसके लिए टर्निंग पॉईट है। इससे हम यह भी सीखे कि आधुनिक युद्ध तकनीक के साथ साइबर ऑपरेशन्स और सूचनाओं को नियंत्रित किए बिना लड़ना संभव नही है। आधुनिक युद्ध निरंतर बदलाव की दिशा में है और हमे उसी प्रकार तैयार रहना होगा।

देश के जाने-माने शायर कृष्ण बिहारी 'नूर' की प्रसिद्ध गजल का शेर है- 'सच घटे या बढ़े, सच न रहे, झूठ की कोई इंतिहा ही नहीं।' वैसे सच 'सॉलिड' सीधा, सख्त, समतल और सपाट होता है। एक सेनाध्यक्ष के रूप में सीडीएस चौहान ने सेना के सच की सटीक रणनीतिक व्याख्या की है। उन्होंने सच को ढंकने की कोशिश भी नहीं की है। उन्होने अफवाहों के धुंध में उस निराकार सच को आकार देने की ईमानदार कोशिश की है, जो सामने आना चाहिए। सीडीएस अनिल चौहान के सच में घट-बढ़ की कोई गुंजाइश नहीं है। इसे जनरल चौहान के सच के भावाकार में ही देखा और समझा जाना चाहिए। सेना के सम्मान की यह पहली शर्त होना चाहिए।

लेकिन क्या ऐसा हो पा रहा है? 'आल्हा-ऊदल' की वीर-गाथाओं की तर्ज पर 'ऑपरेशन-सिंदूर' का 'सैन्य-पराक्रम' अब ढोलक-मंजीरों के साथ सियासत की वीर-गाथाओं में ढल चुका है। इस बैकड्रॉप में सीडीएस जनरल अनिल चौहान के 'सैन्य-सत्य' की 'एनाटॉमी' का सूक्ष्म सियासी विश्लेषण और चीर-फाड़ अवश्यंभावी है। सीडीएस के स्टेटमेंट में 'बिटवीन द लाइन्स' धारणाओं की कई इबारत लिखी जा सकती है। वैसे भी 'बिटवीन द लाइन्स' स्पेस में सोचने-समझने और समझाने के लिए शब्दों का साम्राज्य निरंकुश होताहै। 'बिटवीन द लाइन्स' सच को निर्धारित करने का कोई सुनिश्चित पैमाना नहीं है। वहां सिर्फ शब्द होते हैं और शब्दों के खिलंदड़ होते हैं, जो अपने तरीके से शाब्दिक उछल-कूद मचाते हैं। जबकि सीडीएस चौहान के मुताबिक संघर्ष के समय सबसे तर्कसंगत लोग वर्दीधारी लोग ही होते हैं। जाहिर है कि युद्धकाल में सूचनाओं के मामले में इन्हीं पर सबसे ज्यादा भरोसा किया जाना चाहिए।

सीडीएस चौहान ने 'रायटर्स' को दिये अपने साक्षात्कार मे स्पष्ट कर दिया है कि 10 मई के हमले में भारत ने सभी प्रकार के आयुधो और विमानों को उड़ाया। अधिकांश हमले इतने सटीक थे। कुछ तो लक्ष्य के एक मीटर के दायरे तक सटीक रहे। शायद इसी कारण भारत पाकिस्तान के तेरह एयर-बेस और सैन्य प्रतिष्ठानो को निशाना बनाने मे सफल रहा।

अब यह देश की सियासी समझदारी की परीक्षा है कि सीडीएस व्दारा निर्धारित लक्ष्मण रेखाओ की परिधि में सवालों का निराकरण कैसे किया जाए ? उस गैरजरूरी सियासत को कैसे रोका जाए, जो ऑपरेशन-सिंदूर की उपलब्धियों से खिलवाड़ कर रही है। कांग्रेस का आरोप है कि भाजपा ऑपरेशन सिंदूर का राजनीतिकरण कर रही है, भाजपा ने बिहार में चुनाव के पहले तिरंगा यात्राओं का श्रीगणेश करके चुनाव मे इस भुनाने का अभियान शुरू कर दिया है। कांग्रेस जवाबी कार्रवाई में तिरंगा-यात्राएं निकाल रही है। लगता नहीं है कि भाजपा और कांग्रेस में शुरू हो चुका टकराव ऑपरेशन-सिंदूर की सैन्य उपलब्धियों को सियासी प्रदूषण से बचा सकेगा? यह भी संभव नही लगता कि सैन्य उपलब्धियों को सीडीएस जनरल अनिल चौहान के चश्मे से ही पढ़ने की कोशिश कामयाब हो सकेगी?

पहलगाम हमला हुआ तो ममता बनर्जी चुप रहीं : गृहमंत्री शाह

● शाह बोले-अब ऑपरेशन सिंदूर का विरोध कर रहीं,ताकि मुस्लिम वोट बैंक को खुश कर सकें

कोलकाता (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कोलकाता में कहा- ममता बनर्जी मुस्लिम वोट बैंक को खुश करने के लिए ऑपरेशन सिंदूर और वक्फ संशोधन एक्ट का विरोध कर रही हैं। ममता ऐसा करके देश की माताओं और बहनों का अपमान कर रही हैं। पश्चिम बंगाल में 2026 के विधानसभा चुनाव में राज्य की माताएं और बहनें ऑपरेशन सिंदूर की आलोचना करने के लिए सीएम ममता और टीएमसी को सबक सिखाएंगी। दो दिन के पश्चिम बंगाल दौरे के पहले दिन शाह ने विजय संकल्प कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा- जब पहलगाम आतंकी हमले में बंगाल के पर्यटक मारे गए, तब ममता बनर्जी चुप रहीं। मुर्शिदाबाद दंगा राज्य प्रायोजित था। गृह मंत्रालय ने यहां सीआरपीफ की तैनाती की बात कही थी, लेकिन ममता सरकार ने ऐसा नहीं होने दिया, जिससे हिंसा जारी रहे। शाह ने कहा कि वक्फ संशोधन एक्ट को लेकर मुर्शिदाबाद में हुए दंगों में टीएमसी के कई सीनियर लीडर शामिल थे। दंगों में 3 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। ममता बनर्जी तुष्टीकरण की राजनीति के लिए कानून के खिलाफ हैं। शाह ने कहा कि टीएमसी बांग्लादेश से अवैध घुसपैठ को बढ़ावा दे रही है।

संघ के कार्यक्रम में चीफ गेस्ट बनेंगे इंदिरा गांधी के पूर्व मंत्री

● कांग्रेस के 'पुराने योद्धा' की आरएसएस से नजदीकी पर खलबली

रायपुर (एजेंसी)। बस्तर के दिग्गज आदिवासी नेता अरविंद नेताम को आरएसएस ने 5 जून को नागपुर मुख्यालय में अपने वार्षिक कार्यक्रम में आमंत्रित किया है। अरविंद नेताम इंदिरा गांधी और नरसिम्हा राव मंत्रिमंडल में केंद्रीय मंत्री थे। उन्हें आमंत्रण मिलने के बाद से

छत्तीसगढ़ की राजनीति में हलचल मच गई है। 83 वर्षीय नेताम मुख्य अतिथि के रूप में आरएसएस के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के साथ मंच साझा करेंगे। कांग्रेस छोड़ने के बाद, नेताम ने 2023 के विधानसभा चुनावों से पहले अपनी पार्टी शुरू की और बस्तर संभाग और सरगुजा जिले में कांग्रेस के वोटों में गहरी सेंध लगाई। नेताम को निमंत्रण को संघ की आदिवासी आउटरीच रणनीति में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जा रहा है।

'सुप्रीम' विचार, किसी को डांटना आत्महत्या के लिए उकसाना नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा डांटना किसी को आत्महत्या के लिए उकसावा नहीं माना जा सकता। इसके साथ ही कोर्ट ने मद्रास हाईकोर्ट के आदेश को खारिज कर दिया। हाईकोर्ट ने एक हॉस्टल वॉर्डन को आईपीसी की धारा 306 के तहत आत्महत्या के लिए उकसाने का दोषी माना था। जस्टिस अहसानु द्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा की बेंच ने कहा, कोई यह नहीं सोच भी नहीं सकता कि डांटने से ऐसी

घटना हो सकती है।

वॉर्डन ने एक स्टूडेंट की शिकायत पर एक अन्य स्टूडेंट को डांटा था। डांट पड़ने के बाद स्टूडेंट ने अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वॉर्डन का तर्क था कि उसने पैरेंट के रूप में स्टूडेंट को डांटा था, ताकि वह आगे वैसी गलती न करे। वॉर्डन ने यह भी साफ किया कि उसके और आत्महत्या करने वाले स्टूडेंट के बीच कोई निजी संबंध नहीं था। दिसंबर, 2024 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि व्यक्ति पर किसी की आत्महत्या के लिए उकसाने का दोष तभी लगाया जा सकता है, जब इसका पुख्ता सबूत हो।

खंडवा ने बढ़ाया मध्यप्रदेश का मान

जल संचय करने वाले जिलों में देश में खंडवा बना नंबर वन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दी बधाई

भोपाल। केंद्र सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे 'जल संचय, जनभागीदारी' अभियान में खंडवा जिले ने कीर्तिमान रचकर देशभर में मध्यप्रदेश का मान बढ़ाया है। खंडवा जिले ने जल संचय करने वाले जिलों में देश में प्रथम स्थान हासिल किया है। वहां राज्यों की श्रेणी में देश में मध्यप्रदेश चौथे नंबर है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने प्रदेश और जिलों की रैंकिंग जारी की है।

ज्ञातव्य है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जल संरक्षण अभियान में मध्यप्रदेश सरकार मिशन मोड में काम कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में बारिश के पानी का संचयन करने तथा पुराने जल स्त्रोतों को नया जीवन देने के लिए जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है।प्रदेश में बारिश के पानी को रोकने खेत तालाब, कूप रिचार्ज पिट, अमृत सरोवर सहित अन्य कार्य किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त की

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'जल संचय, जनभागीदारी' अभियान में खंडवा जिले को देश में प्रथम स्थान मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने खंडवा के नागरिकों,जन-प्रतिनिधियों और शासकीय अमले को बधाई दी है। उन्होंने कहा है कि जल संरक्षण सरकार की प्राथमिकता है। डॉ. यादव ने कहा है कि पूरा विश्वास है कि इस अभियान में पूरे प्रदेश के सभी जिलों में बेहतर से बेहतर कार्य होगा।

बारिश के पानी को बचाने खंडवा जिले में किए गए यह कार्य अभूतपूर्व हैं

जल गंगा संवर्धन अभियान के राज्य स्तरीय नोडल अधिकारी एवं मनरेगा आयुक्त श्री अविप्रसाद ने बताया कि खंडवा जिले में अभियान अंतर्गत मनरेगा, 15वां वित्त, 5वां वित्त, सीएसआर एवं जनसहयोग से 1 लाख 29 हजार 46 से अधिक संरचनाओं का निर्माण एवं पंजीकरण किया गया है। इसमें 12750 कूप रिचार्ज पिट, 1500 रिचार्ज सॉफ्ट, 23570 डगवेल, 5780 बोल्डर चेकडेम, 1256 बोल्डर वॉल, 3960 बोरीबंधान, 7455 पत्थर/मिट्टी के फील्डबण्ड, 5500 गलीप्लग (गेबीयन/लूज बोल्डर), 3269 नाला ट्रेंच, 6528 हैंडपंप रिचार्ज, 39000 रूफवाटर हार्वेस्टिंग, 58 चेकडैम/स्टॉपडैम/तालाब, 4800 पोखर तालाब, 2275 ड्रेनवर्क, 1500 खेत तालाब, 68 कंटूर ट्रेंच, 750 सूखे बोर रिचार्ज, सूखे बोरवेल का पुनर्भरण और कुएं के पुनर्भरण कार्य शामिल हैं।

सुप्रभात

जिस किले में क़ैद थी इंसानियत
लामबंद थे ख़तरनाक सैनिक
मुझे उनमें से एक को परास्त कर
करना था प्रवेश

ख़तरनाक सैनिकों में कम
ख़तरनाक का चयन
उससे भिड़ना, उसे हराना
और तोड़कर व्यूह घुसना भीतर
कम मुश्किल न था
लेकिन मैं यह कर गया

भीतकर का दृश्य बहुत लुभावना था
तख़्त पर बैठा नायक मुस्कुरा रहा था
सुविधा बिछी थी चहुंओर
ऐश्वर्य बिखरा पड़ा था
उसने मेरा इस्तक़बाल किया
और बैठने को स्थान दिया

जिसे परास्त किया था मैंने
उसके स्थान पर
अब एक अधिक ख़तरनाक
नियुक्त हुआ

भीतर आराम से बैठा था मैं
जैसे कोई नुमाइश की चीज़ हूँ।

– मोहन सगोरिया

नार्थ-ईस्ट में बारिश का कहर, हर ओर तबाही का मंजर

अगरतला, त्रिपुरा

● असम के गुवाहाटी से मणिपुर के इंफाल तक हर ओर पानी ही पानी ● बारिश से भारी तबाही,पूर्वोत्तर में अब तक 28 लोगों ने गंवाई जान

दिसपुर (एजेंसी)। देश में मानसून इस वर्ष समय से पहले दस्तक दे चुका है। केरल से लेकर महाराष्ट्र तक के शहरों में जमकर बारिश की खबरें आ रही हैं। वहीं पूर्वोत्तर भारत में प्री मानसून बारिश के चलते ही कई राज्यों में बाढ़ और भूस्खलन से तबाही मची है। इसके चलते असम से लेकर मणिपुर तक कम से कम 28 लोगों की मौत हुई है। इसके चलते ही मौसम विभाग ने

अलर्ट जारी किया है। शुक्रवार को हुई बारिश और पड़ोसी देश बांग्लादेश में दबाव के चलते आईएमडी ने पूर्वोत्तर के लगभग सभी राज्यों के अलर्ट जारी किया है।

बात अरुणाचल प्रदेश में शुक्रवार रात को नेशनल हाईवे 13 पर भूस्खलन के कारण सात लोगों की मौत हो गई। भूस्खलन से जुड़ी एक अन्य घटना में लोअर सुबनसिरी जिले में दो लोगों की मौत हुई है। विधायक मामा नटुंग दुर्घटनाग्रस्त क्षेत्र के विधायक है। उन्होंने कहा है कि इस कठिन समय में शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं। मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि वे सतर्क रहें और मानसून के मौसम में रात में यात्रा करने से बचें। असम की बात करें तो गुवाहाटी शहर में बाढ़ ने तबाही मचा दी और बाहरी इलाके बोंडा में भूस्खलन में पांच लोगों की मौत हो गई।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 02 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पानी बिना मर जाएंगे लाखों पाकिस्तानी, शहबाज की गुहार

भारत बोला पहले आतंकवाद रोकें, सिंधु पर सियासत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने कहा है कि पाकिस्तान ने सीमा पार आतंकवाद फैलाकर सिंधु जल समझौते का उल्लंघन

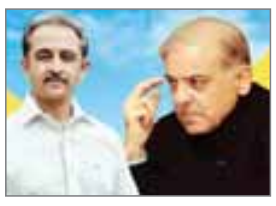

किया है। ताजिकिस्तान में हुई एक बैठक में भारत ने पाकिस्तान पर यह आरोप लगाया है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री और विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने ताजिकिस्तान के दुशांबे में ग्लेशियरों को लेकर आयोजित बैठक में यह बात कही। कीर्ति वर्धन सिंह ने यह बात तब कही जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने भारत पर पानी को हथियार बनाने का आरोप लगाया था।

शहबाज शरीफ ने यह आरोप यूएन के एक मंच पर लगाया था। शहबाज शरीफ ने कहा था कि उनका देश भारत को पानी रोकने की इजाजत नहीं देगा।

उन्होंने आरोप लगाया कि भारत लाखों लोगों की जान खतरे में डाल रहा है। कीर्ति वर्धन सिंह ने पाकिस्तान की इस हरकत की कड़ी निंदा की।

सनातन धर्म को गंदा कहते हैं तो गुस्सा कहां चला जाता है!

शर्मिष्ठा पनोली की गिरफ्तारी पर जमकर बरसे पवन कल्याण

कोलकाता (एजेंसी)। पुणे की छात्रा शर्मिष्ठा पनोली की गिरफ्तारी का मामला सियासी तूल पकड़ रहा है। आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने शर्मिष्ठा का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि ईशनिंदा की अवश्य की निंदा की जानी चाहिए लेकिन धर्मनिरपेक्षता को ढालके रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ईशनिंदा की हमेशा निंदा की जानी चाहिए! धर्मनिरपेक्षता कुछ लोगों के लिए ढाल और दूसरों के लिए तलवार नहीं है। यह दोतरफा होनी चाहिए। पश्चिम बंगाल पुलिस, राष्ट्र देख रहा है। सभी के लिए न्यायपूर्ण तरीके से काम करें। पवन कल्याण ने कहा कि जब राजनीतिक नेता, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सांसद सनातन धर्म का मजाक उड़ाते हैं, तो क्या होता है। जब हमारे धर्म को 'गंदा धर्म' कहा जाता है, तो आक्रोश कहां चला जाता है। उनकी माफी कहां चली जाती है। उनकी त्वरित गिरफ्तारी कहां होती है। बीजेपी की बंगाल इकाई ने एक लॉ की छात्रा शर्मिष्ठा पानोली के खिलाफ कोलकाता पुलिस की रातोंरात कार्रवाई पर सवाल उठाया है। शर्मिष्ठा पर एक विशेष समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप है। बीजेपी ने वोट-बैंक की राजनीति बताया है।

जेल में बैठे-बैठे बच्चे का बाप बन गया आतंकी लखवी

- असदुद्दीन ओवैसी ने अल्जीरिया में खोली पाकिस्तान की पोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद दुनिया के विभिन्न देशों में भारत ने कुल सात डेलिगेशन पाकिस्तान को बेनकाब करने के लिए भेजे हैं। उनमें से एक में एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी भी शामिल हैं। उन्होंने शनिवार को अल्जीरिया में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए पाकिस्तान पर तीखा हमला बोला और पड़ोसी मुल्क को बेनकाब किया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे एक आतंकवादी पाकिस्तान में आधिकारिक रूप से कैद रहने के दौरान ही पिता बन गया। उन्होंने आतंकवादी जकीउर रहमान लखवी के साथ पाकिस्तान के विशेष व्यवहार की ओर इशारा किया। ओवैसी ने कहा,जकीउर रहमान लखवी नाम का एक आतंकवादी था। दुनिया का कोई भी देश आतंकवाद के आरोप का सामना कर रहे आतंकवादी को जेल से बाहर आने की अनुमति नहीं देगा। लेकिन वह जेल में बैठे-बैठे ही एक बेटे का पिता बन गया।

मणिपुर में नई सरकार पर भाजपा में बन गई सहमति

- पूर्व सीएम बीरेन सिंह बैठक में शामिल नहीं हुए, 7 कुकी-जो विधायक भी दूर रहे

इंफाल (एजेंसी)। जातीय हिंसा से जूझ रहे मणिपुर में नई सरकार बनाने की कवायद तेज हो गई है। भाजपा के 27 विधायकों ने 30 मई को बैठक की थी। इसमें नई सरकार बनाने पर सहमति बन गई है। बैठक से पूर्व मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह और स्पीकर रहे सत्यव्रत सिंह को दूर रखा गया था।

बैठक में बीरेन सिंह के खिलाफ विद्रोह करने वाले भाजपा विधायकों के साथ-साथ 9 फरवरी को सीएम पद से इस्तीफा देने तक उनका समर्थन करने वाले विधायक भी शामिल थे। एक विधायक ने बताया कि बीरेन सिंह को नहीं बुलाया गया था। बैठक के बाद विधायकों ने बयान जारी कर कहा है कि सरकार गठन की दिशा में काम करने के लिए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को अलग रखने का संकल्प लिया गया है। मणिपुर विधानसभा में 60 सदस्य हैं। इनमें भाजपा के 37 विधायक हैं। इनमें से सात कुकी-जो समुदाय से हैं जोकि बैठक में शामिल नहीं हुए थे। इंफाल राजभवन में 28 मई को एनडीए के 10 विधायकों ने राज्यपाल अजय भल्ला से मुलाकात की थी। इनमें से एक विधायक ने बताया था, नई सरकार के ढांचे पर चर्चा हुई है।

डीजीएम विद्युत वितरण कंपनी की 2 वेतन वृद्धि रोकने के निर्देश

ऊर्जा मंत्री ने गत रात्रि किया विद्युत कॉल सेंटर भोपाल का निरीक्षण

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर गत रात्रि मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के गोविन्दपुरा स्थित काल सेंटर का आकस्मिक निरीक्षण किया। उन्होंने बिजली उपभोक्ताओं की समस्याओं का समय पर निराकरण नहीं करने पर डीजीएम मुरैना श्री अभिषक चौरसिया की 2 वेतन वृद्धि रोकने के निर्देश दिये।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कॉल सेंटर से ही डीजीएम भोपाल सिटी ईस्ट जोन और डीजीएम रायसेन से भी बात कर समस्याओं के निराकरण में देरी पर गहरी नाराजगी व्यक्त की। भिण्ड जिले के गोरमी गाँव के उपभोक्ता श्री नरेन्द्र सिंह से भी बात कर उनकी समस्या के संबंध में जानकारी ली। श्री तोमर ने निर्देशित किया कि कॉल सेंटर के हेल्पलाइन नम्बर 1912 में कॉल वेटिंग नहीं होना चाहिए।

कॉल सेंटर प्रभारी ने बताया कि सामान्यत-एक घंटे में 300 से 350 फोन काल आते हैं। उन्होंने स्काडा सेंटर और स्मार्ट मीटर मानीटरिंग सेंटर का भी निरीक्षण किया।

तांबे के घड़े में फंसा 2 साल का मासूम

सागर में खेल-खेल में हादसा, घड़े को छैनी-हथौड़े से काटकर बच्चे को बाहर निकाला

सागर (नप्र)। सागर में दो साल का बच्चा तांबे के घड़े में फंस गया। वह खेलते समय घड़े में जाकर बैठ गया। उसके पैर और कमर तक का हिस्सा घड़े अंदर चला गया, जबकि सिर और हाथ बाहर रह गया। घड़े का मुंह संकरा होने से बच्चा बाहर नहीं निकल पा रहा था।

ये शहर के तीनबत्ती चौराहे के पास स्थित चकराघाट वार्ड में रविवार दोपहर की है। घड़े में फंसा बच्चा रो रहा था। उसकी हालत देखकर परिजन घबरा गए। उन्होंने अपने स्तर पर उसे बाहर निकालने की कोशिश की। बच्चे के शरीर पर तेल भी लगाया, लेकिन फिर भी वह बाहर नहीं आया पाया।

थक हारकर परिजन बच्चे को घड़े समेत उठाकर ताम्रकार की दुकान पर ले गए। जहां ताम्रकार ने छैनी-हथौड़े से घड़े को काटा और बच्चे को सुरक्षित बाहर निकाला। यह पूरा घटनाक्रम करीब 1 घंटे तक चलता रहा।

खेलने के दौरान घड़े में बैठ गया था बच्चा- घड़े में फंसे बच्चे का नाम आरव जैन (उम्र 2 वर्ष) पिता का नाम अनुज जैन है। परिजन ने बताया कि रविवार को आरव छत पर खेल रहा था। खेलते समय वह पानी से भरे तांबे के घड़े में दोनों पैर डालकर बैठ गया। जिससे वह कमर के पास से घड़े में ही फंस गया।

करीब एक घंटे घड़े में फंसा रहा मासूम- बच्चे को घड़े से निकालने वाले दुकानदार अतुल ताम्रकार ने बताया कि चकराघाट क्षेत्र से कुछ लोग एक बच्चे को लेकर आए थे। वह तांबे की गुंडी में फंसा था। घड़े को छैनी-हथौड़े की मदद से काटा गया। जिसके बाद बालक को सुरक्षित बाहर निकाल दिया है। वह करीब एक घंटे तक फंसा रहा। उसके बाहर निकलने के बाद परिवार ने राहत की सांस ली।

बुधनी में बाघ ने किसान पर किया हमला, घायल

खेत पर फसल की रखवाली के लिए जा रहा था ; हाथ पर मारा पंजा

बुधनी (नप्र)। सीहोर जिले के बुधनी इलाके में रविवार को एक किसान पर बाघ ने हमला कर दिया। घटना गांव खोहा-मुरारी की है। किसान अर्जुन अपने खेत में मूंग की फसल की रखवाली के लिए जा रहा था।

बाघ ने पीछे से हमला किया, हाथ पर पंजा मारा- अर्जुन रोज की तरह अपने कुत्ते के साथ खेत की ओर जा रहा था। इसी दौरान पास के धान के खेत में बनी बनडी के पीछे से बाघ ने अचानक हमला कर दिया। बाघ ने उसके हाथ पर पंजा मारा। किसी तरह अर्जुन वहां से भागने में सफल रहा।

इलाके में बाघों का मूवमेंट लगातार बढ़ रहा- वन विभाग की टीम घायल किसान को बुधनी अस्पताल ले गई। वहां उसका प्राथमिक उपचार किया गया। रेंजर प्रकाश ने बताया कि वन विभाग किसान को आवश्यक सहायता उपलब्ध करा रहा है। इलाके में बाघों का मूवमेंट लगातार बढ़ रहा है।

अर्जुन ने बताया कि इलाके में जंगली सुअरों की संख्या भी ज्यादा है। बाघ अक्सर इन जंगली सुअरों का शिकार करने के लिए घात लगाकर बैठे रहते हैं। कई बार बाघ सड़क हादसों का भी शिकार हो जाते हैं।

देश में 9 दिन में 14 गुना बढ़ गए कोरोना के केस

- 48 घंटे में 21 लोगों की मौत, 3783 ऐक्टिव केस हुए
- बेंगलुरु में वैक्सीन की तीनों डोज ले चुके मरीज की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोरोना वायरस के ऐक्टिव केसों की संख्या 3783 पहुंच गई है। स्वास्थ्य विभाग की वेबसाइट के मुताबिक, 22 मई को भारत में 257 केस थे। 9 दिन में कोरोना के मामलों में 14 गुना की बढ़ोतरी हुई है। केरल में सबसे ज्यादा 1400 मामले हैं। वहीं महाराष्ट्र में 485 और दिल्ली में 436 एक्टिव केस हैं। जनवरी से अब तक कोरोना से 28 मौतें हो चुकी हैं। इसमें 21 लोग बीते 2 दिन में मरे हैं। शनिवार को बेंगलुरु में 63 साल के व्यक्ति की मौत हो गई है। उसे दोनों वैक्सीन के साथ बूस्टर डोज भी लगी थी। वहीं दिल्ली में 60 साल के बुजुर्ग की मौत हुई है। महाराष्ट्र-केरल में सबसे ज्यादा 7-7 लोगों ने जान गंवाई है। कर्नाटक सरकार ने शनिवार को पब्लिक एडवाइजरी जारी की। इसमें लोगों से भीड़-भाड़ वाली जगहों पर मास्क लगाने, शारीरिक दूरी बनाए रखने और स्वच्छता का खास ध्यान रखने की अपील की। बुखार, खांसी, सीने में दर्द या सांस लेने दिक्कत होने पर तुरंत जांच करने को कहा है। मिजोरम में शुक्रवार को 2 लोगों में कोविड-19 की पुष्टि हुई है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि राज्य में इस तरह का आखिरी मामला सामने आने के 7 महीने बाद कोविड के केस मिले। मिजोरम में कोविड-19 का आखिरी मामला अक्टूबर 2024 में सामने आया था, उस दौरान राज्य में 73 लोग वायरस से संक्रमित हुए थे। उन्होंने बताया कि मरीजों का इलाज आइजोल के पास फल्कोन में जोरम मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में चल रहा है। राज्य के स्वास्थ्य विभाग के इंटीग्रेटेड रोग निगरानी कार्यक्रम ने लोगों से न घबराने की बात कही है। विभाग ने लोगों से कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने, नियमित रूप से हाथ धोने, हैंड सैनिटाइजर का उपयोग करने और भीड़-भाड़ वाले इलाकों में न जाने की सलाह दी है। महाराष्ट्र सरकार ने बताया कि शनिवार को कोविड के 68 नए मामले सामने आए। जबकि मुंबई में जनवरी 2025 से अब तक कुल 749 केस मिले हैं। जनवरी से अब तक राज्य में 9592 कोविड-19 टेस्ट किए गए। वहीं, जम्मू-कश्मीर में गुरुवार को कोविड-19 के दो मामले सामने आए थे। दोनों मरीज केरल के रहने वाले हैं और श्रीनगर के गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज में पढ़ाई कर रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध का मैदान बना

- महबूबा बोलीं-हमारी हालत दो हाथियों की लड़ाई में कुचली जा रही घास जैसी

श्रीनगर (एजेंसी)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने शनिवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर को भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध का मैदान नहीं, बल्कि दोस्ती और समझ का पुल बनना चाहिए। पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर हमेशा युद्ध और हिंसा का सबसे ज्यादा नुकसान झेलता रहा है। हमारी हालत दो हाथियों की लड़ाई में कुचले जाने वाले घास जैसी हो गई है। महबूबा ने कहा कि पीडीपी हमेशा शांति की बात करती रही है और लोगों की भावनाओं को आवाज देती रही है। हमें युद्ध के डर को खत्म करना होगा ताकि लोग अपनी जिंदगी की प्लानिंग कर सकें और अर्थव्यवस्था को फिर से खड़ा किया जा सके। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारुक अब्दुल्ला की पाकिस्तान के खिलाफ सख्त सैन्य कार्रवाई की मांग समेत नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेताओं के हालिया बयानों पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह के बयान खतरनाक सोच को दर्शाते हैं। महबूबा ने कहा,भारत सरकार ने सिंधु जल संधि को सस्पेंड किया है।

यूपी में सैयद सालार मसूद गाजी एक बार फिर चर्चा में

- बीजेपी नेता ने दरगाह पर चढ़ाई चादर, बताया सूफी संत

बहराइच (एजेंसी)। एक ओर जहां सैयद सालार मसूद गाजी की दरगाह पर लगने वाले मेले पर प्रशासन ने रोक लगा दी है तो दूसरी ओर भाजपा के एक नेता ने बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि योगी का मत अपनी जगह और गाजी को सूफी संत मानता हूं।

बहराइच में सैयद सालार मसूद गाजी की दरगाह पर आयोजित होने वाले मेले पर रोक लगाए जाने के बीच भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने गाजी की दरगाह पर चादर चढ़ाई। साथ ही उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मत अपनी जगह है।

क्रिकेटर रिंकू सिंह-सपा सांसद प्रिया की सगाई 8 जून को

- लखनऊ के होटल में रिंग सेरेमनी होगी, 6 महीने बाद वाराणसी में शादी

वाराणसी (एजेंसी)। जौनपुर की मछलीशहर से सपा सांसद प्रिया सरोज और क्रिकेटर रिंकू सिंह जल्द ही शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। 8 जून को लखनऊ के सेवन स्टार होटल में रिंग सेरेमनी में होगी। शादी करीब 6 महीने बाद 18 नवंबर को वाराणसी के होटल ताज में होगी। यह जानकारी प्रिया के

विधायक पिता तूफानी सरोज ने दी। उन्होंने बताया- रिंग सेरेमनी में रिंकू और मेरे परिवार के करीबी लोग मौजूद रहेंगे। जबकि शादी में राजनेता, फिल्म स्टार और उद्योगपतियों को निमंत्रण भेजा जाएगा। शादी पारंपरिक तरीके से होगी। जनवरी, 2025 में क्रिकेटर रिंकूसिंह और सांसद प्रिया सरोज के रोके की खबर सामने आई थीं। प्रिया के पिता तूफानी सरोज ने कहा था- बेटी की शादी रिंकू सिंह से तय हुई है और जल्द ही रिंग सेरेमनी की जाएगी। सूत्रों के मुताबिक, सगाई में भारतीय क्रिकेट टीम के कोच गौतम गंभीर, अभिषेक नायर समेत कई क्रिकेटर शामिल हो सकते हैं।

बिहार में नीतिश का बड़ा पॉलिटिकल गेम, कर दिया खेला

एससी आयोग में चिराग के बहनोई और मांझी के दामाद को मिली जगह

बीजेपी को झटका देने की है तैयारी! चाणक्य बुद्धि के आगे सभी हैं फेल

पटना (एजेंसी)। आरजेडी नेता और बिहार के पूर्व डेप्युटी सीएम तेजस्वी यादव सीएम नीतिश कुमार को बूढ़ा, बीमार और अचेत बताते नहीं थकते। जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर भी नीतिश कुमार के लिए ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करते हैं। पर, नीतिश कुमार की सियासी सूझबूझ से ऐसा परिलक्षित नहीं होता। उन्हें राजनीति का चाणक्य शायद उनकी इसी सूझबूझ के कारण कहा जाता है। आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव जैसे धुरंधर राजनीतिक व्यक्ति से नीतिश ने सिर्फ बिहार की सत्ता छीनी, बल्कि उस स्थिति में पहुंचा दिया, जहां से उनकी पार्टी अपने बूते तो नहीं ही उठ पाई। 2015 से आरजेडी को अगर पुनर्जीवन मिला तो यह नीतिश कुमार के साथ का ही परिणाम था। शायद

नीतिश कुमार की इस सियासी क्षमता का लालू को अनुमान था। तभी तो वर्षों पहले उन्होंने लोकसभा में कहा था कि नीतिश की आंत में भी दांत हैं। नीतिश कुमार के राजनीतिक कौशल के कई उदाहरण मिल जाएंगे। सबसे बड़ा उदाहरण तो यही है कि उनकी पार्टी जेडीयू को अकेले सरकार बनाने भर विधायक कभी नहीं मिले। पर, वे 2005 से अब तक सीएम बनते आए हैं। इस बार भाजपा से उन्हें भय है लेकिन सीएम की कुर्सी पर फिर वे विराजमान हो जाएं तो आश्चर्य नहीं। 2020 के विधानसभा चुनाव में जेडीयू की स्थिति बेहद खराब हो गई। जेडीयू को अपने सहयोगी भाजपा से तकरीबन आधी सीटें मिलीं। जेडीयू 43 पर जीता तो भाजपा को 74 सीटें मिली थीं। इसके बावजूद भाजपा ने उन्हें सीएम बनाया। आरजेडी के साथ नीतिश गए, तब भी उनकी सीएम की कुर्सी बरकरार रही। नीतिश राजनीति के चाणक्य हैं, यह अनुसूचित जाति आयोग के गठन में भी साफ-साफ दिखता है। यह सभी जानते हैं कि जीतन राम मांझी और चिराग पासवान से पूर्व में उनके रिश्ते कैसे रहे हैं। मांझी को कुछ दिनों के लिए नीतिश ने खड़ाऊं सीएम बनाया था। जब उन्होंने सीएम की कुर्सी वापस ले ली तो मांझी भड़क गए। उन्होंने जेडीयू से अलग होकर अपनी पार्टी हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा बना ली।

भगवान जगन्नाथ के रथ में सुखोई जेट के टायर लगाए

- कोलकाता इस्कॉन ने 48 साल बाद पहिए बदले, रथयात्रा 27 जून से शुरू होगी

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता इस्कॉन की फेमस भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के रथ के पहियों को 48 साल बाद बदला गया है। इस बार रथ में रूसी सुखोई जेट के टायर लगाए जा रहे हैं। फाइटर जेट की टेकऑफ स्पीड 280 किमी/घंटा तक होती है। हालांकि, रथ 1.4 किमी

प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगा। इस्कॉन कोलकाता ने बताया कि पिछले कई सालों से रथ को चलाने में समस्या आ रही थी। आयोजक 15 सालों से नए टायर की तलाश में थे। बोइंग विमान के पुराने टायरों का इस्तेमाल किया जा था, लेकिन अब वे बाजार में मिलने मुश्किल हो रहे हैं। इसके बाद आयोजकों ने सुखोई जेट के टायरों को रथ में लगाने का फैसला किया, क्योंकि इसका व्यास (डायमीटर) बोइंग के टायरों से मिलता-जुलता है। मैनेजमेंट ने कंपनी से सुखोई के 4 टायर खरीदे हैं। टायरों को इन दिनों रथ में फिट किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अंतर्राष्ट्रीय बाल रक्षा दिवस पर बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतर्राष्ट्रीय बाल रक्षा दिवस पर सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय बाल रक्षा दिवस सभी नागरिकों को बच्चों का भविष्य उज्जवल होने, उन्हें स्नेह और सहयोग के साथ समानता के अवसर उपलब्ध करने के लिए प्रेरित करता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स'पर प्रदेशवासियों से शोषण, अपराध, मजदूरी और कुपोषण जैसे सामाजिक अभिशापों से बच्चों को बचाने और उन्हें प्रगति करने में मदद करने का संकल्प लेने का आव्हान किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री मोदी का माना आभार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 31 मई को भोपाल प्रवास के दौरान विकास की अनेक ऐतिहासिक सौगातें देने पर आभार व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर कहा है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विकास की अनेक ऐतिहासिक सौगातें देकर प्रदेश के सपनों को नई उड़ान दी है, मध्यप्रदेश आनंदित है, उत्साहित है, कृतज्ञ है। यह सौगातें ' आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश' की दिशा में सशक्त सिद्ध होंगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का यह स्नेह और विश्वास हमें निरंतर विकास की राह पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इस अमूल्य सहयोग और अपार स्नेह के लिए उनका हृदय से आभार।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दी राज्यपाल को जन्मदिन की बधाई

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल को जन्मदिन की हार्दिक बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राज्यपाल श्री पटेल को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अनेक सामाजिक प्रकल्प आपके मार्गदर्शन में संचालित हो रहे हैं। बाबा महाकाल आपके सभी संकल्पों को सिद्ध करें, ऐसी कामना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दी विश्व दुग्ध दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व दुग्ध दिवस पर बधाई दी है। मध्यप्रदेश गौसेवा के संकल्प के साथ 'दुग्ध से समृद्धि' के पथ पर अग्रसर है। अंबेडकर कामधेनु योजना के अंतर्गत गोपालन करने वाले आर्थिक रूप से सशक्त होंगे और देश के दुग्ध उत्पादन में मध्यप्रदेश का योगदान 9 से बढ़ाकर हम 20 प्रतिशत तक पहुंचाने का लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड के साथ मध्यप्रदेश सरकार ने अनुबंध किया है, जिससे प्रदेश के ग्रामों में दुग्ध सहकारी समितियां गठित कर दुग्ध उत्पादन में वृद्धि की जाएगी। सांची ब्रांड को लोकप्रिय बनाया जा रहा है। गौशालाओं और गौ-पालकों को पूरा प्रोत्साहन दिया जा रहा है। प्रदेश में गाय के दूध से निर्मित उत्पाद और औषधियां अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास है। मध्यप्रदेश देश की डेयरी केपिटल बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गौ-पालकों को विश्व दुग्ध उत्पादन से जुडे किसानों, पशुपालकों को विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर शुभकामनाएं दी हैं।

मां से बात करने के बहाने फोन लेकर भागा नाबालिग

दुकानदार से मम्मी के खोने का बोलकर लिया था मोबाइल

बुरहानपुर (नप्र)। बुरहानपुर बस स्टैंड से रविवार को एक नाबालिग ने फूलमाला दुकान संचालक का मोबाइल चोरी कर लिया। मां को फोन करने के बहाने से लगभग 7-8 साल का बालक ने दुकानदार से फोन मांगा। मोबाइल मिलते ही बच्चा वहां से भाग निकला।

मां से बात करने के लिए फोन मांगा- फूलमाला दुकान संचालक मुकेश शाह ने बताया कि दोपहर के समय एक बालक उनकी दुकान पर आया। बालक ने कहा कि उसकी मां खो गई है और उन्हें फोन करना है। मदद के लिए मुकेश ने अपना मोबाइल दे दिया। मोबाइल मिलते ही बालक फोन लगाने का नाटक करते हुए वहां से भाग निकला। दुकानदार और आसपास के 2-3 लोग उसके पीछे दौड़े। लेकिन बालक पकड़ में नहीं आया।

सीसीटीवी फुटेज में पूरी घटना कैद- घटना की सूचना कोतवाली थाना पुलिस को दी गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। सीसीटीवी फुटेज में पूरी घटना कैद है। फुटेज में बच्चा पहले फोन लगाते दिख रहा है और फिर अचानक भागता हुआ नजर आ रहा है। चोरी किए गए मोबाइल को ट्रैक करने का प्रयास किया गया, लेकिन कुछ ही देर में मोबाइल स्विच ऑफ हो गया।

मंडला में नर्मदा में डूबने से 3 युवकों की मौत

नहाने के दौरान हादसा, एक ही परिवार के थे; दोस्तों के साथ घूमने आए थे

मंडला (नप्र)। मंडला जिले के रामनगर में रविवार शाम 5 बजे नर्मदा नदी में नहाने गए तीन युवकों की डूबने से मौत हो गई। मृतकों में शिवम उइके (31), राकेश उइके (24) और नवीन उइके (18) शामिल हैं। ये तीनों रमपुरी बम्हनी क्षेत्र के रहने वाले हैं। ये आपस में रिश्तेदार भी थे।हिरदेनगर चौकी के एएसआई शिवशंकर राजपूत के अनुसार, रमपुरी गांव से 9 युवकों का एक ग्रुप रामनगर घूमने आया था। इन्होंने पहले रामनगर महल का भ्रमण किया और फिर नर्मदा नदी में नहाने गए। नहाने के दौरान तीन युवक गहरे पानी में चले गए और एक-दूसरे को बचाने की कोशिश में डूब गए।

नदी से तीनों के शव निकाले गए हैं

सूचना मिलने पर एसडीओआरएफ और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। होमगार्ड कमांडेंट नरेश साहू ने बताया, शाम को कंट्रोल रूम से सूचना मिली थी। मेरी टीम और प्लाटून कमांडर हेमराज परस्ते मौके पर पहुंचे। करीब 45 मिनट की तलाश के बाद तीनों युवकों के शव बरामद किए और पुलिस को सौंप दिए।पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।हादसे की खबर लगते ही मौके पर बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जमा हो गई।पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

एक हजार से अधिक रेल यात्रियों को होगी असुविधा

रीवा-सिकंदराबाद स्पेशल ट्रेन की पांच-पांच ट्रिप रहेंगी रद्द

भोपाल (नप्र)। रेलवे प्रशासन ने रीवा से चेर्लापल्ली (सिकंदराबाद) और वापसी मार्ग पर चलने वाली स्पेशल ट्रेन की कुल दस ट्रिप (पांच अप और पांच डाउन) को निरस्त करने का निर्णय लिया है। यह फैसला दक्षिण मध्य रेलवे के सिकंदराबाद मंडल में अधोसंरचना विकास कार्यों के अंतर्गत लिया गया है।

दरअसल, दक्षिण-मध्य रेलवे के बेल्लमपल्ली रेलवे स्टेशन पर यार्ड के विस्तारीकरण और थर्ड रेल लाइन कनेक्टिविटी के लिए प्री-एनआई और एनआई कमीशनिंग का कार्य किया जाएगा। इस तकनीकी और संरचनात्मक कार्य के चलते इस रूट पर ट्रेनों की आवाजाही प्रभावित होगी।

परिणामस्वरूप, पश्चिम-मध्य रेलवे से संचालित होने वाली रीवा-चेर्लापल्ली (सिकंदराबाद) स्पेशल ट्रेन को पांच ट्रिप के लिए रद किया गया है। बता दें कि मध्य प्रदेश के अनेक स्टेशनों से इस ट्रेन में प्रति ट्रिप करीब 1000 से अधिक यात्री सफर करते हैं।

यह ट्रेनें रहेंगी निरस्त

गाड़ी संख्या 01704 – यह ट्रेन रीवा से चेर्लापल्ली (सिकंदराबाद) के लिए सप्ताह में दो बार चलती है। रेलवे प्रशासन द्वारा जारी सूचना के अनुसार, यह ट्रेन 5 से 19 जून 2025 तक सभी ट्रिप्स में रीवा से प्रस्थान नहीं करेगी। यानी इस अवधि में इस गाड़ी की पांच ट्रिप रद रहेंगी।

गाड़ी संख्या 01703 – यह ट्रेन चेर्लापल्ली (सिकंदराबाद) से रीवा के लिए चलती है। यह भी सप्ताह में दो बार संचालित होती है। रेलवे द्वारा मिली जानकारी के मुताबिक, यह ट्रेन 6 से 20 जून 2025 तक की सभी ट्रिप्स में चेर्लापल्ली से नहीं चलेगी। यानी इस अवधि में इसकी भी पांच ट्रिप रद रहेंगी।

रेलवे की अपील

रेलवे प्रशासन ने यात्रियों से विशेष अनुरोध किया है कि वे अपनी यात्रा की योजना बनाने से पहले संबंधित ट्रेन की स्थिति की जानकारी अवश्य प्राप्त करें। इसके लिए यात्री एनटीईएस एप्लीकेशन, रेल मदद पोर्टल या रेलवे की 139 सेवा के माध्यम से अपडेटेड स्टेटस चेक कर सकते हैं। मंडल के अधिकारियों के अनुसार इन सभी यात्रियों को जिनका टिकट निरस्ती दिनांक का था, उनको रेलवे नियमानुसार रिफंड करेगा।

मई में 53 जिले भीगे, रिकॉर्ड टूटे

एमपी में 7 गुना पानी गिरा; इंदौर में 139 साल में सबसे ज्यादा बरसात

भोपाल (नप्र)। ओले-बारिश और आंधी...पूरे मई महीने में मध्यप्रदेश में ऐसा ही मौसम रहा। एक भी दिन ऐसा नहीं गया, जब प्रदेश के किसी न किसी जिले में आंधी-बारिश न हुई हो। एमपी में ऐसा पहली बार हुआ। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर समेत कुल 53 जिले भीग गए। सिर्फ निवाड़ी ही ऐसा जिला रहा, जहां बूंदाबांदी तो हुई लेकिन दर्ज नहीं हो सकी।

मई महीने में बारिश के कई रिकॉर्ड भी टूटे। इंदौर में 139 साल में सबसे ज्यादा 4.6 इंच पानी गिरा। वहीं, उज्जैन में सबसे ज्यादा बारिश का ओवरऑल रिकॉर्ड बना।मई के आखिरी दिन भी उमरिया और बालाघाट जिले में बारिश हुई। इसे मिलाकर इस महीने ओवरऑल करीब 2 इंच पानी गिर गया, जो सामान्य बारिश से 7 गुना अधिक है। इस महीने की सामान्य बारिश 7 मिमी है।

मई में गर्मी का मिजाज- इस साल अप्रैल में जितनी गर्मी थी, उतनी मई में नहीं रही। अप्रैल में कई शहरों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। पिछले सालों की डेटा स्टडी से पता चलता है कि मई में निवाड़ी के पृथ्वीपुर, छतरपुर के नौगांव, खजुराहो, निवाड़ी, ग्वालियर, राजगढ़, दतिया, टीकमगढ़, सतना, दमोह, उज्जैन, गुना, शाजापुर, खंडवा, खरगोन जैसे कई शहरों में पारा 46 से 48 डिग्री सेल्सियस या इसके पार पहुंच चुका है, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ।

प्रदेश के किसी भी शहर में दिन का तापमान 43 डिग्री सेल्सियस तक नहीं पहुंचा। नौतपा में भी कम ही गर्मी रही। नौगांव, खजुराहो, टीकमगढ़, ग्वालियर, दमोह, शिवपुरी जैसे शहरों में ही पारा 40 डिग्री के पार पहुंचा। बाकी शहरों में इससे काफी नीचे रहा।

क्यों रहा ऐसा मौसम?

मई में भीषण गर्मी की बजाय आंधी-बारिश होने के पीछे क्या वजह रही, इस बारे में मौसम वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्रन बताती हैं कि मई की शुरुआत से आखिरी तक प्रदेश में साइक्लोनिक सर्कुलेशन, वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) और टर्फ की एक्टिविटी देखने को मिली। लगातार सिस्टम एक्टिव होते रहे। इस वजह से आंधी-बारिश का दौर भी चलता रहा। आखिरी दिन भी कुछ जिलों में मौसम बदला रहा।

रिकॉर्ड टूटे, ऐसे समझे

इंदौर में साल 1886 के मई महीने में 107.7 मिमी यानी 4.2 इंच पानी गिरा था जबकि इस बार 114.8 मिमी यानी 4.6 इंच पानी गिर गया है। इस तरह 139 साल में इंदौर का रिकॉर्ड टूट गया है।

उज्जैन में मई की बारिश का ओवरऑल रिकॉर्ड बना है। इस बार 111.8 मिमी यानी 4.3 इंच से ज्यादा पानी गिरा है। साल 2021 में कुल मासिक बारिश 65 मिमी (2.5 इंच) हुई थी। इस हिसाब से उज्जैन में मई की बारिश का ओवरऑल रिकॉर्ड बना है।

देवास में मई में कभी भी इतनी बारिश नहीं हुई। यहां पर इस बार 6.3 इंच से ज्यादा पानी गिर गया।

मोबाइल, आधार से खुला पति की हत्या का राज

पत्नी बोली- प्रेमी के लिए जान भी हाजिर, मेरठ की मुस्कान का वीडियो देखकर बनाया प्लान

रीवा (नप्र)। रीवा में एक महिला ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति को मौत के घाट उतार दिया। उसने मोबाइल चार्जर की लीड से पति का गला घोंट दिया। दम तोड़ने के बावजूद 10 मिनट तक कपड़े और हाथों से गला दबाते रहे।

तीन मासूम बच्चों की मां ने सोशल मीडिया पर वायरल मेरठ की मुस्कान के वीडियो को देखकर इस वारदात को अंजाम दिया। पकड़े जाने से पहले सारा आरोप पति के बुजुर्ग माता-पिता पर मढ़ने की भी कोशिश भी की। लेकिन पुलिस जांच में कमरे से मिले प्रेमी के आधार कार्ड और मोबाइल ने पूरे मामले को खोलकर रख दिया। पति की हत्या कर जेल जाते वक्त भी वह ननद और सास-ससुर को धमकी देती रही। उसने कहा कि जिस दिन वह छूटकर आएगी तो उन्हें जान से मार देगी। साथ ही कहा, पति को मारने का कोई अफसोस नहीं है।

मामला रीवा शहर से 50 किलोमीटर दूर गुढ़ थाना क्षेत्र के कुटी बाबा गांव में 12 मई का है। फिलहाल दोनों आरोपी जेल में हैं।

माता-पिता ने घर छोड़ा, खपरैल के मकान में रह रहे- दैनिक भास्कर ने कुटी बाबा गांव पहुंचकर मौके का हाल जानने की कोशिश की। मोहन के घर पर ताला लगा मिला। आसपास के घर भी बंद थे। कुछ मकान निर्माणाधीन थे, जहां कोई नहीं रहता था।

पड़ोसी संदीप साकेत से पूछताछ में पता चला कि मोहन के माता-पिता उस घर में रहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं, जहां उनके बेटे को तड़पा-तड़पाकर मारा गया। वे अब बगल के एक छोटे से खपरैल वाले मकान में रह रहे हैं।

बहू ने सास, ससुर से कहा- तुमने मेरे पति को मार दिया- लक्ष्मी (30) ने अपने प्रेमी राकेश केवट के साथ मिलकर प्लान

बनाया था कि पति मोहन (28) की हत्या के बाद उसके माता-पिता को ही आरोपी बना देंगे। इसके लिए मोहन की हत्या के बाद लक्ष्मी करंट छूने जा रही थी ताकि बाद में यह कह सके कि पति की हत्या के बाद मुझे भी करंट से मारने की कोशिश की गई। पति का मर्डर करने के बाद वो आंसू बहाते हुए गांव वालों के सामने नाटक भी करती रही।

आधार कार्ड और मोबाइल से पकड़ में आए- लक्ष्मी की एक्टिंग देख पुलिस भी उलझन में पड़ चुकी थी कि आखिर मोहन की हत्या किसने की? भला मां-बाप अपने ही बेटे को क्यों मारेंगे? इस कशमकश में पुलिस लगातार उलझी हुई थी।

'मातृ-पितृ भक्ति दिवस'

स्व. श्री कैलाश नारायण सारंग की जयंती के अवसर पर बुजुर्गों का सम्मान एवं निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन

भोपाल (नप्र)। भाजपा के संस्थापक सदस्य, पूर्व राज्यसभा सांसद, श्रद्धेय स्वर्गीय श्री कैलाश नारायण सारंग की जयंती 2 जून को, 'मातृ-पितृ भक्ति दिवस' हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'मातृ-पितृ भक्ति दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि स्व. श्री कैलाश सारंग जी की जयंती के अवसर पर राजधानी के सुभाष नगर खेल मैदान में 'बुजुर्गों का सम्मान कार्यक्रम' एवं निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं प्रदेशाध्यक्ष श्री वीडी शर्मा शिरकत करेंगे। मंत्री श्री सारंग ने बताया कि इस अवसर पर नरेला विधानसभा अंतर्गत सभी 17 वार्डों में बुजुर्गों के लिये डे-केअर सेंटर का भूमिपूजन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि 'मातृ-पितृ भक्ति दिवस' अब केवल एक दिवस नहीं, बल्कि एक आंदोलन बन चुका है- जो भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ा है।

परिवार भावन नरेला की पहचान- मंत्री श्री सारंग ने कहा कि नरेला विधानसभा एक राजनीतिक क्षेत्र नहीं, अपितु एक संयुक्त परिवार है, जहाँ हर पर्व, हर तीज-त्यौहार मिल-जुलकर मनाया जाता है। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर 1 लाख से अधिक बहनें रक्षासूत्र बांधती हैं- वर्ष 2024 में यह संख्या 1 लाख 82 हज़ार पार कर गई। उन्होंने कहा कि यही भावना मातृ-पितृ भक्ति दिवस की नींव है, जहाँ समाज के हर बुजुर्ग को माता-पिता के समान मानकर सम्मानित किया जाता है।

स्वप्न जो सेवा बनाम आयोजन का उद्देश्य- मंत्री श्री सारंग ने कहा कि पूज्य पिताजी, स्व. श्री कैलाश नारायण सारंग का जीवन सेवा, समाज और संस्कृति को समर्पित रहा। उनका स्वप्न था कि समाज का हर व्यक्ति अपने माता-पिता एवं बुजुर्गों को ससम्मान देखे, समझे और उनके अनुभवों से मार्गदर्शन प्राप्त करे। उसी प्रेरणा से मातृ-पितृ भक्ति दिवस की परिकल्पना साकार हुई है। उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी अपने माता-पिता के साथ-साथ बुजुर्गों का सम्मान करना सीखे इसी उद्देश्य को लेकर पिताजी की जयंती पर सभी बुजुर्गों का सम्मान किया जा रहा है।

सेवा से संस्कार तक- देशव्यापी पहल- मंत्री श्री सारंग ने बताया कि इस दिन को अब एक राष्ट्रव्यापी अभियान के रूप में मनाया जा रहा है। स्व. श्री कैलाश सारंग जी के अनुयायियों, भाजपा कार्यकर्ता व कार्यकर्ताओं द्वारा देशभर में अपने माता-पिता के साथ ही बुजुर्गों के पैर पखारकर सम्मान प्रकट करते हैं। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर भोपाल सहित अनेक स्थानों पर सेवा कार्य, शरबत वितरण, स्वास्थ्य शिविर, वृद्धाश्रम सहयोग, एवं अन्य सामाजिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

मातृ-पितृ भक्ति दिवस पर भोपाल में आयोजन- मंत्री श्री सारंग ने बताया कि इस वर्ष मातृ-पितृ भक्ति दिवस को और अधिक व्यापक स्वरूप प्रदान करते हुए सुभाष नगर खेल मैदान, भोपाल में भव्य सामूहिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यहां 1100 बुजुर्ग दंपत्तियों का सार्वजनिक सम्मान किया जायेगा। जिसमें पैर पखारकर, शॉल एवं पुष्पों से अभिनंदन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में 31 नवविवाहित जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्मेलन भी होगा।

भोपाल एम्स में 20 दिन के नवजात की एमआरआई

तेज शोर और बंद टनल के बीच 45 मिनट की जांच, ब्रेन इंजरी का पता चलते ही बचाई जान

भोपाल (नप्र)। एमआरआई जांच आमतौर पर एक वयस्क मरीज के लिए डर भरे अनुभव जैसा होता है। मशीन से निकलने वाला तेज शोर और अंदर जाने पर सीमित जगह होने से कई मरीजों को बेचैनी होने लगती है। जो इस जांच को मुश्किल बना देती है। वहीं, यदि नवजात की जांच करनी तो यह लगभग असंभव सा लगता है। ब्रेन से जुड़ी गंभीर समस्या से ग्रसित एक 20 दिन के नवजात की एम्स में एमआरआई की गई। इसके लिए एक विशेष टीम तैयार की गई, जिसने एनेस्थीसिया की मदद से यह जांच की है। जो 45 मिनट तक चली।

एम्स प्रबंधन के अनुसार, नवजात शिशु की बेहद जटिल एमआरआई प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। जिसने उसकी जान बचाने में अहम भूमिका निभाई है।

हाल ही में एम्स भोपाल में एक नवजात शिशु को मस्तिष्क संबंधी गंभीर समस्या की आशंका के चलते रेफर किया गया था। कई जांच होने के

बाद भी समस्या की ठीक से पुष्टि नहीं हो पा रही थी।

जिसके बाद डॉक्टरों ने शिशु की एमआरआई कराने का फैसला किया। लेकिन, यहां असली चुनौती सामने आई कि एमआरआई मशीन का अत्यधिक तेज शोर और उसका बंद वातावरण किसी भी नवजात के लिए बेहद खतरनाक हो सकता था। इस उम्र में बच्चे असहज होने पर हिलते डुलते हैं, जिससे जांच खराब हो सकती है या शिशु को नुकसान पहुंच सकता है।

आमतौर पर करते हैं अल्ट्रासाउंड

आमतौर पर नवजातों के मस्तिष्क की जांच के लिए अल्ट्रासाउंड का उपयोग होता है। यह कई मामलों में कारगर है लेकिन जब गहन मूल्यांकन की आवश्यकता हो तब इससे सटीक जानकारी नहीं मिलती है। ऐसे में एमआरआई ही एकमात्र विकल्प बचता है।

ब्रेन इंजरी की हुई पुष्टि

एम्स के डॉक्टरों के अनुसार एमआरआई रिपोर्ट में ब्रेन इंजरी की पुष्टि हुई। जिसका तत्काल इलाज शुरू किया गया। अब बच्चे की सेहत में सुधार है और उसे अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया है।

5 जिलों के युवाओं ने सीखी एआई की बारीकियां

भोपाल में गायत्री परिवार की कार्यशाला में टेक्नोलॉजी और संस्कृति पर हुई चर्चा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें टेक्नालॉजी, रोजगार और नशा मुक्ति समेत कई सामाजिक मुद्दों पर चर्चा की गई। इसमें भोपाल समेत हरदा, नर्मदापुरम, सीहोर, विदिशा और रायसेन से लगभग 240 युवाओं ने भाग लिया। यह कार्यशाला अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा जोड़ो अभियान के तहत हुई।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रभावी इस्तेमाल पर चर्चा- कार्यशाला के दौरान प्रवक्ता डॉ. उर्वशी सोनी ने टेक्नोलॉजी जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और चैट जीपीटी के प्रभावी इस्तेमाल के बारे में युवाओं को समझाया। साथ ही कार्यशाला में साहित्य और संस्कृति पर भी चर्चा हुई।

युवाओं को नशा मुक्ति और देश सेवा का संकल्प दिलाया गया - कार्यक्रम में गायत्री परिवार के प्रांतीय युवा समन्वयक अमर धाकड़ ने सभी युवाओं को नशा मुक्ति और देश सेवा का संकल्प दिलाया। इस कार्यक्रम में गायत्री परिवार मध्यप्रदेश के प्रांतीय समन्वयक आर.के. गुप्ता, विजय गुप्ता, आर.पी. हजारी, डॉ. दयानंद समेले, पंकज बड़ौदे और राजूराम समेत कई गायत्री परिवार के सदस्य मौजूद रहे।

अध्यात्म और विज्ञान पर चर्चा- वहीं, भौतिक शास्त्र के प्रवक्ता अजय शर्मा ने वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि विज्ञान जीवन की सुविधा देता है, जबकि आध्यात्मिकता आंतरिक संतोष देती है। कार्यक्रम में अनमोल पाठक ने बताया कि गायत्री परिवार 70 सालों से युवाओं को देश हित कार्यों के लिए प्रेरित कर रहा है।

संपादकीय

सबसे बड़ा साहूकार चीन

चीन अब दुनिया का सबसे बड़ा महाजन और जालिम साहूकार बन गया है। यह भारत सहित समूची दुनिया के लिए बड़ी चिंता का विषय है। दरअसल चीन के पास भारी नकदी है और वो इसे गरीब देशों को बांटकर इसका रणनीतिक वित्तीय दोहन करता है। आलम यह है कि चीन के बीआरआई प्रोजेक्ट के जाल में विश्व के दो तिहाई यानी 150 देश फंस चुके हैं। इन देशों पर चीन का 94 लाख करोड़ रु. बकाया है, जो भारत जैसे देश के वार्षिक बजट का दोगुना और कई छोटे देशों की जीडीपी से भी ज्यादा है। चीन निर्यात के अलावा बड़ी कमाई विभिन्न देशों को दिए अपने कर्ज से करता है। ऑस्ट्रेलियाई थिंक टैंक लोवी इंस्टीट्यूट के मुताबिक 2025 में विकासशील देशों से चीन रिकॉर्ड 3 लाख करोड़ रु. वसूलेगा। 1.9 लाख करोड़ तो 75 सबसे गरीब देश देंगे। रिपोर्ट के मुताबिक विकासशील देशों पर चीन के कुल 94 लाख करोड़ रु. बकाया हैं। ये कर्ज एक दशक पहले बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के तहत दिए थे। चीनी दबाव के चलते इन देशों में स्वास्थ्य और शिक्षा बजट पर खतरा मंडरा रहा है। इन कर्जदार 46 गरीब देशों ने 2023 में अपने टैक्स का 20त्न हिस्सा कर्ज चुकाने पर खर्च किया। विकासशील देश चीन को कर्ज अदायगी और ब्याज भुगतान की लहर से जूझ रहे हैं। गौरतलब है कि चीन की आक्रामक कर्ज रणनीति बीआरआई से शुरू हुई। राष्ट्रपति शी जिनपिंग 2013 में इसे लाए और 150 देश इस प्रोजेक्ट से जुड़े हैं। ये देश वैश्विक जीडीपी का 40त्न हिस्सा हैं। 42 देशों पर चीनी कर्ज का बोझ उनकी जीडीपी के 10त्न से अधिक है। खास बात यह है कि 2017 में चीन विश्व बैंक व आईएमएफ को पीछे छोड़ दुनिया का सबसे बड़ा ऋणदाता बन गया। उसके द्वारा बांटे गए 80त्न सरकारी कर्ज विकासशील विकासशील देशों को गए। 55त्न कर्ज रिपेमेंट चरण में हैं। रिपोर्ट बताती है कि 2022 तक 60 प्रतिशत चीनी कर्ज वित्तीय संकट वाले देशों को गया। 2010 में यह आंकड़ा 5 प्रतिशत था। इन कर्जों पर ब्याज 4.2 प्रतिशत से 6 प्रतिशत तक है। जबकि, ऑर्गेनाइजेशन फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट की दर 1.1त्न है। ऊंचे ब्याज से कई देशों को कर्ज चुकाने में दिक्कतें होती हैं। आज स्थिति यह है कि दुनिया के 50 प्रतिशत से गरीब और कमजोर देश उच्च जोखिम में हैं या पहले से फंसे हैं। 53 देशों का चीन सबसे बड़ा कर्जदाता। 33 लाख करोड़ का कर्ज वर्ल्ड बैंक से भी छिपाया गया है। इनमें पाकिस्तान, अंगोला, श्रीलंका, जाम्बिया, लाओस आदि प्रमुख हैं। चीन शुरू में सस्ते कर्ज का प्रलोभन देता है, बाद में उसकी पठानी वसूली करता है। कर्ज न चुकाने पर उस देश की न सिर्फ सम्पत्तियों पर कब्जा करता है बल्कि गहरा राजनीतिक सामाजिक हस्तक्षेप भी करता है। अब उसने अंतराष्ट्रीय न्यायालय के समांतर तीस देशों का संगठन बनाना शुरू कर दिया है। कर्ज के मामले में भी चीन की प्राथमिकता वो देश हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध हैं, रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं या जहां लोकतंत्र कमजोर है। इससे भौगोलिक प्रभाव क्षेत्र विस्तार करता है। अब स्थिति है कि कर्ज बांटने के मामले में चीन अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष से भी आगे निकल रहा है। लोवी इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार, चीन 2025 तक विकासशील देशों से रिकॉर्ड 3 लाख करोड़ रु. की वसूली करेगा, जिसमें से 1.9 लाख करोड़ की राशि दुनिया के 75 सबसे गरीब देशों से प्राप्त होगी। कुल मिलाकर चीन की नीति न केवल भौगोलिक विस्तारवाद की है बल्कि वह आर्थिक अस्त्रों का इस्तेमाल भी अपनी विस्तार और वर्चस्ववादी इरादों को पूरा करने के लिए कर रहा है। भारत के लिए यह गंभीर चिंता का विषय है।

ट्रम्प का तीन प्रकार की नीतियों पर जोर

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

1) अवैध आप्रवासियों को बाहर निकालने का

2) उनके दृष्टिकोण से अमेरिका के आंतरिक वातावरण को बदलने पर

3) अमेरिकी अर्थव्यवस्था को ऋण से उबार कर पटरी पर लाने का

उनके द्वारा लिए ये तीनों ही निर्णय अमेरिका के बाहर की दुनिया के लिए विवादास्पद हैं। मानवता, धर्मनिरपेक्षता आदि तर्कों के आधार पर आलोचना के बिन्दु हैं। परंतु अपने स्वभाव के मुताबिक ट्रम्प अपने निर्णयों के प्रति दृढ़ नजर आते हैं और उनमें कोई विशेष बदलाव की गुंजाइश नहीं दिखती।

मैं समझता हूं कि ट्रम्प अब वैश्विक आर्थिक नीतियों के मार्ग से बगैर कहे अमेरिका को हटाना चाहते हैं।

विश्व व्यापार संगठन को भी अगर स्थायी तौर पर नहीं तो कम से कम वक्ती तौर पर निष्प्रभावी रखना चाहते हैं। वे अब अमरीका को फिर से श्बी अमेरिकन, बाई अमेरिकन्य के अमेरिकी राष्ट्रवाद की दिशा में ले जाना चाहते हैं। पिछले करीब चार पांच दशकों में अमेरिका ने जो दुनिया के साहूकार और मददगार बनने की पूंजीवादी शैली की नीति बनाई थी उससे वे हटना चाहते हैं। उन्होंने अमेरिका के बाहर के देशों को जो आर्थिक सामरिक मदद अमेरिका दे रहा था उसे लगभग समाप्ति की ओर ला दिया है।

जिन कुछ देशों को वे अभी भी मदद दे रहे हैं वह भी वे उनके वैदेशिक कूटनीति, अमेरिका के सामरिक राजनीतिक हितों के आधार पर तय कर रहे हैं। मेरी सूचनाओं के अनुसार आम अमरीकी उनके इन प्रयासों से संतुष्ट और सहमत है। यद्यपि वहां की विरोधी पार्टी ने उनके खिलाफन्यूयॉर्क में एक दिवसीय प्रदर्शन किया था, परंतु अमेरिकी समाज की ओर से उन्हें कोई विशेष समर्थन नहीं मिला।

अमेरिका की विदेश नीति के निम्न नये सूत्र हैं -

1) अमेरिका की आर्थिक, सामरिक श्रेष्ठता को वापस लाना

2) चीन के विस्तार को नियंत्रित करना

3) चीन की आर्थिक शक्ति को सीमित करना

पिछले दिनों अमेरिका चीन के बीच खुले व्यापार के शुरू होने के बाद चीन अमरीका के लिए सबसे बड़ा निर्यातक था।

चीनी अर्थव्यवस्था को इससे बहुत लाभ पहुंचा था।

ट्रम्प ने आरम्भ में उन सभी देशों से आयात पर टैरिफबढ़ाया जो अमेरिकी आयात पर टैरिफज्यादा लगाते हैं और अमेरिका उन्हें निर्यात में अधिक छूट देता है। उन्होंने उन सभी देशों पर इसी आधार पर टैरिफबढ़ाया कि जितना टैरिफअमेरिका अपने निर्यात में चुकायेगा उतना ही आयात में वसूल करेगा।

ट्रम्प की इस घोषणा के बाद और टैरिफवार शुरू करने के बाद समूची दुनिया में हलचल होना स्वाभाविक थी तथा चीन सहित कई देशों ने भी आरंभ में बदले में उसी रफ्तार से टैरिफबढ़ाने की घोषणा की। ट्रम्प ने उसी भाषा में उत्तर दिया। चीन ने अमेरिका के टैरिफबढ़ाने की घोषणा के आधार पर अमेरिकी आयात पर टैरिफ बढ़ाया गया तथा उसे बढ़ाकर 125 प्रतिशत कर दिया। बदले में 16 अप्रैल को अमेरिका ने चीनी आयात पर टैरिफ दर 145 प्रतिशत से बढ़ाकर 245 प्रतिशत कर दिया।

मीडिया ने इसे टैरिफवार का नाम दिया है। परंतु मेरी राय में यह टैरिफब्लैकमेलिंग है। अमरीका कई प्रकार के अघोषित लाभ, सुविधाएं, राजनीतिक समर्थन और अपने लक्ष्य के विरोधी देशों की घेराबंदी से दबाकर उनसे सहयोग लेना चाहता है।

अमेरिका के चीन पर शुल्क की बढ़ोत्तरी के बाद प्रारंभिक तौर पर चीन को फायदा नजर आया और अप्रैल के दस ग्यारह तारीख तक चीन का निर्यात 12.4 प्रतिशत बढ़ा तथा आयात में 4.3 प्रतिशत की कमी आई, क्यों कि अमेरिका ने टैरिफबढ़ाने के बाद चीन के निर्यात की दिशा भी बदली और चीन ने अमेरिका को छोड़कर दूसरे कम आर्थिक शक्तियों वाले देशों को सस्ता निर्यात

शुरू कर दिया। परंतु, इसका प्रभाव अमेरिका पर विशेष नहीं पड़ा क्योंकि अमेरिका चीन से जो आयात करता है वह अधिकांश उपभोक्ता सामग्रियां है, जो बुनियादी आवश्यकता नहीं हैं।

परंतु वह वक्री है। वस्तुतः दरअसल चीनी उपभोक्ता माल का सबसे बड़ा बाजार अमेरिका में ही था। भले ही तकनीकी रूप से चीन का अमेरिकी आयात घटा हो और अब देशों को निर्यात बढ़ा हो, इसका नुकसान चीन को हो रहा है।

जनवरी-मार्च 2025 के बीच चीनी निर्यात 5.8 प्रतिशत बढ़ा और आयात में 7 प्रतिशत की गिरावट आई। यानी चीन का अमेरिका के साथ व्यापार में जो व्यापार घाटा 27.6 अरब डॉलर था, टैरिफवृद्धि के बाद यह घाटा बढ़ कर 76. 6अरब डालर हो गया। मतलब साफहै कि चीनी माल के अमेरिकी बाजार में जाने की कमी होने के बाद चीन को व्यापार अधिशेष में लगभग 50 अरब डॉलर याने लगभग 4 लाख करोड़ रुपये का घाटा हुआ है। जिन दूसरे देशों ने चीन से कुछ आयात बढ़ाया है उनसे चीन का माल तो बिकेगा परंतु चीन को कोई विशेष मुनाफा नहीं होगा। जैसे भारत चीन से तेल आयात करता है, जेम-ज्वेलरी आयात करता है, वियतनाम से मोती, ताइवान से इलेक्ट्रिकल मशीनरी, टीवी, साउंड रिकार्डर, स्विट्जरलैंड से मैकेनिकल सामा, थाइलैंड से तेल और वसा आयात करता है। अब यह आयात चीन अपने पुराने टैरिफदरों पर भारत या अन्य देशों को निर्यात करता रहेगा। ताइवान, वियतनाम, थाइलैंड, स्विट्जरलैंड आदि देश भारत या अन्य देशों को निर्यात करते रहेंगे तो उनकी अर्थव्यवस्था कुछ दिनों में प्रभावित होगी। अमेरिका को तो एक अर्थ में यह फायदा ही हुआ है कि अमेरिकीयों ने मूल्यवृद्धि की आशंका से स्वतरू अपनी खरीददारी में पहले माह में 10-20 प्रतिशत और बाद के माहों में बीस से चालीस प्रतिशत विदेशी सामान की खरीद कम कर दी। अमेरिकी कंपनियों का अपना घरेलू बाजार बट गया है। यहां तक कि खरीददारी का मौसम भी बदल गया। अमेरिकी लोग पिछले दस वर्षों से सितंबर माह के आरंभ में एप्पल फोन आदि खरीदते थे क्योंकि एप्पल सितंबर में नये माडल पेश करता था। अब अप्रैल में ही यह खरीदी हो गई है। अमेरिका के स्टोर्स पर खरीददारों की भीड़ है। अमरीका ने योजना के तहत 14 अप्रैल को चीन के अलावा अन्य देशों को बढ़ाये हुए टैरिफपर नब्बे दिनी रोक लगा दी। चीन से आयात होने वाले इलेक्ट्रॉनिक सामान को भी छूट दे दी। अमेरिका की जो जरूरतें फिलहाल बाहर के बाजार से सस्ती दरों पर पूरी हो रही थीं उन्हें एक प्रकार से जारी रखा है। अमेरिकी स्टोर मालिक इन सामानों को बड़े पैमाने पर आयात कर अपने स्टोरों में भर रहे हैं, जिससे दोबारा टैरिफ वृद्धि हुई तो अमेरिकी उपभोक्ता को लम्बे समय तक विदेशी आयात की निर्भरता नहीं रहे। स्थिति यह है कि क्रिसमस की खरीददारी लोग आठ माह पहले कर रहे हैं। 2 से 7 अप्रैल के बीच डिब्बाबंद सामान, सब्जी, इंस्टैंट काफी, केचप आदि की खरीद 25 प्रतिशत बढ़ गई है। यह भी अमेरिका को एक प्रकार का फायदा ही है। अगर अमेरिकी समाज अपने उपभोक्ता खर्च को कम करेगा तो विदेशी आयात घटेगा और स्वदेशी की मांग बढ़ेगी।

अमेरिकी शुल्क वृद्धि की घोषणा के बाद भारत में निवेशकों की सम्पत्ति लगभग 11. 5 लाख करोड़ रुपए घटने का अनुमान लगाया गया है। इससे भारत के निवेशक और कुछ राजनेता चिंतित हैं। भारत की कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 11. 5 लाख करोड़ रुपए से घटकर 4 लाख करोड़ रुपए पर आ गया है। हालांकि इस उतार से अभी तक भारत के बाजार में हलचल नहीं है। दरअसल यह घट-बढ़ बहुत हद तक प्रतीकात्मक और काल्पनिक होती है। जैसे एक समय टू-जी स्पेक्ट्रम की खबरें छपने के बाद दो लाख करोड़ का राजकोषीय घाटा बताया गया था जो एक प्रकार से इमेजनरी था। इस खबर ने देश में उस समय बड़ी हलचल पैदा की। इससे केन्द्र की सरकार बदल गई। बाद में टू-जी स्पेक्ट्रम की नीलामी और भी कम दरों पर हुई। इसका मतलब है कि या तो भारत के निवेशक इतने परिपक्व हो चुके हैं कि वे इन खबरों और इस काल्पनिक उतार चढ़ाव से अब प्रभावित नहीं होते। वैसे भी मेरी राय में भारत के निवेशकों को घबड़ाकर जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। जब किसी देश के बाजार में, विशेषकर शेयर बाजार में घाटा होता है, शेयर के दाम गिरते हैं, घबड़ाकर निवेशक शेयर सस्ते दामों पर बेचते हैं तब दुनिया के पूंजीपति भारत के व उन देशों के गिरावट वाले शेयर को खरीदते हैं। कोरोना काल में भी यह खेल देख चुके हैं। यह विदेशी पूंजीवाद के द्वारा भारतीय पूंजी का चालाक अधिग्रहण होता है। एसबीआई ने एक रिपोर्ट में कहा है कि अमेरिका की टैरिफवृद्धि से वर्ष 2025 में अमेरिका का निर्यात 85 हजार करोड़ रुपए कम हो सकता है। इससे चिंतित नहीं होना चाहिए। भारत का अमरीका को निर्यात बुनियादी जरूरतों की चीजों पर नहीं होता। ज्यादातर खानपान उपभोक्ता सामग्री या अमेरिकी कंपनियों के द्वारा भारत में निर्मित किए गए सामान के निर्यात पर ही होता है। एसबीआई की ताजा रिपोर्ट में स्वतरू यह स्वीकार किया गया है कि दुनियाभर में निर्यात 1.3 प्रतिशत कम होगा। परंतु भारत का निर्यात या भारत की जीडीपी में 0. 2 प्रतिशत की कमी होगी। रुपयों में केवल 66 हजार करोड़ की कमी होगी। इस कमी को भारत अपने देश के भीतर स्वदेशी के उपयोग, विदेशी उपभोक्ता सामग्री को कम कर आसानी से पूरा कर सकता है।

आज देश में केवल सौन्दर्य प्रसाधन का व्यापार दस लाख करोड़ रुपए से अधिक का है। महानगर, शहर से लेकर कस्बों तक में न केवल दूल्हा-दुल्हन बल्कि मध्यवर्गीय लोग तक सुन्दर दिखने के लिए ब्यूटी पार्लर में जा रहे हैं। स्वस्थ होने या वजन कम करने के लिए नेचुरोपैथी के नये उभरते व्यापार केन्द्रों में जा रहे हैं। इन नेचुरोपैथी सेंटर में जल-जमीन-जंगल पर्यावरण तो स्वदेशी होता है, जो व्यापारियों की लाचारी है। जंगल या नदियां आयात नहीं किए जा सकते। परंतु इनकी मशीनें, जिम की मशीनें, शैम्पू, लोशन विदेश से आयात हो रहे हैं। अगर हम भारतीय परम्परा पर वापस लौट आयें और साल छह माह घर में ही हलदी तेल का उबटन शुरू कर दें तो छह सात लाख करोड़ रुपए बच सकता है। विदेशी शैम्पू तेल निर्माताओं का मुनाफा कई हजार करोड़ रुपए कम हो सकता है। इस छोटे से निर्णय से भारत 66 हजार करोड़ रुपए के घाटे को पूरा कर सकता है। और कुछ बचा भी सकता है।

दुखद यह है कि भारत की सत्ता व राजनीति दिमागी तौर पर विदेशी पूंजी, विदेशी सभ्यता व गोरी चमड़ी की मानसिक गुलाम हो गयी है।

आइये, हम सब मिलकर गांधी के स्वदेशी, स्वावलंबन व स्वतंत्रता के सिद्धांत को अपनायें। लोहिया के भारतीय भाषा-भूषा-भवन के सिद्धांत को अपनायें तो टैरिफवार का यह संकट तिनके के समान उड़ जायेगा। भारत की सत्ता गांधी का नाम नहीं ले सकती और प्रतिपक्ष गांधी को वोट का हथियार तो बनाता है परंतु अमल में नहीं लाता।

भारत सरकार ने अमरीकी ब्लैकमेलिंग को स्वीकार कर लिया लगता है। कल प्रधानमंत्री व एलन मस्क की टेलीफोन वार्ता हो गई है। शायद जल्दी ही सरकार एलन मस्क को जो वे चाहते हैं वह दे देगी। ट्रम्प की टैरिफब्लैकमेलिंग वापस हो जायेगी।

कोरोना फिर हुआ बेकाबू

पहले जैसे बढ़ रहे आंकड़े

मुद्दा

ऋतुपर्ण दवे

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

कोरोना की रफ्तार फिर पहले सरीखे गति पकड़ रही है। देश-दुनिया में चिंता है। भारत में हर दिन नई-नई आती सूचनाएं डरा रही हैं। उंगलियों पर गिने जाने वाले आंकड़े हफ्ते भर में ही हजारों में पहुंच गए। मरने वालों की संख्या में भी हो रही वृध्दि अलग डराती है। कहां 19 मई तक आधिकारिक तौर पर 257 मामले थे। इस रविवार सुबह तक यह आंकड़े 3395 पार गए हैं। मरने वालों की संख्या भी हर रोज बढ़ रही है। सबसे ज्यादा केरल में 1336 सक्रिय मामले हैं। वहीं इससे होने वाली मौतों की शुरुआत भी हो चुकी है जो अभी बहुत ही कम है। लेकिन एक दिन में 685 मामले दर्ज होना, बड़ा इशारा है। महाराष्ट्र में 467 दिल्ली में 375 गुजरात में 265, कर्नाटक में 234, पश्चिम बंगाल में 205, तमिलनाडु में 185 मामले आए हैं। हांगकांग और सिंगापुर में यह बहुत तेजी से फैलते कोरोना ने भारत में जिस तरह पैर पसारा वो चिंतनीय है। इसके नए वैरिएंट जेएन-1 का प्रकोप जारी है जो पहली बार अगस्त 2023 में मिला था। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे दिसंबर 2023 में ही 'वैरिएंट ऑफ इंटरेस्ट' घोषित कर साफ किया था कि यह ओमीक्रॉन बी.ए.2.86 का वंशज है। इसमें 30 के लगभग म्यूटेशन पाए गए जिनमें एल.एफ.7 और एन.बी.1.8 की संख्या ज्यादा थी। कोरोना की यह नई लहर साउथ-ईस्ट एशिया में कुछ ज्यादा ही असर दिखा रही है। सिंगापुर, हांगकांग और थाईलैंड जैसे देशों में कोविड के मामले बहुत ही तेजी से बढ़ने के बाद अब भारत में रफ्तार पकड़ रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि इसका कारण लोगों के शरीर में एंटीबॉडी का कम हो जाना भी है। भारत में भी ऐसी संभावनाओं से इंकार नहीं है।

इतना तो लगने लगा है कि सप्ताह भर में ही बढ़े संक्रमण के मामलों में जो उछाल आया है वो चिंताजनक है। चीन से भी छन-छन कर जो निकल रहा है उससे इतना तो पता चल गया कि वहां भी बीते एक महीने में कोरोना के मामलों में काफी तेजी आई है। लेकिन दुनिया को कोरोना देकर भी छुपाने और तबाही की कगार पर पहुंचाने के बाद चीन से जितने सच सामने आए, उसने दुनिया में कैसा विनाश मचाया था, सबने देखा।

इस बार संक्रमित होने वाले अधिकतर लोग वो ज्यादा हैं जो या तो कोमर्बिडिटी यानी सह-रुग्णता वाली स्थिति में हैं। इसमें प्रभावितों को एक ही समय में एक से अधिक बीमारियाँ होती हैं जिसके कई कारण हो सकते हैं। कुछ सामान्य जोखिम कारक होते हैं, जबकि कुछ अन्य स्थितियों से उत्पन्न लक्षणों या उसके उपचारों के कारण होते हैं। अभी ज्यादातर लक्षण, कोमोर्बिटी या फिर 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में दिख रहे हैं। लेकिन प्रभावित हर आयु वर्ग के लोग हो रहे हैं। स्वास्थ्य जोखिमों को देखते हुए अधिकारियों ने डॉक्टर की सलाह पर अपडेटेड वैक्सीन लेने की सलाह दी है। उच्च जोखिम वालों बुजुर्गों, कोमोर्बिटी के शिकार को पहले से ही सालाना कोविड-19 वैक्सीन लेने की सलाह दी जाती रही है।

केरल के बाद महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में भी कोरोना मरीजों की संख्या बढ़ना चिंताजनक है। उधर अब हॉन्गकॉन्ग के स्वास्थ्य अधिकारी अल्बर्ट अउ का वो बयान सामने है जिसमें उन्होंने माना कि कोरोना वायरस के मामले वहां तेजी से बढ़ रहे हैं। सांस लेने की तकलीफ वाले मरीजों के कोविड पॉजिटिव पाए जाने की संख्या अभी साल के महज पाँचवें महीने में ही उच्च स्तर पर पहुंच गई थी। जबकि चीन में श्वांस संबंधी बीमारियों की जांच करवाने वाले मरीजों में कोविड वायरस पाए जाने के मामले दो गुने होना चिंताजनक है। लोगों को बूस्टर शॉट लेने की सलाह दी गई है। साथ ही चाइनीज सेंटर फॉर डिजीज एंड प्रिवेंशन के आंकड़ों के मुताबिक, कोविड की लहर जल्द ही तेज भी हो सकती है। चीन, थाईलैंड और हांगकांग में वहां की सरकारें अलर्ट पर हैं।

साउथ-ईस्ट एशिया के हालात देखते हुए भारत भी सतर्क है। स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक यानी डीजीएचएस ने राष्ट्रीय रोग नियंत्रण, आपदा प्रबंधन सेल, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और केंद्रीय सरकारी अस्पतालों के विशेषज्ञों के साथ बैठकें कर चुके हैं। देश की बड़ी आबादी के दृष्टिगत बढ़ती संख्या कहीं न कहीं चिंता बढ़ाने वाली है। अस्पतालों को इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारियों और श्वसन संक्रमण के गंभीर मामलों की निगरानी करने के लिए कहा गया है। हालांकि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय स्थिति पर बारीकी से निगरानी रख सतर्क और सक्रिय होकर सुनिश्चित कर रहा है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए उचित उपाय किए जाएं।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं आयुष विभाग किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए पूरी तरीके से तैयार है। स्वास्थ्य मंत्रालय पूरी तरीके से सतर्कता के साथ हर परिस्थिति पर नजर रख रहा है। हां, देश भर के सभी अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की भी जिम्मेदारी है कि सतर्क रहें, सतर्क करें। ऑक्सीजन और वैक्सीन के इंतजाम पर्याप्त रखे जाएं। ईश्वर करे कि वो स्थिति न आए जिसे हमने देखा, भोगा है। लेकिन पुराने कड़ने अनुभव, काली यादें और कोरोना के कुछ साल का दौर कितना भयावह था, याद कर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। याद कीजिए कैसे उंगलियों पर गिनने लायक कोरोना के मामले पहले दर्जन से सैकड़ा, फिर हजार और उसके बाद लाखों में पहुंचे। अच्छा हो इस बार इससे शुरू में ही निपट लिया जाए जिसका तरीका हमें अब पता है। यकीनन एक बार फिर वो दौर आ गया है जब 2019-20 जैसे अहतियात और मास्क की जरूरत आन पड़ी है। अच्छा हो कि अभी से सचेत हो जाएं। इस बार ज्यादा चिंता की जरूरत वैसी नहीं है जैसी पिछले बार थी। चूंकि हमने कोरोना से बचना, लड़ना और निपटना सीख लिया है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम लापरवाह हो जाएं। इस बार भी इस वायरस को चुनौती देने के लिए फिर पुरानी और एक तरह से अब परंपरागत कही गतिविधियों यानी मास्क, दो गज की दूरी, हाथ धोने जैसे तरीकों को अपनाना होगा। इस सच्चाई को मानकर चलना होगा कि अब हमें अगले कुछ वर्षों तक कोरोना के साथ ही जीना होगा इसलिए इससे निपटना भी उनता ही जरूरी होगा। बस तो जरूरत है कि सतर्क रहें। जरा से संदेह पर चिकित्सकीय परामर्श में कोताही न करें और फिर पनप रहे कोरोना के बहुरूपिया वायरस को चुनौती दें।

भ्रष्टाचरण से रंगे पुते नेता राजनीति पर बोझ

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

किसी जमाने में सक्रिय राजनीति जन सेवा का पर्याय थी। आम नागरिकों के मन मे राजनेताओं के प्रति गहरा सम्मान भाव रहा करता था। राजनेताओं द्वारा उच्च स्तरीय आदर्श को शिद्दत से आत्मसात किया जाता था। उनका व्यक्तित्व एक खुली हुई किताब के समान था। एक प्रकार से उनके चरित्र की सौगंध भी खाई जा सकती थी। लेकिन देखते ही देखते सक्रिय राजनीति आर्थिक समृद्धि का आसान तरीका बनती चली गई। आज स्थिति यह है कि छोटे से छोटे और बड़े से बड़े पद पर आरूढ़ राजनेताओं की तब और अब की आर्थिक स्थिति लगातार उछाले मारती दिखाई देती है।

अब धर्म शास्त्रों के अनुसार धन का उपयोग तो केवल दान और भोग के रूप में ही किया जा सकता है अन्यथा उसका नाश तो निश्चित होता है। दान देने की भावना से कई गुना भावना यह रहा करती है कि उसका भोग किया जाए। अब आज के समय में भोग का केवल यह अर्थ नहीं निकाला जा सकता कि आदमी अपना खान-पान और जीवन स्तर उच्च स्तर पर ले जाए। दरअसल इसकी भी अपनी एक निश्चित सीमा हुआ करती है। इसके चलते बहुतेरे के कदम बहक भी जाया करते है। वैसे भी जब बिना किसी कठोर परिश्रम के अथाह धन दौलत हांसिल हो जाती है, आदमी बहककर भ्रष्टाचरण की दिशा में लंबी दौड़ लगा जाता है।

ऐसे में यदि सत्ता की छाया हो और राजनीति में गहरी पैठ हो, फिर तो उन्मुक्तता या यूं कहें कि उच्छृंखलता इस कदर बढ़ जाती है कि आदमी पर हैवानियत छा जाती है। कहा जाता है कि आवश्यकता से अधिक धन संपन्न होने पर हर कोई उसे पचा नहीं सकता। वैसे खून पसीना एक करके कमाए गए धन का दुरुपयोग करने की तो कोई सोच भी नहीं सकता। लेकिन भ्रष्टाचार से कमाए गए धन के चलते आदमी के बहकने की संभावनाएं कई गुना बढ़ जाती हैं। परिणाम यह निकलता है कि आदमी 'अय्याशी' की ओर प्रवृत्त होने लगता है। ऐसी स्थिति में चरित्र को बचाकर रखना आसान नहीं होता।

हाल ही की चंद घटनाएं सत्तारूढ़ दल को शर्मसार कर गई। आजकल के सोशल मीडिया के जमाने में ऐसी घटनाएं जमकर वायरल हुई, जिससे आम नागरिकों के मन में गहरा क्षोभ देखा गया। एक घटना का शोर थमता नहीं था और एक के बाद एक इस तरह की अनेक घटनाएं प्रकाश में आने लगी। हालांकि ऐसी स्थिति में संबंधित दल द्वारा तत्काल प्रभाव से भ्रष्टाचरण में लिप्त शख्सियत से किनारा कर लिया जाता है। लेकिन कभी-कभी तो राजनीतिक हित-अहित का ध्यान रखते हुए घटनाक्रम को ठंडे बस्ते में भी डाल दिया जता है। इसके चलते राजनीति में राजनीतिक गरिमा का ह्रास होता है।

अब तक राजनीति में भ्रष्टाचार को गलत तरीके से धनार्जन और भाई भतीजवाद के रूप में ही समझा जाता था। लेकिन इस समय भ्रष्टाचार में भ्रष्टाचरण का तमगा और जुड़ गया। ऐसे में प्रतिष्ठित राजनीतिक दल भी यदि 'शुचिता और पवित्रता' का लाख दांवा करें, तो भला कोई कैसे विश्वास करें ? आश्चर्य तो तब होता है जब औरों से अलग समझे जाने वाले राजनीतिक दल के जिम्मेदार नुमाइंदे भी अपने चाल चलन चरित्र और व्यवहार से एकदम हल्के स्तर पर पशुवत मनोवृति का परिचय देते हैं। ऐसे में आखिर राजनीति में चारित्रिक गिरावट का यह दौर विशेष कर राजनीति की नई पीढ़ी को क्या संदेश देता है ?

इन तमाम संदर्भों में होना यह चाहिए कि सत्तारूढ़ दल द्वारा किसी भी शख्सियत को सत्ता एवं संगठन में कोई पद देने के पूर्व उसकी मनोवृति तथा आचरण और व्यवहार को लेकर गहरी जांच पड़ताल कर ली जाएं। आजकल के दौर में वैसे भी अब किसी भी शख्सियत का व्यक्तिगत जीवन या उसकी दिनचर्या नितांत व्यक्तिगत ही रहे, यह कतई जरूरी नहीं रह गया है। साफ तौर पर कहा जाए तो राजनीतिक वर्चस्व भी तब ही बना रह सकता है जब कि हर एक राजनेता का जीवन क्रम खुली किताब की भांति हो। एक प्रकार से राजनेताओं के अंतरंग और बहिरंग में एकरूपता रहे, और यह स्पष्ट तौर पर हर किसी को दिखाई भी दे, यह अत्यंत आवश्यक है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गर्मी का असर, बाहर और भीतर

व्यंग्य

केदार शर्मा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

इन दिनों गर्मी की चर्चाएँ भी उतनी ही गर्म हैं, जितनी खुद गर्मी। होनी भी चाहिए। यह कोई साधारण मौसम नहीं, सूरज देवता ने ऑपरेशन हीट जो चला रखा है जनाब ! ऊपर आसमान से आग बरस रही है और नीचे धरती पर राजनीतिक बयानबाज़ी वर्चुअल मंचों से शोले उगल रही है।

खैर गर्मी सियासत की हो या जमीन की हलचल मचा देने वाली होती है। बेचारे वे जीव जो आराम से अपने-अपने बिलों में सोयेङ्कपड़े थे, माहौल के गर्म होते ही निकलकर बाहर आ जाते है। कुछ चैनलों में घुस जाते है पैनलों में बहस करते हैं, तो कुछ मंचो पर चढ़ जाते हैं और बयानों पर बयान दागते हैं। कुछ अखबारों में जगह बनाते हैं तो कुछ सोशल मीड़िया पर खनखनाते हैं। कुछ खुले आम घूम रहे हें, कुछ आस्तीनों मे झूम रहे हैं। इनमें से कुछ जहरीले होते तो कुछ शक्करीले होते हें।

मौसम की यह गर्मी तो कुछ समय बाद चली जाएगी, लेकिन गर्मी के मारे, कहाँ जाएँगे ये बेचारे? इनमें से कौन किसके साथ है और कौन नहीं, यह पता लगाना अब बालू में से तेल निकालने जैसा कठिन हो गया है। हालिया दिनों में कुछ जीव जासूसी के आरोप में धर लिए गए हैं, कुछ धरे जा रहे है।

आज असली लड़ाई बाहर के खुले आम घूमते जीवों से कम, अंदर आस्तीनों में मौन होकर झूमते जीवों से ज़्यादा है। नक्सलवादी, आतंकवादी, साइबर अपराधी, गैंगस्टर, बजरी माफिया, हिस्ट्री शीटर—हर कोई अपनी-अपनी तरह से गर्मी के साथ खुलेआम कदमताल कर रहे है। और तो और, भ्रष्ट नौकरशाही, मुनाफाखोर व्यापारी, और कुछ कथित पेशेवर बुद्धिजीवी तक भी देश को भीतर ही भीतर चूस रहे हैं।

लेकिन गर्मी सिर्फ सियासत को नहीं झुलसा रही, घरों की दीवारों के भीतर भी इसका असर कम नहीं है। कभी किसी का गुस्सा चढ़ता है तो बहाना बनता है—गर्मी ही इतनी है जी, बेचारे के दिमाग में चढ़ गई होगी,जाने भी दो यार !

मनोवैज्ञानिकों कहना हैं कि जब बाहर बड़े स्तर पर लड़ाई चल रही हो, तो भीतर की लड़ाइयाँ ठंडी हो जाती हैं। हमारे पड़ौसी देश द्वारा नापाक कुकृत्यों अंजाम देने का और हमारी सेना द्वारा उसे मुंहतोड़ जवाब देने का घटनाक्रम घटा है तब तक तो हमारे पड़ौसी छदामी और उसकी पत्नी के बीच अच्छा तालमेल रहा। दोनो ने जमकर इस इस सियासती गर्मी के खिलाफ सोशल मीड़िया पर कमेंट्स के मिसाइले दागी।

सीजफायर के बाद एक गर्म दोपहर को दोनो के बीच गर्मागर्म वाक्युद्ध हो गया। छदामी तपते सूरज की तरह दहक उठे और गरजे—जब से तुम घर में आई हो, मेरा सुख-चैन गायब हो गया है !

पत्नी ने भी पलटवार में कसर नहीं छोड़ी। वाक्युद्ध कुछ देर चला, लेकिन छदामी इस बार इक्कीस ही रहे।

थक-हार कर उनकी पत्नी ने अपनी माँ को फोन लगाया और गुस्से में कहा÷माँ, मैं अब यहाँ नहीं रह सकती। अभी का अभी बोरिया-बिस्तर लेकर आ रही हूँ।

उधर माँ भी कोई आम गृहिणी नहीं, अनुभव की धनी जनरल कमांडर निकलीं। वे बोलीं—बेटा, अभी गर्मी जोरों पर है, हीटवेव चल रही है। दामादजी के दिमाग का कोई पुर्जा ज़्यादा ही गरम हो गया होगा। तू अभी चली आई तो दामादजी तेरी जुदाई और ये हीटवेव, दोनों नहीं झेल पाएँगे। कहीं पूरे दिमाग का फ्यूज़ ही उड़ गया तो तू इस खट्टी छाछ से भी हाथ धो बैठेगी। तूने देखा नहीं कैसे हमारा पड़ौसी देश हमारी नदियों के पानी से हाथ धो बैठा। अब उसे ऑपरेशन हीट और ऑपरेशन सिंदूर दोनो के साथ पानी की कमी का त्रास भी झेलना पड़ रहा है।

माँ ने आगे जोड़ा— देख, समय की नज़ाकत को समझ। पड़ोसी देश तक को सीजफायर की मोहलत दी जा रही है। तू भी दामादजी को थोड़ा समय दे। उन्हें ठंडी लस्सी, ठंडाई पिला—और खुद भी पी। जब सर्दियाँ आएँगी, यही आदमी कंबल ओढ़कर तेरी खरी-खोटी सब चुपचाप सुन लेंगे। तब उनका यह जोश ही नहीं जबान तक जम जाएगी। तब तू सूद समेत हिसाब वसूल लेना।

फिर माँ ने अंतिम सलाह दी—तो देख दिनन के फेर को, अभी तू रहना मौन, जब वक्ता बनें दामादजी, मत बनना तू डॉन !

तो भाइया, जब सूरज ऑपरेशन हीट में व्यस्त हो, तो देश से लेकर दामाद तक—हर कोई तप रहा होता है। ज़रूरत है तो बस थोड़ी ठंडी सोच और कुछ धीरज की। क्योंकि चाहे देश हो या गृहस्थी, हीटवेव में फूँक-फूँककर ही कदम रखना पड़ता है।

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

सिंधु जल संधि स्थगन पूरी तरह विधि सम्मत

पाकिस्तान के आतंकवाद को समर्थन देने पर भारत ने सिंधु जल संधि निलंबित करने की घोषणा की। भारत ने कहा कि जब तक पाकिस्तान विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय रूप से सीमा पार आतंकवाद के लिए अपने समर्थन का परित्याग नहीं कर देता, यह संधि स्थगित रहेगी। लेकिन, भारत सिंधु जल संधि से न तो पीछे हटा है और न नदी के प्रवाह को बदला है। भारत ने सिर्फ प्रक्रियागत सहयोग को रोक दिया। लाभ के लिए पानी का नहीं, बल्कि कानून का इस्तेमाल किया है। यह कानूनी कूटनीति है। यहां संयम प्रभाव को बढ़ाता है। भारत के इस अभूतपूर्व कदम ने कई जटिल कानूनी सवालों को जन्म दिया है।

पहलगाम में नागरिकों पर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी हमले के बाद, भारत सरकार ने घोषणा की, कि सिंधु जल संधि, 1960 (आईडब्ल्यूटी) को तत्काल प्रभाव से स्थगित कर दिया जाएगा। प्रमुख जल-बंटवारा संधि तब तक निलंबित रहेगी जब तक पाकिस्तान विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय रूप से सीमा पार आतंकवाद के लिए अपने समर्थन का परित्याग नहीं कर देता। सिंधु जल संधि भारत और पाकिस्तान के बीच सबसे मजबूत राजनीतिक समझौतों में से एक रही है, जो कई युद्धों और शत्रुता के लंबे दौर से बची रही है। हालांकि, संधि को स्थगित करना भारत का गंभीर कदम है। क्योंकि, यह जल-साझाकरण सहयोग को व्यापक राजनीतिक और सैन्य तनावों से अलग रखने की लंबे समय से चली आ रही परंपरा को तोड़ता है। फिर भी, यह भारत का अंतर्राष्ट्रीय कानून से पीछे हटना नहीं है। यह एक रणनीतिक कानूनी शासन कला है।

सिंधु जल संधि को 19 सितंबर 1960 को भारत और पाकिस्तान के बीच विश्व बैंक ने मध्यस्थता के माध्यम से पारित किया था। इस संधि ने सिंधु नदी प्रणाली के जल के उपयोग के संबंध में दोनों देशों के अधिकारों और दायित्वों को निर्धारित और सीमांकित किया। इसने पश्चिमी नदियों सिंधु, झेलम और चिनाब के जल पर नियंत्रण पाकिस्तान को और पूर्वी नदियों रावी, ब्यास और सतलुज के जल पर नियंत्रण भारत को दिया। संधि ने जल पर विवादों को सुलझाने के लिए तीन चरणीय सीढ़ी बनाई। द्विपक्षीय स्थायी सिंधु आयोग की वार्षिक बैठक प्रश्नों को संभालती है। विश्व बैंक द्वारा नियुक्त तटस्थ विशेषज्ञ मतभेदों को संभालता है। साथ ही मध्यस्थता न्यायालय का आयोजन विवादों को संभालता है।

स्थगन की भाषा जानबूझकर है। भारत न तो संधि से पीछे हटा है और न नदी के प्रवाह को बदला है। लेकिन, भारत ने प्रक्रियागत सहयोग को रोक दिया। लाभ के लिए पानी का नहीं, बल्कि कानून का इस्तेमाल किया है। यह कानूनी कूटनीति है। यहां संयम प्रभाव को बढ़ाता है। भारत के इस अभूतपूर्व कदम ने कई जटिल कानूनी सवालों को जन्म दिया है। पहला, क्या किसी संधि को स्थगित रखना अंतरराष्ट्रीय कानून में मान्यता प्राप्त है? दूसरा, क्या स्थगित रखना गलत कार्यों के विरुद्ध प्रतिकार के रूप में उचित ठहराया जा सकता है? स्थगन शब्द का तात्पर्य अस्थायी रूप से उपयोग न किए जाने या निलंबन की स्थिति से है। लेकिन, यह अंतर्राष्ट्रीय संधि कानून के तहत कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त अवधारणा नहीं है। न तो अंतर्देशीय जल परिवहन (आईडब्ल्यूटी) और न ही संधियों के कानून पर संधियों के संबंध में वियना कन्वेंशन, 1969 (वीएलसीटी) संधि दायित्वों को रोकने या निलंबित करने के आधार के रूप में स्थगन प्रदान करता है।

अंतर्देशीय जल परिवहन में एकतरफा निलंबन की अनुमति देने वाला कोई प्रावधान नहीं है। इसके बजाय अंतर्देशीय जल परिवहन के अनुच्छेद में कहा गया है कि संधि उस उद्देश्य के लिए संपन्न विधिवत अनुसमर्थित संधि द्वारा समाप्त होने तक लागू रहेगी। इसी तरह, वियना कन्वेंशन के तहत, किसी संधि को केवल विशिष्ट आधारों पर निलंबित या समाप्त किया जा सकता है। इसमें भौतिक उल्लंघन (अनुच्छेद 60), असंभवता (अनुच्छेद 61) और मौलिक परिवर्तन (अनुच्छेद 62) शामिल है। आमतौर पर इसके लिए पक्षों की आपसी सहमति (अनुच्छेद 57) की आवष्यकता होती है। वियना कन्वेंशन अनुच्छेद 60-62 के तहत उल्लेखित किसी भी आधार का हवाला दिए बिना किसी संधि को एकतरफा रूप से रोके रखने (या स्थगित करने) की अनुमति नहीं देता है।

वियना कन्वेंशन (वीएलसीटी) इस बारे में कोई मार्गदर्शन नहीं देता कि संघर्ष या बढ़े हुए राजनीतिक तनाव के दौरान किसी संधि को निलंबित या संशोधित किया जा सकता है या नहीं। भारत वियना कन्वेंशन पर हस्ताक्षरकर्ता नहीं है। लेकिन, उसने इसके सिद्धांतों को अस्वीकार भी नहीं किया। व्यवहार में भारत ने लगातार इसके कई नियमों का पालन किया है। प्रथागत अंतर्राष्ट्रीय कानून के आवेदन के रूप में या इसके सुविधाजनक दिशा-निर्देशों को अपनाकर। उदाहरण के लिए, भारत ने बंगाल की खाड़ी समुद्री सीमा मध्यस्थता में वियना कन्वेंशन आधारित सिद्धांतों का आह्वान किया और भारतीय अदालतों ने भी उन्हें अपनाया है।

यद्यपि भारत औपचारिक रूप से वियना कन्वेंशन से बंधा हुआ नहीं है। फिर भी उसने इसके मानक ढांचे का स्पष्ट रूप से समर्थन किया है। इसमें यह सिद्धांत भी शामिल है कि संधियों का सम्मान सद्भावनापूर्वक किया जाना चाहिए। हालांकि, यह सिद्धांत निरपेक्ष नहीं है। यह प्रतिवाद, आवश्यकता और राज्य संप्रभुता जैसे सिद्धांतों के साथ सह-अस्तित्व में है। यह असाधारण मामलों में संधि दायित्वों से अस्थायी रूप से हटने को उचित ठहरा सकते हैं। यह दृष्टिकोण भारत को अपने संधि आचरण में लचीलापन प्रदान करता है। विषेष रूप से निलंबन या समाप्ति के मामलों में, जैसा कि अंतर्देषीय जल परिवहन के प्रति इसके हालिया दृष्टिकोण में देखा गया हैं।

भारत ने संधि से पीछे हटने का फैसला नहीं किया है और न उसने जल प्रवाह को मोड़ा या आवंटन कोटा का उल्लंघन किया है। वास्तव में, ऐसा करने के लिए उसके पास बुनियादी ढांचे का अभाव है, जो डाउन स्ट्रीम उपयोग को बाधित करने के लिए आवश्यक पैमाने पर है। इसके बजाय भारत ने प्रक्रियात्मक सहयोग को अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया है। अर्थात विवाद समाधान मंचों, संयुक्त तंत्रों और संधि संचालन से जुड़े नियमित राजनयिक जुड़ावों में भागीदारी। यह परित्याग नहीं है। यह कानूनी संयम का एक नपा-तुला रूप है। यह लंबे समय से चली आ रही, अनसुलझी गलत राज्य प्रायोजित आतंकवाद की कार्रवाई के सामने किया गया है। सिंधु जल संधि में निरस्तीकरण की अनुमति देने वाला कोई स्पष्ट खंड नहीं है। वियना कन्वेंशन के अनुच्छेद 62 में प्रावधान है, कि यदि परिस्थितियों में कोई मौलिक परिवर्तन हुआ है, तो संधि को समाप्त या वापस लिया जा सकता है।

यह भारत के पूर्व सिंधु जल आयुक्त ने इसका उल्लेख किया है। भारत ने पाकिस्तान के जल संसाधन मंत्रालय को अपने संचार में इस प्रावधान का हवाला देते हुए निरंतर सीमा पार आतंकवाद को एक मौलिक बदलाव के रूप में उद्धृत किया है। इसने सुरक्षा अनिश्चितताओं को जन्म दिया है, जो उस आधार को कमजोर कर रहा है, जिस पर संधि संपन्न हुई थी। इस संदर्भ में, सिंधु जल संधि को स्थगित रखने को उल्लंघन के रूप में नहीं, बल्कि एक वैध प्रतिवाद के रूप में सही ढंग से व्याख्या की जा सकती है। अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत, प्रतिवाद एकतरफा, गैर-बलपूर्वक कार्रवाई है जो किसी अन्य राज्य द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कानून के उल्लंघन के जवाब में एक पीड़ित राज्य द्वारा की जाती है। उनका उद्देश्य गलत कार्य के लिए अनुपालन को प्रेरित करना या क्षतिपूर्ति सुनिश्चित करना है। प्रतिवादों को विशिष्ट परिस्थितियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। उन्हें आनुपातिक, प्रतिवर्ती और वैध आचरण को बहाल करने पर लक्षित होना चाहिए।

नदी के प्रवाह को बनाए रखते हुए प्रक्रियागत सहयोग को निलंबित करने की भारत की कार्रवाई इन मानदंडों का पालन करती प्रतीत होती है। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गलत कार्य के लिए एक मापी हुई अस्थायी प्रतिक्रिया है। इसे कानूनी संयम के ढांचे के भीतर किया गया है। इस प्रकार ''स्थगन'' एक वैध प्रतिवाद है, जो राज्य की जिम्मेदारी और आवश्यकता सिद्धांतों पर आधारित है, न कि भारत के संधि दायित्वों का खंडन। इस दृष्टि से भारत की कार्रवाई एक कानूनी ग्रे-जोन में है जिसे अंतरराष्ट्रीय कानून व्यवहार में स्वीकार करता है, भले ही संहिताबद्ध पाठ में न हो।

यह संधि व्यवस्थाओं को अस्थिर करने के लिए नहीं बल्कि उनकी व्यवहार्यता के लिए आधारभूत पूर्व शर्तों, यानी आपसी सद्भावना को फिर से पुष्ट करने के लिए कानूनी साधनों के उपयोग को दर्शाता है। कनाडा और अमेरिका के बीच एक स्थायी कोलंबिया नदी संधि है। इसमें कोई भी पक्ष दस साल के नोटिस के साथ वापस ले सकता है। सिंधु जल संधि का पाकिस्तान द्वारा गलत तरीके से उपयोग किया जाता रहा है। यह संधि लंबे समय से भारतीय विकास में देरी करने के लिए एक उपकरण के रूप में काम करती रही है। इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभु हितों के मद्देनजर इस पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। भारत ने यही किया है।

यात्रा

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ऐसा क्या है कि अटाकामा विलक्षण है?

'अ' से अटाकामा। हम चाहें तो ऐसा कह सकते हैं। कारण यह कि अटाकामा अनूठा है, अद्वितीय है। दुनिया में अटाकामा जैसा कुछ और नहीं। अटाकामा को जानने के लिये अटाकामा को जानना जरूरी है। कहाँ है यह अटाकामा? वह क्या वजहें हैं, जो अटाकामा को बरबस अलग पायदान पर खड़ी कर देती है? अटाकामा में ऐसा क्या है कि अटाकामा विलक्षण है? वे कौन से घटक हैं, जिन्होंने अटाकामा का दृश्यविधान रचा है?

अटाकामा पृथ्वी पर सबसे शुष्क गैरध्रुवीय रेगिस्तान है। यह मरुभूमि है। धरती पर एक महाद्वीप है दक्षिण अमेरिका जिसे हम लातिनी अमेरिका के तौर पर संबोधित करते हैं। इसी महाद्वीप में एक देश है चिली। महान कवि पाब्लोनेरूदा और गैब्रिएला मिस्त्राल का चिली। फुटबाल के लिए दीवानगी का चिली। वही चिली जो सालमन मछलियों और उम्दा वाइन के लिये मशहूर है। वही चिली, जहां जर्मनी के बाद ब्रेड की सर्वाधिक खपत है। वही चिली, जिसने बीती शती में सन 1970 की दहाई में तानाशाह पिनोशे की बदौलत दुनिया भर के अखबारों में सुर्खियां बटोरी थीं। वही चिली जहां तांबे और लिथियम के विशाल भंडार है और जिनपर बहु-राष्ट्रीय निगमों की गिद्धदृष्टि है, और जहाँ मानवाधिकार कार्यकर्ता पानी की लड़ाई लड़ रहे हैं। सन 1540 से सन 1818 तक स्पेन के उपनिवेश रहे चिली की तीन विशेषतायें हैं- पहाड़, रेगिस्तान और ग्लेशियर। इन तीनों का समुच्चय चिली को अलग पहचान और छटा देता है। इसी चिली के पश्चिम-उत्तर में स्थित अटाकामा दुनिया का सबसे सूखा रेगिस्तान है। उसकी एक और विशेषता है कि यह अंटार्कटिका के सबसे करीब है। बहरहाल, बात अटाकामा की तो अटाकामा एंडीज पर्वतमाला के पश्चिम में करीब 1600 किमी लंबी संकरी भूमि की पट्टी में फैला हुआ है। इस शुष्क मरूभूमि की प्रकृति का आभास इससे हो सकता है कि सन 1570 से सन 1971 यानि चार सौ वर्षों के अंतराल में यहाँ वर्षा नहीं हुई है। अटाकामा इतना शुष्क है कि छह हजार मीटर यानि लगभग 20 हजार फुट ऊंचे होकर भी कई पहाड़ पूरी तरह ग्लेशियरों या हिम-पर्तो से मुक्त हैं। केवल ओजोस डेल सलाडा, मोंटे, पिसिस और लुल्लाइलको जैसी चोटियां थोड़ी बहुत हिमाच्छादित हैं। डेसिएर्टो डे अटाकामा यानि अटाकामा के मरू में वर्षा का सालाना औसत 15 मिलीमीटर है। आप कह सकते हैं कि अटाकामा अनावृष्टि का उदाहरण है। करीब 20 करोड़ साल प्राचीन इस मरूथल को कैलीफोर्निया स्थित 'वैलीऑफ डेथ' से 50 गुना अधिक शुष्क बताया जाता है। इस मरू का कुल क्षेत्रफल 40600 वर्गमील अर्थात करीब 105000 वर्गकिमी है और उसका अधिकांश भाग नमक-बेसिनों (सलारेस यानि नमक के कछारों) रेत और बहते लावे से बना है। अटाकामा वासियों के लिये बारिश अजनबी है और एंटोफगास्ता, कलामा और कोपियापो जैसे शहरों के बाशिंदे बारिश के लुत्फ से वंचित है। जन 1991 में एंटोफगासता और तल्ताई समेत कुछ भागों में असामान्य वर्षा हुई थी, फलत- क्रमिक दलदल से 91 लोगों की जानें गयीं।

ऐसे ही सन 2012 में शीत में सान पेड्रो डि अटाकामा में बाढ़ की नौबत आ गयी थी। इसी तरह 25 मार्च, 2015 को अटाकामा के दक्षिणी भाग में भारी वर्षा हुई। नतीजे में कोपियापो, टियेरा अमारिला, चानारल और डियेगो डी अल्माग्रो में कीच प्रवाह ने सौ से अधिक जाने ले लीं। एडीज पर्वत के पश्चिम में पतली लंबी पट्टी पर फैला यह रेगिस्तान 41000 वर्गमील क्षेत्र समेटता है, जो एंडीज की बंजर निचली ढलानों में शामिल करने पर बढ़कर 49000 वर्गमील यानि 128000 वर्ग किमी हो जाता है।

अटाकामा में ईसा पूर्व 7000 से 1500 ईस्वी तक चिंचोरो सभ्यता फली-फूली। प्रशांत तटीय क्षेत्रों में बसी बस्तियों में आजीविका का प्रमुख साधन मत्स्याखेट था। आश्चर्यजनक तौर पर यहां ममी प्रथा मिस्र के पूर्व भी प्रचलित थी और मृत्यु उपरांत अनुष्ठानों का विशेष महत्व था। बहरहाल, तटीय नगरों का विकास स्पेनी औपनिवेशिक- काल में हुआ। इन पत्तनों से यहां निकाली गयी चांदी का प्रमुखतः निर्यात होता था। सान पेड्रो डि अटाकामा, जो एक कस्बे सरीखा है, में पहले चर्च का निर्माण स्पनियों के आधिपत्य के बाद सन 1577 में हुआ। यह इलाका तांबा, चांदी और शोरे से समृद्ध है और यही इसकी समृद्धि और चिली, बोलीविया और पेरू में संघर्ष का सबब रहा है। जर्मनी में संश्लेषित नाइट्रेट के आविष्कार के बाद चिली के साल्टपीटर या शोरे की अहमियत खत्म हो गयी और खदानें बंद करनी पड़ीं। आज भी इस मरू में लगभग 170 परित्यक्त खदानें हैं, जहां कभी शोरा निकाला और निर्यात किया जाता था। तांबे और चांदी के पश्चात लिथियम की बड़ी भंडार मिलने से यह रेगिस्तान बड़ी कंपनियों की निगाह में है और चिली की सरकार उन पर मेहरबान है।

अटाकामा की कुल आबादी की आधी से अधिक दो शहरों कोपियापो और वेलेनार में बसती है। सन 2017 की जनगणना के अनुसार अटाकामा की आबादी 286168 है, इसमें कोपियायो में 125983, वालेनार में 43750 काल्डेरा में 12776, चनारल में 12086, अल साल्वाडोर में 8697 और टिएरा अमेरिला में 8578 लोग रहते हैं। डिएगो डि अल्माग्रो की जनसंख्या सिर्फ 7951 है। सन 1832 में जुआन गोडॉम द्वारा चानार्सिल्लो में चांदी की खानो की खोज के बाद इलाके में आव्रजन में तेजी आई। तांबे और चांदी के अलावा यहां लोहे और सोने के भी भंडार है तथा इसकी ताजा कड़ी है कीमती लिथियम। जलवायु के कारण यहां फल जल्दी पक जाते हैं और अब ये फल निर्यात का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि चिली सेकेंड हैंड कपड़ों का सबसे बड़ा बाजार है और बड़ी तादाद में पुराने धुराने कपड़े अटाकामा में डंप किए जाते हैं। हालत यह है कि अटाकामा फास्ट फैशन की कब्रगाह कहलाती है। यह आज त्याज्य कपड़ों का डंपिंग ग्राउंड है। मुक्त शुल्क के कारण चिली में 44 मिलियन टन से अधिक कपड़े सालाना आते हैं और इनमें छंटे हुए कपड़ों के निर्यात के बाद शेष को अटाकामा में खपा दिया जाता है। ये वहां बरसों पड़े रहते हैं ओर सड़ांध उत्पन्न करते हैं। कभी कभी कपड़ों की इन ढेरियों में आग लगा दी जाती है, जिससे अटाकामा की हवा जहरीली होती है। अटाकामा में डंप किये गये कपड़ों के ऊँचे ढेर देखे जा सकते हैं। इन कपड़ों पर नामगिरामी कंपनियों के टैग लगे होते हैं। इनका वजन 10 हजार से 60 हजार टन तक कूता गया है।

अटाकामा के साथ एक और दिलचस्प संदर्भ नत्थी है। अटाकामा और मंगल ग्रह की परिस्थितियों में साम्य के चलते इसे मंगल अभियान सिमुलेशन के लिये प्रयोग स्थल के तौर पर प्रयुक्त किया जाता है। इसी साम्य के फलस्वरूप सन 2004 में टीवी श्रंखला स्पेस ओडिसी = वॉयेज टु द प्लैनेट्स की शूटिंग अटाकामा में हुई थी। अटाकामा का शुष्कतम क्षेत्र एंडीज और चिली कोस्ट के दरम्यां स्थित है, जहां प्रशांत या एटलांटिक से नमी का संवहन नहीं हो पाता है। विषम परिस्थितियों के बावजूद यहां वनस्पतियों की समृद्ध विविधता विकसित हुई है। इसकी परिधि में 500 से अधिक प्रजातियां हैं। इनमें जड़ी बूटियां और फूल शामिल है। इनमें लारेटा नामक काष्ठ प्रजाति प्रमुख है। कुछ लारेटा तो 3000 साल से भी अधिक पुराने है। निःसृत राल के कारण अंधाधुंध खनन ने इसे लुप्तप्राय की कोटि में ला दिया। यहां रेत के रंग के टिड्डे पाये जाते हैं। भृंग और उनके लार्वा स्थानीय मेनू का हिस्सा है। यहां लाल बिच्छू भी होते हैं और रेगिस्तानी ततैया और तितलियां और छिपकलियां भी, अलबत्ता यह तटीय क्षेत्र पेंग्विनों से आबाद है। लुप्त प्राय चिली वुड स्टार और अनुकूलित डार्विन का पत्ती कान वाला चूहा भी यहां पाया जाता है।

यहां फर सीलों और समुद्री शेरों को भी देखा जा सकता है। अटाकामा खगोलीय प्रेक्षण के लिए आदर्श स्थान है। साल में दो सौ से अधिक रातों के निरअ या बादल रहित होने से तारों के अध्ययन के लिये यह आदर्श है। इसी से, यहाँ दूरबीनों का अंबार नजर आता है। आप शायद यकीन न करें, लेकिन अटाकामा चिली के तीन अग्रणी पर्यटन आकर्षणों में एक है। अधिकांश सैलानी सान पेड्रो में ठहरते हैं। यहां की बहुरंगी चाक्षुष दृश्यावलि वाकई आकर्षक है। अटाकामा में होना एक अपूर्व व विलक्षण अनुभव से गुजरना है। यदि आप मून वैली, सुंदर लेगूनों और बैंगनी सूर्यास्त का एक संग आनंद लेना चाहते हैं, तो उसके लिये एक ही ठौर है अटाकामा। अटाकामा और सिर्फ अटाकामा।

निराधार नहीं है भारतीय समाज संगठन व्यवस्था

विचार

मुन्नालाल डाकोत

मानव के सामने सदैव से एक गंभीर और परस्परविरोधी हित रहे हैं, व्यक्ति हित और सामूहिक हित। इन दोनों के सुन्दर समायोजन से एक सुदृढ़ समाज व्यवस्था स्थापित होती है। विश्व इतिहास में कम ही देश हैं जिन्होंने अपने समाज में सुदृढ़ व्यवस्था स्थापित की। यह समाज व्यवस्था एक गतिमान संतुलन है। समय के साथ विकास अवश्यम्भावी है और यह विकास निश्चित रूप से प्रचलित संतुलन को प्रभावित करता है।

किसी भी समाज में सबसे महत्वपूर्ण वह वर्ग होता है जो चिंतनशील है। अपने समय से बहुत आगे तक जिसकी दृष्टि जाती है। समाज से वह जीवनयापन की नाम मात्र की सुविधाएं लेता है और चिंतनरत रह समाज सामंजस्य और संतुलन सुझाता है। सामान्यतः ये व्यक्ति समाज से अलग निवास करते रहे हैं। राजसत्ता अथवा आर्थिक दबाव में न आने से इनका चिंतन किसी भी ओर झुका हुआ नहीं होता। सिवा सर्वहित में समस्या समाधान के अतिरिक्त इनका कोई उद्देश्य नहीं होता। समाज इनका बहुत सम्मान करता है और राजसत्ता को भी इनके सुझावङ्कसमाधान मानने होते। उनकी प्रतिष्ठा उनके स्वानुशासन में थी।

प्राचीन साहित्य में इस वर्ग को ब्राह्मण कहागया है। ऋषि, मुनि, संत, आचार्य, गुरु, पुरोहित, तपस्वी, भिक्षु आदि इसी श्रेणी अंतर्गत माने जाते थे। व्यक्ति जब समूह में रहने लगे तो स्वाभाविकं है कि कार्य विभाजन भी करना अनिवार्य हो गया। बड़े समूहों में व्याप्त वृत्तियाँ लगभग समान होती है। चिंतक व त्यागी वर्ग, सुरक्षा के लिए उत्सुक जुझारू वर्ग, समस्त वर्गों की आवश्यकतापूर्ति कर सामंजस्य करने वाला वर्ग और जो इन तीनों वर्गो में नहीं आ पाता वह जन सेवी वर्ग।

भारतीय मनीषियों ने समाज संगठन के कुछ मूल सिद्धान्त स्थापित किए। उनमें सबसे प्रमुख रखा दायित्व का निर्वहन, अधिकार का त्याग। इसी मूल सिद्धान्त को अपनाकर धीरे धीरे जाति व्यवस्था को स्थापित किया। विश्व में मात्र यह व्यवस्था थी जिसमें 'व्यक्तिहित' और समूह हित इस प्रकार समन्वित थे कि इनकी टकराहट नहीं देखी गई। केंद्रीयकरण और विकेंद्रीकरण उस जाति के अन्दर ही संतुलित था। जाति के अन्दर ही विवाह, विवाद निस्तारण, दण्ड व्यवस्था आदि की पूर्ण स्वतंत्रता थी। राज्य सत्ता का कोई हस्तक्षेप नहीं था। जाति का कार्य विभाजन स्पष्ट था। वह अपने दायित्व का निर्वहन करती और उसके जीवनयापन और सुरक्षा अपने आप उसे मिल जाती। व्यक्ति का क्षमता आधारित काम का किया जाना इसी समूह के अंदर संभव हो जाता।

ये विचार जाति व्यवस्था की स्थापना अथवा वर्तमान में पुनः लागू करने के पक्ष में नहीं है। उद्देश्य है समाज के संगठन के समग्र चिंतन का। पश्चिमी समाज कभी भी इतने उन्नत स्तर तक संगठित, समयोजित नहीं रहा। इस कारण यदि उन्होनें भारत जैसे विचारशील देश में भी एक व्यवस्थित अव्यवस्था फैला दी तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

पश्चिमी देशों ने स्वतंत्रता की मनमानी व्याख्या की और अब रो रहे हैं। सबको शरण दो और अपने आपको शरणवत्सल समझो। शरणवत्सल अब आव्रजन पर प्रतिबंध लगा रहे है। दूसरों को पीड़ित करने वाली अपनी स्वतंत्रता भारत में मान्य नहीं है। यह कोई पिछड़ापन नहीं है ।गतिशील समाज के स्थायित्व की पहली प्राथमिकता है।

आज का समय बहुत अधिक विशृंखलताएं देख रहा है। व्यवस्था टूटना कोई बड़ी बात नहीं है पर विकल्प तैयार नहीं करना सामाजिक असफलता है। यदि सिर्फ टूटना ही बढ़ता रहा तो भविष्य का कुछ भी नहीं कहा जा सकता है।

लघुकथा

पद्माकर पागे

दरिद्रता

मां गीबाई आज अकेली ही काम पर चल दी थी। मांगी के पति ओंकार को कल से बुखार था,वह आज काम पर जाने की स्थिति में नहीं था। उसकी तो मजबूरी थी न जाती तो रात को खाने के लिए आटा,नून,तेल मिर्च की व्यवस्था कैसे होती। आज कुछ ठंड भी ज्यादा ही थी। शाम होते-होते सर्दी का प्रकोप बढ़ रहा था। वह मजदूरी के पैसे लेकर सामान लेकर अंधेरे के पहले डेरे पर पहुँच जाना चाहती थी।

ओंकार को अब भी बुखार था। उसे ओंकार की फिक्र थी। हालचाल पूछने के बाद मांगी खाना बनाने में व्यस्त हो गई थी। पति की अनिच्छा के बाद भी मांगी के कहने पर उसने पेट में कुछ डाल लिया था।सर्दी बढ़ती ही जा रही थी। करीब दस बजे दोनों लेट गए थे। ठंड थी कि बढ़ती ही जा रही थी। ओढ़ने और बिछाने के नाम पर पैबंद लगा एक कंबल दोनों के लिए था। उसमें यह बढ़ती सर्दी, दोनों कुड़कुड़ाते बतिया रहे थे।

भाग्य को कोसते ओंकार ने कहा दिनभर मेहनत और कष्ट फिर भी ओढने- बिछाने खाने-पीने सर छुपाने की किल्लत कैसी? ज़िंदगी क्या हम मेहनत मजदूरी नहीं करते? फिर क्यों ऐसी स्थिति? वह अपनी दरिद्रता को कोसे ही जा रहा था। हवा के एक ठंडे झोंके के साथ दोनों पास आ गए थे। मांगी ने पैबंद लगे कंबल को ठीक करते हुए ओंकार से कहा, देखो भाग्यवान तो हम है हमारे पास ओढने को यह कंबल भी है और टुटी-फूटी ये कुटिया भी। वहां देखो बाहर कितने लोग ऐसे ही पड़े है नीली छतरी के नीचे। बताओ वे किसे कोसेंगे? क्यों कोसते हो भाग्य को? ये अपने मालिक लोग है न,सब कुछ होने के बाद भी हमेशा रोते ही रहते हैं और खीज उतारते है हम पर हमारी मजदूरी रोक कर। तुम इन्हें भाग्यवान कहते हो क्या?

संक्षिप्त समाचार

श्रीमद् भागवत कथा में शामिल हुए राजस्व मंत्री श्री वर्मा

सीहोर (निप्र)। राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा सीहोर तहसील के ग्राम पिपलिया मीरा में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा एवं प्राण प्रतिष्ठा में शामिल हुए। इसके साथ ही वे ग्राम लसुड़िया खास में आयोजित दुर्गा यज्ञ एवं श्रीमद् भागवत कथा में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि धर्म हमे सदमार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि धर्म के मार्ग पर चलकर मानव सेवा और दीन दुखियों की सेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि जीवन में व्यक्ति को हमेशा बगैर किसी लालच और बिना किसी ईर्ष्या के अपने कर्म को निर्विकार भाव से करना चाहिए।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत ग्राम बारंगी, बारंगा मे कार्यक्रम सम्पन्न

हरदा (निप्र)। विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत ग्राम बारंगी व बारंगा मे गुरूवार को कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल के वैज्ञानिक डॉ. रमेश कुमार साहनी ने कृषि के क्षेत्र में मशीनों का उपयोग एवं महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने ड्रोन के कृषि में विभिन्न उपयोग जैसे दवाओं का छिड़काव, उर्वरक का छिड़काव, पैदावार का अनुमान, फसलों में बीमारी का अनुमान आदि के बारे में किसानों को जानकारी दी। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र हरदा के वैज्ञानिक डॉ मुकेश कुमार बंकोलिया ने किसानों को आगामी खरीफ फसल उत्पादन तकनीक,मिट्टी परीक्षण, प्राकृतिक खेती, पौध संरक्षण इत्यादि की जानकारी दी। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री टी. आर. चौहान व उद्यानिकी विभाग के अधिकारी श्री गम्भीर जाट ने विभागीय योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

जिले में विकसित कृषि संकल्प अभियान का किया शुभारंभ

बैतूल (निप्र)। 29 मई 2025 से 12 जून 2025 तक प्रदेश में विकसित कृषि संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। जिले में गुरुवार को मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री दुर्गादास उइके, विशिष्ट अतिथि मप्र जनअभियान परिषद उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने कृषि विज्ञान केन्द्र बैतूल बाजार से हरी झंडी दिखाकर अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने कृषकों से प्राकृतिक खेती को अपनाकर रसायनों का न्यूनतम प्रयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने कृषि आदानों पर बाजार की निर्भरता में कमी लाने की समझाइश कृषकों तक पहुंचाने की बात कहीं मप्र जनअभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर ने आधुनिक खेती के साथ-साथ परम्परागत खेती से जुड़े हुए विधाओं को अंगीकृत कर कृषि उत्पादन में मोटे अनाज को सम्मिलित करने तथा अधिक से अधिक बढ़ावा देने की बात कही। उप संचालक कृषि बैतूल श्री आनंद बड़ोनिया ने कार्यक्रम की रूपरेखा तथा शासन की विभिन्न योजनाओं को इस कार्यकम के माध्यम से किसानों के मध्य ले जाने की बात कहीं। कृषि विज्ञान केन्द्र बैतूल के केन्द्र प्रमुख डॉ. व्हीके वर्मा के नेतृत्व में उक्त संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों के पांच दलों द्वारा जिले के समस्त 10 विकासखंड के गांवों में 225 सघन प्रशिक्षण कार्यकम अगले 15 दिनों में आयोजित किए जाएंगे। जिसमें आगामी खरीफ फसलों के बेहतर उत्पादन संबंधी तकनीकी सलाह कृषकों तक फसलों की बुवाई के पूर्व दी जाएगी। ताकि लागत में कमी तथा संभावित होने वाली हानि से बचाव हो सके। वहीं केन्द्र के सभी वैज्ञानिक एवं कृषि विभाग के अधिकारी एवं मैदानी अमले नवीनतम तकनीकी , विभिन्न विभाग की योजनाओं की जानकारी गांव-गांव जाकर कृषकों के साथ साझा करेंगे। इस अवसर पर श्री सुधाकर पंवार, नगर परिषद अध्यक्षा श्रीमती दुर्गावती वर्मा, श्री सुनील पंवार, श्री जितेन्द्र वर्मा ने अभियान को सफल बनाने के लिए आह्वान किया।

कलेक्टर श्री जैन ने "चौपाल" में ग्रामीणों की समस्याओं का किया निराकरण

पंचायत सचिव का 15 दिन का वेतन काटने व सफाई कर्मी को हटाने के दिये निर्देश

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ग्रामीणों की समस्याओं का निराकरण गांव में ही चौपाल लगाकर कर रहे हैं। इसी क्रम में शुक्रवार को झाड़पा, बालागांव व मगरधा की ग्राम चौपाल में उन्होने ग्रामीणों की समस्याएं सुनी और उनके निराकरण के लिये उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिये। ग्राम चौपाल में ग्रामीणों को सरकार की योजनाओं के बारे में उपस्थित अधिकारियों ने बताया और उनसे योजनाओं का लाभ लेने की अपील की।

इस अवसर पर जिला पंचायत की सीईओ श्रीमती सविता झानिया व एसडीएम हरदा श्री कुमार शानु देवड़िया सहित विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी भी मौजूद थे। कलेक्टर श्री जैन ने चौपाल में गांव में संचालित योजनाओं की प्रगति के संबंध में अधिकारियों से पूछताछ की। ग्रामीणों की शिकायत पर कलेक्टर श्री जैन ने ग्राम बालागांव के पंचायत सचिव का 15 दिवस का वेतन काटने के निर्देश जनपद हरदा के सीईओ को दिये। इस दौरान बालागांव के ग्रामीणों ने गांव की नालियों की साफ-सफाई न होने की शिकायत की, जिस पर उन्होने पंचायत सचिव को साफ-सफाई कराने के निर्देश दिये। उन्होने बालागांव के बहुत से ग्रामीणों की शिकायत पर

गांव के सफाईकर्मी को आज ही पद से हटाकर किसी अन्य को गांव की साफ सफाई का कार्य सौंपने के निर्देश पंचायत सचिव को दिये।

नामांतरण, सीमांकन, बंटवारा निर्धारित समय सीमा में न किया तो लगेगा अर्थदण्ड : बालागांव के ग्रामीणों ने ग्राम चौपाल में जाति प्रमाण-पत्र बनाने तथा नामांतरण व सीमांकन के संबंध में भी कलेक्टर श्री जैन को आवेदन दिया, जिस पर उन्होने पटवारी, राजस्व निरीक्षक व राजस्व विभाग के अन्य अधिकारियों को निर्देश दिये कि लोक सेवा ग्यारंटी अधिनियम के तहत निर्धारित समय सीमा में राजस्व विभाग संबंधी आवेदनों का निराकरण किया जाए। इस कार्य में लापरवाही बरतने पर अर्थदण्ड की कार्यवाही की जाएगी। ग्रामीणों ने बालागांव में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा जल जीवन मिशन के तहत निर्माणाधीन पेयजल योजना के तहत पाइप लाइन बिछाने के लिये सड़कें खोदने की शिकायत की, जिस पर कलेक्टर श्री जैन ने पाइप लाइन बिछाने के बाद सड़कों की रिपेयरिंग अनिवार्य रूप से कराने के निर्देश दिये। उन्होने कहा कि रोड़ रिपेयरिंग कार्य में लापरवाही बरतने वाले ठेकेदारों पर अर्थदण्ड लगाने की कार्यवाही की जाए। बालागांव के सचिव ने बताया कि गांव में 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी 122 वृद्धजनों के आयुष्मान कार्ड बना दिये गये है। कलेक्टर श्री जैन ने चौपाल में क्षय रोग से पीड़ित श्रीमती किरण को पोषण आहार युक्त फूड बास्केट प्रदान की।

उद्यानिकी, कृषि, पशुपालन व स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं के बारे में ग्रामीणों को बताया : ग्राम झाड़पा की चौपाल में उप संचालक पशु चिकित्सा डॉ. एस.के. त्रिपाठी ने पशु पालकों के लिये क्रेडिट कार्ड सुविधा तथा बकरी पालन व पशु पालन के लिये संचालित योजनाओं के बारे में स्थानीय ग्रामीणों को जानकारी दी।

उप संचालक कृषि श्री जे.एल. कास्दे ने ग्रामीणों से जैविक व प्राकृतिक खेती अपनाकर फसल की लागत कम करने की सलाह दी। उन्होने ग्रामीणों को नरवाई जलाने के स्थान पर हेपी सीडर व सुपर सीडर का उपयोग करने के लिये कहा। उन्होने कहा कि उन्नत कृषि यंत्र खरीदने के लिये सरकार किसानों को अनुदान भी देती है, जिसके लिये पोर्टल के माध्यम से अभी आवेदन लिये जा रहे है। इच्छुक किसान एमपी ऑनलाइन कियोस्क के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। कलेक्टर श्री जैन ने उपस्थित किसानों से उन्नत कृषि यंत्र अनुदान पर लेने के लिये आवेदन करने की अपील की।

5 रूपये में ले सकते है घरेलू विद्युत कनेक्शन

ग्राम मगरधा में आयोजित चौपाल में कलेक्टर श्री जैन ने विद्युत वितरण कम्पनी के अधिकारियों को निर्देश दिये कि जो किसान विद्युत कनेक्शन लेना चाहते है, उन्हें तत्काल कनेक्शन दिया जाए। विद्युत वितरण कम्पनी के डी.ई. ने बताया कि इन दिनों ग्रामीण क्षेत्र में घरेलू विद्युत कनेक्शन के लिये मात्र 5 रूपये शुल्क लिया जा रहा है। कलेक्टर श्री जैन ने सभी ग्रामवासियों को इस योजना का लाभ उठाने की अपील की। उद्यानिकी विभाग के सहायक संचालक श्री विजय सिंह ने इस अवसर पर ग्रामीणों को विभागीय योजनाओं के बारे में बताया और किसानों से योजनाओं का लाभ लेने की अपील की।

निराश्रित व अनाथ बच्चों के आधार कार्ड बनाने हेतु चलेगा अभियान

हरदा (निप्र)। म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार ''साथी अभियान'' के तहत जिला स्तरीय ''साथी'' कमेटी का गठन किया गया है। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिक श्री चन्द्रशेखर राठौर ने बताया कि समान न्याय प्राप्त करने के लिए निराश्रित बच्चों को कानूनी पहचान और सामाजिक कल्याण तक पहुंच को सुगम बनाने के लिए साथी अभियान की शुरूआत की गई है। यह अभियान 15 अगस्त तक चलेगा। उन्होने बताया कि 18 वर्ष से कम आयु के ऐसे बच्चे जिनके पास परिवार का समर्थन, संरक्षकता या आश्रय नहीं है, जैसे सड़कों, झुग्गी झोपड़ियों या रेलवे स्टेशनों पर रहने वाले बच्चे, बाल देखरेख संस्थानों में रहने वाले अथवा अनाथ, परित्यक्त या तस्करी, भीख मांगने वाले, बाल श्रम से मुक्त कराये गए बच्चे तथा अपंजीकृत बाल गृहों में रहने वाले बच्चे इन सभी की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, पैरालीगल वॉलेंटियर्स आदि द्वारा सर्वे के माध्यम से पहचान की जावेगी। अभियान के तहत जिला विधिक सेवा प्राधिकरण और महिला एवं बाल विकास विभाग के द्वारा परियोजना अधिकारी, पर्यवेक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, पैनल अधिवक्तागण तथा पैरालीगल वॉलेंटियर्स की टीम गठित की गई है। श्री राठौर ने बताया कि गठित टीम द्वारा 26 जून तक बच्चों को चिन्हित करने की कार्यवाही की जा रही है। इसके बाद आधार रजिस्ट्रेशन कैंप आयोजित कर इन बच्चों का आधार पंजीयन कराया जाएगा। इस अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए गठित कमेटी में सभी तहसीलदार, जिला शिक्षा अधिकारी, सिविल सर्जन, जिला बाल संरक्षण अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, पैनल अधिवक्तागण, पैरालीगल वॉलेंटियर्स, ज्युवेनाईल यूनिट के पुलिस अधिकारी शामिल है।

आंगनवाड़ी केन्द्रों में विधिक साक्षरता शिविर सम्पन्न

हरदा (निप्र)। प्रधान जिला न्यायाधीश श्रीमती तृप्ति शर्मा के निर्देशन में गुरूवार को वार्ड नंबर 21 के आंगनवाडी केन्द्र क्रमांक 41, वार्ड नंबर 22 के आंगनवाडी केन्द्र क्रमांक 42 एवं वार्ड नम्बर 23 आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक 45 में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। शिविर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री चंद्रशेखर राठौर ने उपस्थित महिलाओं को तस्करी और वाणिज्यिक यौन शोषण पीड़ितों के लिए विधिक सेवा योजना के बारे में जानकारी दी। उन्होने बताया कि ऐसी पीड़ित महिलाएं जो तस्करी या यौन शोषण की शिकार पाई जाती हैं, उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं चलायी जा रही है। उन्होने बताया कि महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों की रोकथाम के लिए सरकार की ओर वन स्टॉप सेंटर की शुरूआत की गई है, जिसमें महिलाओं को कानूनी सलाह, पुलिस, मेडिकल चेकअप करवाने एवं आवास की सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है।

तुलावटों व हम्मालों के लिए शिविर का आयोजन हुआ

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशानुसार कृषि उपज मंडी के हमालो व तुलावटों को शासन की पात्रता योजनाओं का लाभ अविलंब मिले इसके लिए विशेष शिवरों के माध्यम से ई श्रम कार्ड , संबल कार्ड, आयुष्मान कार्ड बनाने का कार्य आज विदिशा की पुरानी कृषि उपज मंडी प्रांगण में आयोजित किया गया था। कृषि उपज मंडी की सचिव श्रीमती नील कमल वैघ ने बताया कि मंडी के साथ साथ जिला चिकित्सालय एवं आईसीएमआरए टीम द्वारा हम्माल एवं तुलावटों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। उपरोक्त कैंप में श्रम विभाग के सहयोग से संबल एवं ई-श्रम कार्ड के 65 पंजीयन किये गये। टीम द्वारा कुल 81 एक्सरे किये गये। स्वास्थ्य विभाग द्वारा कुल 107 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किये गये जिसमें बीपी के 15 मरीब एवं शुगर के एक मरीज पाये गये। उपरोक्त कैंप का आयोजन भारसाधक पदाधिकारी व डिप्टी कलेक्टर श्री संतोष बिटौलिया, मंडी सचिव नीलकमल वैध तथा तहसीलदार डॉ अमित सिंह के मार्गदर्शन में किया गया।

देवतलाब एवं बैडी के कुल 5 मतदान केन्द्रो पर मॉक पोल संपन्न हुआ

हरदा (निप्र)। पंचायत उप निर्वाचन 2025 के लिए पेपर लेस बूथ का आयोजन ग्राम पंचायत देवतलाब के 2 मतदान केन्द्र एवं बैडी के 3 मतदान केन्द्रो पर शुक्रवार को मॉकपोल का आयोजन किया गया। जिसमे श्री मनोज मालवीय, उप सचिव म0प्र0राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा सभी मतदान केन्द्रा में मॉकपोल का निरीक्षण किया गया । इस दौरान श्रीमती नम्रता सोनी, प्रोग्रामर म0प्र0राज्य निर्वाचन आयोग भोपाल, श्री संजीव कुमार नागु संयुक्त कलेक्टर, श्री अशीष मिश्रा नायब तहसीलदार हंडिया भी उपस्थित रहे ।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने महिला थाना विदिशा एवं थाना करारिया में दर्ज प्रकरण के फरार आरोपियों की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए क्रमशः पांच-पांच हजार रूपए नगद इनाम देने की घोषणा की है। महिला थाना विदिशा में दर्ज अपराध क्रमांक 01/2025 के फरार आरोपी सुदीप पुत्र विमल कुमार बडजात्या निवासी जैन मंदिर के पास, रमना रोड़ गया (बिहार) एवं अपराध क्रमांक 265/2024 के फरार आरोपी संजीव पुत्र सुरेश वाल्मिकी निवासी ग्राम धोबीखेडा थाना शमशाबाद जिला विदिशा की सूचना देने, गिरफ्तारी में मदद करने वाले के लिए पांच-पांच हजार रूपए का इनाम घोषित किया गया है सूचना देने वाला व्यक्ति चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

एसएसजी से आर्थिक सशक्तिकरण की मिसाल बनीं पलक आजीविका समूह की महिलाएं

डेयरी, पशुपालन और कृषि व्यवसाय से हो रही लाखों की आमदनी

बैतूल (निप्र)। बैतूल मुख्यालय के ग्राम राठीपुर की पलक आजीविका स्व सहायता समूह की महिलाओं ने अपने संघर्ष और मेहनत से यह सिद्ध कर दिखाया है कि संगठित प्रयास और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग कर ग्रामीण महिलाएं भी आत्मनिर्भर बन सकती हैं। पलक आजीविका स्व सहायता समूह की सचिव श्रीमती दुर्गा पवार ने बताया कि अपने समूह के माध्यम से डेयरी और कृषि व्यवसाय को अपनाकर एक मिसाल कायम की है। श्रीमती पवार ने बताया कि वर्ष 2017 में उन्होंने अपने समूह के माध्यम से डेयरी व्यवसाय और कृषि कार्य की शुरुआत की। प्रारंभ में उन्हें कृषि के आधुनिक तकनीकी तौर-तरीकों का प्रशिक्षण अधिकारियों द्वारा प्रदान किया गया। इसके बाद उन्होंने टमाटर, भिंडी, बरबटी, पालक, धनिया जैसी सब्जियों के साथ-साथ गन्ने की खेती शुरू की।

उन्होंने बताया कि वे जैविक खेती के माध्यम से ही सब्जी उत्पादन कर रही है। इन प्रयासों से उन्हें आज लाखों की आमदनी हो रही है। श्रीमती दुर्गा पवार ने बताया कि उन्हें स्व सहायता समूह एसएसजी के माध्यम से 5 लाख का लोन प्राप्त हुआ, जिससे उन्होंने गाय और भैंस खरीदी और समूह की महिलाओं के साथ डेयरी व्यवसाय की नींव रखी। आज दुग्ध सहकारी समिति मर्यादित खेड़ला के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं और इस डेयरी व्यवसाय से समूह को लगभग 3 लाख की वार्षिक आय हो रही है। इस समूह की महिलाएं हर माह 10 हजार तक की आमदनी प्राप्त कर रही हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में अभूतपूर्व सुधार हुआ है।

सशक्त महिलाओं की टोली : पलक आजीविका स्व सहायता समूह में अध्यक्ष अनीता पवार, सचिव दुर्गा पवार के साथ-साथ सदस्य उर्मिला पवार, नीलिमा, गीता, हेमलता, कमलती, पूजा, एकता, सुभद्रा, सविता, बाली, ज्योति, और सोनाली पवार शामिल हैं। सभी सदस्य आज आर्थिक रूप से सशक्त होकर आत्मनिर्भर बन चुकी हैं। इस उपलब्धि के लिए समूह महिलाओं ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रति आभार व्यक्त किया है। महिलाओं का कहना है कि शासन द्वारा चलाई जा रही आजीविका मिशन योजना और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से उन्हें जीवन में नई दिशा मिली है।

जब एक महिला आगे बढ़ती है, तो उसके साथ पूरा समाज भी आगे बढ़ता है

महिलाओं के लिए प्रेरणा है श्रीमती फूलवती शर्मा के संघर्ष की कहानी

सीहोर (निप्र)। यदि महिलाओं को प्रोत्साहन और अवसर दिया जाए तो वे निश्चित ही कुछ बड़ा करके दिखा सकती हैं। इस बात को सिद्ध कर दिखाया है सीहोर जिले के छोटे से गांव जामनी की रहने वाली श्रीमती फूलवती शर्मा ने। श्रीमती फूलवती शर्मा जो पहले एक कॉल सेंटर में काम करती थीं। घर की आर्थिक जिम्मेदारियों को निभाने में उन्होंने अपने पति का साथ दिया और कठिनाइयों से घबराए बिना परिवार को सहारा दिया। लेकिन उनके भीतर कुछ बड़ा करने का सपना था, कुछऐसा जो उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज में सम्मान भी दिलाए। श्रीमती फूलवती शर्मा ने अपने इसी सपने को साकार करने के लिए वर्ष 2023 में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) के अंतर्गत 10 लाख रुपए का लोन प्राप्त किया। इस राशि का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने पति के सहयोग से ÷मयूर इंजीनियरिंग इंडस्ट्री÷ नामक कृषि यंत्र निर्माण का कारखाना प्रारंभ किया। श्रीमती फूलवती शर्मा आज इस इंडस्ट्री की प्रोपराइटर हैं।

श्रीमती फूलवती की इस इंडस्ट्री में आज रोटावेटर, कल्टीवेटर, बोनी मशीन, बक्कर, प्लाउ और ट्रॉली जैसे आधुनिक कृषि यंत्र तैयार किए जाते हैं। उन्होंने अपने इस कारखाने में कृषि यंत्रों के निर्माण के साथ ही चार से पांच व्यक्तियों को रोजगार भी प्रदान किया है, जो उनके नेतृत्व और उद्यमिता की पहचान है। श्रीमती फूलवती की मासिक बचत अब 20 हजार रुपये से अधिक है, और सबसे बड़ी बात यह है कि वे आज पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं। उनकी यह यात्रा संघर्ष से सफलता तक की एक मिसाल है, जो यह सिद्ध करती है कि यदि महिलाओं को अवसर दिया जाए, तो वे केवल अपने जीवन को ही नहीं बल्कि पूरे समाज को आगे ले जा सकती हैं। श्रीमती फूलवती शर्मा की कहानी हमें यह सिखाती है कि सशक्त महिला केवल परिवार ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की भी शक्ति होती है। उनका साहस, दूरदर्शिता और मेहनत हर उस महिला के लिए प्रेरणा है, जो खुद को सीमित समझती है। महिला सशक्तिकरण की यह कहानी हमें बताती है कि जब एक महिला आगे बढ़ती है, तो उसके साथ पूरा समाज भी आगे बढ़ता है।

विकसित कृषि संकल्प अभियान ' के तहत खमलाय व सारंगपुर में कार्यक्रम सम्पन्न

हरदा (निप्र)। विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत शुक्रवार को विकासखंड खिरकिया के ग्राम खमलाय और सारंगपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल के वैज्ञानिक डॉ. रमेश कुमार सहनी ने उन्नत मशीनों और तकनीकी का कृषि में उपयोग एवं महत्व के बारे में बताया। उन्होंने ड्रोन के कृषि में विभिन्न उपयोग जैसे दवाओं का छिड़काव, उर्वरक का छिड़काव, पैदावार का अनुमान, बीमारी का अनुमान आदि के बारे में किसानों को जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र, हरदा के वैज्ञानिक डॉ मुकेश कुमार बंकोलिया ने किसानों को मिट्टी परीक्षण, प्राकृतिक खेती व पौध संरक्षण के संबंध में जानकारी दी। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री टी. आर. चौहान ने विभागीय योजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में उद्यानिकी अधिकारी श्री गम्भीर जाट ने प्रधानमंत्री लघु सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के बारे में विस्तार से बताया तथा पशुपालन विभाग की अधिकारी श्रीमती वर्षा शर्मा ने पशुपालक क्रेडिट कार्ड और डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के बारे में बताया।

खान नदी पर जब बनेगा पक्का बांध, तब ही शिप्रा होगी शुद्ध

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने

और एक बार फिर त्रिवेणी पर खान नदी पर बनाया गया कच्चा बांध टूट गया। यह पहली बार नहीं हुआ है। पहले भी कई बार हो चुका है। और जब-जब ऐसा हुआ, तब-तब खान नदी का गंदा और प्रदूषित जल पतित पावन शिप्रा नदी में तेजी से मिलता रहा है और उसे भी प्रदूषित करता रहा है। इस बार भी यही हुआ। हाल ही में 29 मई को खान नदी पर त्रिवेणी में बनाया गया कच्चा बांध टूट गया और तेजी से इसका गंदा पानी शिप्रा में मिलता रहा और उसे प्रदूषित कर गया। श्रद्धालु मन मारकर इस गंदे और प्रदूषित पानी में स्नान करने के लिए मजबूर है। उल्लेखनीय है कि 5 जून को गंगा दशमी का त्यौहार आ रहा है। इस दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु शिप्रा नदी में स्नान के लिए आयेंगे।

खान नदी के दूषित और प्रदूषित जल को शिप्रा में मिलने से रोकने के लिए सिंहस्थ 2016 में 90 करोड़ की लागत से खान डायवर्जन योजना बनाई गई जो अगले साल ही असफल सिद्ध हो गई। पूरे पैसे पानी में बह गए। जल संसाधन विभाग ने यह योजना क्रियान्वित की थी। उस विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों का कुछ नहीं हुआ। और जब इस बार फिर त्रिवेणी पर खान नदी में बना कच्चा बांध टूट गया और उसका गंदा पानी शिप्रा को प्रदूषित कर गया तब भी यह तय है कि अधिकारियों का कुछ नहीं होगा!

त्रिवेणी पर खान नदी में बनाए जा रहे कच्चे बांध बनाने का लंबा इतिहास है। करीब दो दशकों से खान नदी में त्रिवेणी पर हर साल 15 से 20 लाख रूपए की लागत से कच्चा बांध बनता आया है। और हर बार बारिश के पहले ही खान नदी में मावठे का पानी आने से और बहाव तेज होने पर कच्चा बांध टूट जाता है और शिप्रा को वह प्रदूषित कर देता है। आपको करीब 6 साल पहले की महत्वपूर्ण घटना बता रहे हैं। उस समय 6 जनवरी 2019 को शनिश्चरी अमावस्या आई थी। जिला प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं के स्नान की कोई व्यवस्था नहीं की थी। श्रद्धालुओं को गंदे और मटमैले

पानी में स्नान करने के लिए बाध्य होना पड़ा था। मीडिया में भी इसकी आलोचना की गई थी। उस समय कुछ दिन ही हुए थे कि श्री कमलनाथ ने मुख्यमंत्री का पदभार संभाला था। तब मुख्यमंत्री ने तत्काल उज्जैन के तत्कालीन संभागायुक्त श्री एम बी ओझा और तत्कालीन कलेक्टर श्री मनीष सिंह को हटाकर वाहवाही लूटी थी।

मुख्यमंत्री ने इसके साथ ही इस घटना की जाँच के लिए अपने मुख्य सचिव श्री एस आर मोहन्ती को उज्जैन भेजा था। उन्होंने जाँच कर जल संसाधन विभाग के अधिकारियों के विरूद्ध कार्रवाही की थी। इसके साथ ही उन्होंने त्रिवेणी संगम के पहले खान नदी पर हर साल बनाए जाने वाले कच्चे बांध की जगह पक्का बांध बनाने के निर्देश दिए थे। वे निर्देश आज भी ठंडे बस्ते में पड़े हैं। श्री कमलनाथ चले गए। श्री शिवराज सिंह चौहान आए। वे भी चले गए। अब एक साल पहले डॉ. मोहन यादव मुख्यमंत्री बने हैं। किन्तु हर साल कच्चा बांध ही बनता आ रहा है। अभी तक पक्का बांध नहीं बना। क्यों नहीं बना? इसका उत्तर सब जानते हैं। कच्चे बांध में हर साल भ्रष्टाचार की काफी गुंजाईश रहती है, वह पक्के बांध में नहीं रहती है। शायद इसीलिए अब तक खान नदी पर पक्का बांध नहीं बना। और हर साल वही होता है, जो हाल ही में हुआ। शायद आगे भी ऐसा ही होता रहेगा, जब तक की पक्का बांध नहीं बन जाता।

अब एक बार फिर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से करीब 600 करोड़ रूपयों की खान डायवर्जन क्लोज डक्ट योजना के जरिए खान नदी के दूषित पानी का उपचार कर उसका साफ पानी गंभीर डाउन स्ट्रीम में छोड़ा जायेगा। सिलारखेड़ी-सेवरखेड़ी बेराज से शिप्रा में पानी की आपूर्ति होती रहेगी। इससे शिप्रा प्रवाहमान बनी रहेगी। इसके साथ ही हरियाखेड़ी परियोजना त्रिवेणी की अपस्ट्रीम में होने के कारण यहाँ से शिप्रा को शुद्ध पानी मिलेगा। इससे उज्जैन को निरंतर पीने का पानी सप्लाय किया जायेगा।

खान डायवर्जन क्लोज डक्ट परियोजना, सेवरखेड़ी-सेलारखेड़ी मध्यम परियोजना और हरियाखेड़ी परियोजना का कार्य पूर्ण होने पर सभी एकीकृत रूप से कार्य करेंगे। इसमें खास बात यह है कि यह एकीकृत परियोजना की कार्ययोजना 2055 तक की जनसंख्या को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इससे शिप्रा में स्नान के लिए स्वच्छ जल मिल सकेगा और उज्जैन को वर्षभर पेयजल भी प्रदाय हो सकेगा। इससे एक आस बनी है। प्रदेश के मुखिया मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ऊर्जावान मुख्यमंत्री है। उन्होंने पूर्व में बनी और स्वीकृत हो चुकी खान डायवर्जन क्लोज डक्ट परियोजना में आवश्यक संशोधन कर अब यह तय कर दिया है कि खान नदी का प्रदूषित जल वापस शिप्रा नदी में नहीं मिलेगा। इसलिए यह योजना आज महत्वपूर्ण हो गई है। पूर्व में सिंहस्थ 2016 के समय 90 करोड़ से बनी खान डायवर्जन योजना में खान नदी का गंदा पानी 19 किलोमीटर दूर वापस कालियादेह के पास ही शिप्रा नदी में मिलता था, यह उस योजना की सबसे बड़ी कमी थी।

त्रिवेणी पर हर साल खान नदी पर बनने वाले कच्चे बांध की जगह अब पक्का बांध बनाया जाना जरूरी हो गया है। मुख्यमंत्री को चाहिए कि वे अब खान नदी पर कच्चे बांध की जगह पक्का और पर्याप्त ऊँचा बांध बनाने के निर्देश अधिकारियों को दें, ताकि फिर कभी खान नदी का गंदा पानी शिप्रा नदी में मिलकर उसे गंदा और प्रदूषित नहीं कर सके। इसके साथ ही शिप्रा नदी में उज्जैन के गंदे नालों को मिलने से रोकने के लिए भी ठोस प्रयास करें। यदि ऐसा होगा तो यह श्रद्धालुओं के लिए सबसे बड़ी सौगात होगी।

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर का जन्मदिन प्रकृति वात्सल्य गौशाला धार में , सेवाभाव से मनाया गया

धार। केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर जी का जन्मदिन प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार में गरिमामयी समारोह और सेवाभाव से मनाया गया। इस पावन अवसर पर क्षेत्र के अनेक गणमान्य अतिथियों एवं जनप्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से धार जिला भाजपा अध्यक्ष निलेश भारती,जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार मेड़ा ,पूर्व भाजपा अध्यक्ष मनोज सोमानी ,नगर पालिका धार की पूर्व अध्यक्ष ममता जोशी, प्रकृति वात्सल्य गौशाला अध्यक्ष धर्मेन्द्र जोशी ,गौशाला सचिव सुश्री विजया शर्मा ,उपाध्यक्ष डॉ. तरुण जोशी, सह सचिव सतीश पाल, समाजसेवी नवीन गर्ग , वरिष्ठ पत्रकार डॉ. अशोक शास्त्री, समाजसेवी संतोष पुरोहित,वरिष्ठ पत्रकार पं. छोटू शास्त्री,वरिष्ठ पत्रकार ज्ञानेंद्र त्रिपाठी, सर्व ब्राह्मण समाज अध्यक्ष विश्वास पांडे, जिला भाजपा मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, रमेश पाटीदार, श्री मोहन राठौड़, श्री अजय जोशी , देवेंद्र रावल, विपिन मारू , हरीश आर्य, अवध द्विवेदी , पवन अग्रावत , रीमा राठौड़ सहित प्रकृति वात्सल्य गौशाला के पदाधिकारी उपस्थित थे।

सभी ने मंत्री सावित्री ठाकुर को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं और उनके सेवा भावना से ओतप्रोत सार्वजनिक जीवन की सराहना की। जन्म

दिन शुभकामनाओं से अभिभूत मंत्री सावित्री ठाकुर ने गौशाला को हरसंभव मदद करने का आश्वासन दिया।

समारोह का समापन गौमाताओं की आरती, प्रसाद वितरण और सामूहिक गौसेवा संकल्प के साथ हुआ। पूरा आयोजन श्रद्धा, सेवा और समर्पण का जीवंत उदाहरण बना। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार राजेश शर्मा ने किया।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के पांचवें दिन आज बिहार के पटना पहुंचेंगे

ओडिशा, जम्मू, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश के बाद अब बिहार में किसानों से करेंगे संवाद

नईदिल्ली। सरकार के ऐतिहासिक कदम के तहत 29 मई से शुरू हुआ 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' तेजी से अपने लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहा है। अब-तक लाखों किसानों तक इस कार्यक्रम का लाभ पहुंच चुका है। इसी कड़ी में कल पांचवें दिन केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान बिहार में किसानों से संवाद करेंगे।

केंद्रीय कृषि मंत्री कल पूर्वी चम्पारण, पीपराकोठी के कृषि विज्ञान केंद्र में वैज्ञानिकों की टीम के साथ किसानों से चर्चा करेंगे। जिसके लिए बिहार के किसान काफी उत्साहित हैं और आशान्वित है कि इस अभियान के जरिए उनकी कृषि संबंधी व्यावहारिक समस्याओं को समझने के लिए जमीनी स्तर पर प्रयास किए जा रहे प्रयास कारगर सिद्ध होंगे।

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' 29 मई से शुरू हुआ था जो 12 जून तक चलेगा। इस 15 दिवसीय कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान 20 राज्यों का दौरा करेंगे। एक राष्ट्र-एक कृषि- एक टीम के मंत्र के साथ कृषि मंत्रालय और भारतीय अनुसंधान परिषद् की यह अनूठी पहल किसानों के बीच व्यापक रूप से चर्चा का केंद्र बनी हुई है। प्रतिदिन लाखों किसान वैज्ञानिकों से सार्थक संवाद कर रहे हैं।

न्यायालयीन निर्णय पेंशनरों के पक्ष में

भोपाल। विगत 30 जून/31 दिसंबर को सेवानिवृत्त शासकीय सेवकों को 1 जुलाई /1 जनवरी को एक वेतन वृद्धि देने के संबंध में पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा दायर याचिका में उच्च न्यायालय जबलपुर ने शुक्रवार को पेंशनरों के पक्ष में निर्णय पारित किया । एसोसिएशन की ओर से प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना एवं नर्मदापुरम के अध्यक्ष दिनेश चतुर्वेदी द्वारा याचिका क्रमांक डब्ल्यूपी - 23620/2024 प्रस्तुत की गई थी । उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में उच्चतम न्यायालय द्वारा 20 फरवरी 2025 को पारित आदेश संदर्भित कर निर्णय दिया । याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता के.सी. घिल्डियाल ने पैरवी की ।

पारित आदेश में न्यायालय ने स्पष्ट किया कि वित्तीय लाभ केवल 1 मई 23 से 7 प्रतिशत ब्याज के साथ दिया जाएगा साथ ही वेतन वृद्धि उपरांत सभी परिणामी लाभ देने के भी आदेश दिए । न्यायालय ने अपने आदेश में एवं सिद्धराज (सुप्रा) मामले में पारित सर्वोच्च न्यायालय के आदेश अनुसार बड़ी हुई वेतन वृद्धि का लाभ 6 सप्ताह की अवधि के भीतर करने के भी आदेश शासन को दिए हैं ।

भोपाल में सरेराह कारोबारी से नोटों से भरा बैग लूटा

सिर पर धारदार हथियार से हमला भी किया; टू व्हीलर पर सवार थे बदमाश

भोपाल (नप्र)। भोपाल में सरेराह लूट की घटना सामने आई है। भोपाल गेट के पास करीब दो आरोपियों ने सिर पर चाकू मारकर मोबाइल कारोबारी का नोटों से भरा बैग झपट लिया। बैग में करीब 35 हजार रुपए कैश रखे थे। वारदात को शनिवार-रविवार की दरमियानी रात 1:30 बजे अंजाम दिया है।

कारोबारी दुकान को बंद कर घर लौट रहे थे। पुलिस को रेकी के बाद लूट की आशंका है। फरियादी के करीबी और कर्मचारियों से भी पुलिस पूछताछ करेगी।

शाहजहांनाबाद पुलिस ने बताया कि राजेश अठवानी (40) पुत्र आनंदराम अठवानी प्रभुनगर ईदगाह हिल्स में रहते हैं। वह घोड़ानक्कास इलाके में मोबाइल की शॉप का संचालन करते हैं। देर रात दुकान बंद कर घर के लिए लौट रहे थे।

भोपाल गेट के करीब कैंब्रिज स्कूल के पास में उन्हें बाइक सवार दो लड़कों ने हाथ देकर रोक लिया। बदमाशों ने सिर में किसी धारदार चीज से हमला किया और राजेश के बैग को छीन लिया। इसके बाद आरोपी मौके से फरार हो गए।

परिचितों के साथ अस्पताल पहुंचे

फरियादी ने वारदात के बाद तत्काल परिजनों और परिचितों को कॉल किया। लहूलुहान हालत में उनके साथ अस्पताल पहुंचे और प्रारंभिक उपचार कराया। इसके बाद थाने पहुंचे और एफआईआर दर्ज कराई। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने स्पॉट का निरीक्षण किया और तड़के सुबह करीब तीन बजे एफआईआर दर्ज की है।

एसीबी बोले सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे

एसीपी अनिल बाजपेयी ने बताया कि आरोपियों की पहचान के लिए घटना स्थल के पास पास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। एक टीम फुटेज खंगालने का काम कर रही है। वहीं, एक अन्य टीम फरियादी के पूर्व और वर्तमान कर्मचारियों से पूछताछ करेगी। जल्द आरोपियों का सुराग जुटाकर पूरे मामले का खुलासा करेंगे।

कलेक्शन एजेंट से लूट के आरोपी भी बेसुराग

फरियादी आदित्य आर्य (24) छोला इलाके में रहता है। वह बी.कॉम ग्रेजुएट है और फिलहाल नमक कंपनी में बतौर कलेक्शन एजेंट काम करता है। बुधवार सुबह कलेक्शन के लिए निकला था। पुराने शहर के ईदगाह हिल्स, शाहजहांनाबाद, काजी कैंप और टीला जमालपुरा से कंपनी का कैश कलेक्ट करते हुए अस्सी फीट रोड नई मंडी के पास पहुंचा था। वहां दो पहिया वाहन पर सवार दो बदमाशों ने उन्हें चलती गाड़ी से गिराने के बाद लूट लिया था। इस मामले में भी आरोपी बेसुराग हैं।

पति को दौड़ा-दौड़ाकर डंडे से पीटा

सीधी में रात 12 बजे सड़क पर पटका पत्नी से बचने के लिए भागता रहा युवक

सीधी (नप्र)। सीधी जिले में एक महिला ने अपने पति को सरेआम डंडे से जमकर पीटा। घटना 30 मई को बस स्टैंड की है। इसका वीडियो रविवार दोपहर को सामने आया है। वीडियो में दिख रहा है कि पत्नी अपने पति पर लाठियां बरसा रही है। जबकि पति बचने के लिए भाग रहा है। वह सड़क पर गिर पड़ता है, फिर भी गुस्साई पत्नी रुकती नहीं, उसे पीटती रहती है। इस दौरान आसपास के लोग उसे बचाने का भी प्रयास नहीं करते हैं। मामले में पति-पत्नी में से किसी ने भी थाने में शिकायत दर्ज नहीं दर्ज करवाई है।

रात 12 बजे ही सड़क पर पटककर पीटा- जानकारी के मुताबिक, प्रेमवती सोंधिया निवासी बस स्टैंड का अपने पति राहुल सोंधिया के साथ किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। पिछले शुक्रवार रात करीब 12 बजे विवाद इतना बढ़ गया कि पत्नी प्रेमवती ने सड़क पर पति राहुल को डंडे से पीटना शुरू कर दिया। राहुल बचने के लिए भागने लगा, फिर भी पत्नी दौड़ा-दौड़ाकर डंडे से उसे पीटती रही। अचानक राहुल सड़क पर गिर पड़ा, उसके ऊपर डंडों की बरसात हो गई। इस दौरान किसी ने अपने मोबाइल पर इसका वीडियो बना लिया।

टीआई बोले- पति-पत्नी के बीच विवाद था- कोतवाली प्रभारी कन्हैया सिंह बघेल ने बताया कि घटना 30 मई की है। पत्नी प्रेमवती सोंधिया ने अपने पति राहुल के साथ मारपीट की है। दोनों का विवाद आपसी का था। जानकारी लगते ही हमने दोनों को थाने बुलवाया, जिसके बाद दोनों में से किसी ने भी शिकायती आवेदन नहीं दिया। दोनों को समझाइश देकर घर भेज दिया।

एनसीपी के राष्ट्रीय महासचिव को स्कॉटलैंड में 'विकसित भारत @2047' सम्मेलन को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया

नई दिल्ली। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री बृजमोहन श्रीवास्तव को स्कॉटिश संसद, एडिनबर्ग में विकसित भारत @2047 सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। यह प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 25 से 27 जून 2025 तक स्कॉटिश संसद, एडिनबर्ग में आयोजित होने जा रहा हैं । श्री श्रीवास्तव ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजीत पवार व कार्यकारी अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पटेल को जानकारी दी है ।

यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के दृष्टिकोण को विश्व में पहुँचाने के लिए आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में सुशासन, पर्यावरण, पर्यटन, संस्कृति, आयुष, अर्थव्यवस्था, संचार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर भारत के दृष्टिकोण विश्वव्यापी बनाना है ।

सम्मेलन में भारत से ब्रजमोहन श्रीवास्तव सहित श्री गजेंद्र सिंह शेखावत - केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, भारत सरकार,श्री श्रीपद वाई. नाइक - माननीय राज्य मंत्री, भारत सरकार,श्री राज्यवर्धन सिंह राठौर ङ्क माननीय कैबिनेट मंत्री, राज्य सरकार, राजस्थान,लॉर्ड रामी रेंजर हाउस ऑफ लॉर्ड्स, यूके, एमपी बॉब ब्लैकमैन , हाउस ऑफ कॉमन्स, यूके,श्री गॉर्डन मैकडोनाल्ड - स्कॉटिश संसद के सदस्य,श्री मार्टिन डे, पूर्व एमपी, हाउस ऑफ कॉमन्स,श्री बैरी गार्डिनर - एमपी, हाउस ऑफ कॉमन्स,श्री सुधीर चौधरी - प्रधान संपादक, डीडी न्यूज, श्री मधुर भंडारकर - भारतीय फिल्म निर्देशक और निर्माता,श्री राजेंद्र वाघमारे - अध्यक्ष, महाराष्ट्र यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स, मुंबई सहित और अन्य प्रतिष्ठित अतिथि को आमंत्रित किया है ।

इस सम्मेलन का उद्घाटन 25 जून 2035 को स्कॉटिश संसद, एडिनबर्ग में होगा तथा 26 जून 2025 को दूसरा सत्र एडिनबर्ग सिटी काउंसिल चैंबर्स में होगा । 27 जून 2025 को स्कॉटलैंड के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों का दौरा होगा ।

विश्वगुरु बनना है भारत की नियति...

*समाज हितैषी कार्य करते हुए जन-जन तक पहुँचा संघ, मध्यभारत प्रांत के संघ शिक्षा वर्गों प्रकटोत्सव समारोह सम्पन्न

भोपाल। रायसेन,सिरोंज एवं विदिशा में पिछले 15 दिवस से आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मध्यभारत प्रान्त के संघ शिक्षा वर्गों का प्रकटोत्सव समारोह रविवार को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वर्ग के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले स्वयंसेवकों ने सूर्य नमस्कार, योग, व्यायाम योग, दंड युद्ध, नियुद्ध और पदविन्यास का प्रभावी प्रदर्शन किया।

रायसेन में मुख्यवक्ता प्रांत संघचालक श्री अशोक पांडेय ने कहा कि शुरुआती दौर में संघ को उपेक्षा, उपहास और अपमान का सामना करना पड़ा, फिर भी संघ समाज हित में निरंतर कार्य करते हुए जन-जन तक पहुंचा। वर्तमान में देशभर में संघ की लगभग 73,000 शाखाएं, हजारों मिलन और 40 से अधिक समविचारी संगठन सक्रिय हैं।

उन्होंने पंच परिवर्तन के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संघ शताब्दी वर्ष में समाज में पाँच परोपकारी कार्य लेकर समाज की दृष्टि से कार्य कर रहा है जिसमें पर्यवारण जिसके द्वारा वृक्ष और जल का संरक्षण तथा सिंगल यूज़ प्लास्टिक मुक्त भारत, समरसता के माध्यम से समाज में व्याप्त क्लेश तथा जन्म आधारित छुआछूत और अस्पृश्यता को समाप्त करना, परिवार नामक हमारी संस्था के टूटने के कारण समाज में व्याप्त गिरावट को कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से रोकना, अपने गौरवशाली अतीत को याद कर उस पर गर्व करना अपने श्रेष्ठ ज्ञान/परंपराओं आदि का पुनः स्थापित करने स्व बोध का भाव जागरण करना एवं नागरिक शिष्टाचार के माध्यम से प्रत्येक नागरिक कर्तव्य व शासन-समाज के नियम और कानून का पालन कर सभी राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने के पवित्र कार्य मे सहयोगी बनें। सिरोंज में प्रकटोत्सव समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्री श्री 1008 ईश्वर दास जी ने आशीर्वचन ने देते हुए कहा कि स्वयंसेवक अपनी साधना एवं त्याग के बल पर समाज सेवा में रत रहते हैं। स्वयंसेवकों को यह शिक्षा शाखा एवं वर्ग के माध्यम से प्राप्त होती है।

भाई की शादी से लौटकर युवक ने लगाई फांसी

खेत में जामुन के पेड़ पर लटका मिला शव, तीन महीने पहले की थी लव मैरिज

भोपाल (नप्र)। भोपाल में भाई की शादी से लौटने के बाद युवक ने फांसी लगा ली। तीन महीने पहले उसने लव मैरिज की थी। उसकी पत्नी बीते एक महीने से मायके में रह रही है। हालांकि सुसाइड नोट नहीं मिलने से आत्महत्या के सही कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। मामले में सूखी सेवनिया पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। बॉडी को सबसे पहले मृतक के पिता ने रविवार सुबह आठ बजे फंदे पर लटके हुए देखा। इसके बाद पुलिस को सूचना दी। पीएम के बाद पुलिस ने शव को रविवार की दोपहर को परिजनों के हवाले कर दिया।

आखिरी बार पिता के साथ बैठकर खाया खाना- अरुण लोधी (26) पुत्र जगदीश लोधी निवासी इमलिया गांव थाना सूखी सेवनिया क्षेत्र में रहता था। वह पिता के साथ खेती-किसानी करता था। शनिवार रात को गांव में रहने वाले उसके चचेरे भाई की शादी थी। उसके शादी समारोह में भी शामिल हुआ। मृतक के पिता जगदीश ने बताया कि वहां उसने मेरे साथ खाना खाया था। तब तक वह बेहद खुश नजर आ रहा था। किसी परेशानी का जिक्र भी उसने नहीं किया था।

भोपाल में पिता के सामने नदी में डूबा जवान बेटा

दोस्तों और परिजनों के साथ रिश्तेदारी में आया था

भोपाल (नप्र)। ईटखेड़ी इलाके की बरखेड़ी खुर्द नदी में डूबने से 20 साल के युवक की मौत हो गई। वह पिता और चाचा सहित दोस्तों के साथ नदी में नहाने गया था। तब गहरे पानी में डूबने से उसकी जान चली गई। हादसा रविवार की सुबह का है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

टीआई आशीष सपरे ने बताया कि 20 वर्षीय दीपक सपेरा नजीराबाद का रहने वाला था। शनिवार को पिता-चाचा और दोस्तों के साथ ईटखेड़ी इलाके में रिश्तेदारी में आया था। रविवार को नहाने के लिए बरखेड़ी खुई नदी पर गया था। नहाते हुए गहरे पानी में जाने से डूब गया। पिता-चाचा ने उसे बचाने का प्रयास किया लेकिन पानी की गहराई में जाने से उसकी जान चली गई। गांव वालों की मदद से पुलिस ने शव को बरामद किया। रविवार की दोपहर को पीएम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी गई है।

एसआई बोले-जिम में मुस्लिम न ट्रेनिंग देने आएगा, न लेने

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक जिम में टीम के साथ पहुंचे एसआई (सब-इंस्पेक्टर) ने स्टाफ से कहा कि यहां न कोई मुस्लिम ट्रेनिंग देने आएगा और न ही लेने। टीम के साथ बजरंग दल के कार्यकर्ता भी मौजूद थे। पुलिस की मौजूदगी में ही बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने महिला स्टाफ से मुस्लिम ट्रेनरों के बारे में पूछताछ की। पूरे घटनाक्रम का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। इसके बाद एसीपी अक्षय चौधरी ने जांच के बाद कार्रवाई की बात कही। कार्यकर्ताओं ने पुलिस की मौजूदगी में महिला स्टाफ से ट्रेनरों के बारे में पूछताछ की।

वीडियो दो दिन पुराना, हो रहा वायरल- मामला अयोध्या नगर के एक जिम का है। दो दिन पहले एसआई दिनेश शर्मा ने टीम के साथ दबिश दी थी। यहां सोफे पर बैठकर स्टाफ के लोगों से पूछताछ की। उन्होंने किसी भी मुस्लिम और मुस्लिम ट्रेनरों को जिम में एंट्री नहीं देने के निर्देश दिए।

8 पुलिसकर्मियों के सुरक्षा घेरे में 'संविधान निर्माता'

ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में अंबेडकर प्रतिमा स्थापना को लेकर दो गुट आमने-सामने

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा लगाने को लेकर वकीलों के दो गुट आमने-सामने हैं। एक गुट का कहना है कि उन्हें प्रतिमा लगाने के लिए चीफ जस्टिस से स्वीकृति मिल चुकी है। आदेश के बाद पीडब्ल्यूडी विभाग ने उसके लिए फाउंडेशन भी तैयार कर दिया था, लेकिन बार एसोसिएशन इसका विरोध कर रहा है।

जबकि प्रतिमा लगाने का विरोध कर रहे गुट का दावा है कि चीफ जस्टिस की सहमति प्रक्रियात्मक गलती है। कोर्ट परिसर में किसी भी व्यक्ति का महिमा मंडन करने के लिए मूर्ति नहीं लगाई जाए। वैसे भी न्यायालय परिसर में तिरंगा लग चुका है। इससे बड़ा देश में कोई नहीं है।

इधर, बन कर तैयार हो चुकी डॉ. भीमराव अंबेडकर की 10 फीट ऊंची प्रतिमा अभी मूर्तिकार प्रभात राय के स्टूडियो में है। प्रतिमा की सुरक्षा के लिए चारों तरफ एक दर्जन से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। एक सब इंस्पेक्टर सहित 8 पुलिसकर्मी 24 घंटे ड्यूटी पर तैनात रहते हैं। स्टूडियो के जिस एरिया में मूर्ति है वहां किसी को आने-जाने की इजाजत नहीं है।

फिलहाल ग्वालियर में हाईकोर्ट के दोनों पक्ष अपनी-अपनी रणनीति बना रहे हैं। ग्वालियर में 29 जून को भीम सेना का 'भीमराव अग्निपथ महासभा' और आजाद समाज पार्टी ने 11 जुलाई को 'अंबेडकर महापंचायत' बुलाई है। साथ ही, प्रतिमा लगाने

के पक्षधर वकीलों ने 31 मई को सांसद भारत सिंह कुशवाह को एक ज्ञापन दिया है, जिसमें उनसे मांग की है कि आप और केंद्रीय कानून मंत्री इस मामले में शामिल हो, जिससे कोर्ट परिसर में प्रतिमा स्थापित की जा सके। ज्ञातव्य है कि 17 मई 2025 को भीम आर्मी के पूर्व सदस्य रूपेश केन को हाईकोर्ट परिसर के सामने वकीलों ने पीट दिया।

विवाद कहां से शुरू हुआ?- ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में डॉ. भीमराव अंबेडकर मूर्ति विवाद की शुरुआत 19 फरवरी 2025 को हुई थी। इसी दिन 19 फरवरी को मप्र हाईकोर्ट के तत्कालीन चीफ जस्टिस सुरेश कुमार कैत ग्वालियर आए थे। यहां एक गुट के एडवोकेट विश्वजीत रतोनिया, धर्मेंद्र कुशवाह और राय सिंह ने ज्ञापन सौंपा था, जिसमें ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में अंबेडकर की प्रतिमा लगाने की मांग की गई थी।

चीफ जस्टिस ने मौखिक सहमति दे दी थी। इसके बाद पीडब्ल्यूडी ने परिसर में मूर्ति के लिए स्ट्रक्चर बना दिया। वकीलों ने चंदा इकट्ठा करके मूर्ति बनवाई, लेकिन वकीलों के इस गुट ने बार एसोसिएशन के अध्यक्ष और सचिव को इसकी जानकारी नहीं दी। इसी वजह से टकराव शुरू हो गया। 10 मई को बार एसोसिएशन ने जाकर स्ट्रक्चर पर तिरंगा लगा दिया।

26 मार्च को प्रिंसिपल रजिस्ट्रार का आदेश- मामले में इसके बाद 26 मार्च 2025 को प्रिंसिपल रजिस्ट्रार का आदेश आया। इसमें बताया गया कि कमेटी के 5 सदस्यों ने डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा की स्थापना को कुछ समय के लिए टालने का सुझाव दिया था। हालांकि, दो सदस्यों ने प्रतिमा स्थापना पर सहमति जताई है। उनका तर्क था कि काम शुरू हो चुका है। वकीलों और आम जनता द्वारा मूर्ति निर्माता को भुगतान भी किया जा चुका है।

बैठक के बाद से काफी समय बीत चुका है। जिला और हाईकोर्ट के अधिकांश वकीलों ने मूर्ति स्थापना के पक्ष में हस्ताक्षर अभियान शुरू कर दिया है, इसलिए मूर्ति स्थापित की जानी चाहिए। इस आदेश में आखिरी लाइन यही लिखी थी कि मूर्ति स्थापित की जा सकती है।

बार एसोसिएशन विरोध में उतरी, बोली-तरीका अवैध

इस आदेश के बाद बार एसोसिएशन ग्वालियर ने प्रतिमा स्थापना का विरोध शुरू कर दिया। उनका तर्क था कि मूर्ति स्थापना का तरीका पूरी तरह अवैध है। सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन है कि किसी भी सार्वजनिक स्थान पर किसी भी महापुरुष की प्रतिमा स्थापित नहीं की जाएगी।

इसके बाद भी वकीलों का एक पक्ष अपनी ओर से प्रस्ताव लेकर आया और प्रक्रिया की, जबकि न बार एसोसिएशन के अध्यक्ष, सदस्यों को विश्वास में लिया गया और न ही बिल्डिंग कमेटी की सहमति ली गई। जबकि बिल्डिंग कमेटी ने साफ तौर पर मूर्ति स्थापना से इनकार कर दिया था।

जातिगत विवाद में बदला विचारों का टकराव

पहले यह विवाद हाईकोर्ट की ग्वालियर खंडपीठ के परिसर में वकीलों के दो पक्षों का था। यह विचारों का टकराव था, जो धीरे-धीरे अहम और तनाव के चलते अब जातिगत टकराव में बदलता जा रहा है। इसमें डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा का जिक्र होते ही कई बाहरी संगठन कूद पड़े हैं। जिससे सोशल मीडिया से लेकर पान और गुमटियों पर जमकर चर्चा और एक-दूसरे को चुनौतियां दी जा रही हैं और स्वीकार की जा रही हैं। यही कारण है कि पुलिस ने संविधान निर्माता की प्रतिमा को निगरानी में लेकर कड़ी सुरक्षा में रखा है।

नेशनल एनीमल राइट्स डे पर भोपाल में प्रदर्शन

ईद पर आया था 'अज़ीज़ दोस्त', फिर काट दिया

भोपाल (नप्र)। जब मैं सात साल का था, तब ईद पर कुर्बानी के लिए घर में एक जानवर आया। कहा गया कि इसे अपना 'अज़ीज़ दोस्त' समझो। कुछ दिन बाद उसी जानवर को अल्लाह के नाम पर काट दिया गया। मैं रोते-रोते बेहोश हो गया। शाम को जब उसी जानवर का मांस खाने को दिया गया, तो मेरा गला बंद हो गया। उस दिन मुझे समझ आ गया कि जानवर खाने के लिए नहीं, दोस्त बनने के लिए होते हैं।

यह कहानी है अयान अली सिद्दीकी की, जो मुस्लिम समाज से हैं और ऑल इंडिया एनीमल वेलफेयर बोर्ड के प्रतिनिधि भी हैं। उन्होंने बताया कि जब उन्होंने घर में नॉनवेज खाना छोड़ने का फैसला किया, तो लोगों ने कहा कि 'मुस्लिम के घर ब्राह्मण पैदा हो गया है'। लेकिन उनकी इस संवेदनशील सोच और गंभीरता को देखकर परिवार ने भी नॉनवेज खाना बंद कर दिया।

अयान आज पूरी तरह से वेजिटेरियन से वीगन बन चुके हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि दूध और डेयरी उद्योग में भी जानवरों के साथ क्रूरता होती है।

नेशनल एनीमल राइट्स डे पर खास प्रदर्शन- बकरीद से कुछ दिन पहले भोपाल में रविवार को नेशनल एनीमल राइट्स डे के अवसर पर आईटीसी पार्क और राजा भोज सेतु पर एक खास प्रदर्शन हुआ, जिसने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया। एनीमल वेलफेयर कार्यकर्ताओं ने मृत पक्षियों, मछलियों, मुर्गियों के कटे सिर और कछुओं के अंगों को पिंजरे में रखकर मार्च निकाला।

बकरीद पर धीरेंद्र शास्त्री ने दिया बयान- बता दें छतरपुर सुंदरकांड सम्मेलन में बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने बकरीद के दौरान होने वाली बलि प्रथा को वर्तमान समय की एक गलत परंपरा बताते हुए इसे पूरी तरह समाप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, जानवरों को मारना किसी भी धर्म में भगवान तक पहुंचने का मार्ग नहीं हो सकता। यह प्रथा इंसानियत के खिलाफ है और इसे रोकना जरूरी है।

जानवर प्रोटीन नहीं, संवेदनशील प्राणी है

इस प्रदर्शन का मकसद था जानवरों को केवल 'प्रोटीन' के रूप में न देखना बल्कि उन्हें संवेदनशील प्राणी समझना और यह संदेश देना कि उनकी हत्या इंसानियत के खिलाफ है।

कार्यक्रम में शामिल अयान अली सिद्दीकी के अलावा एनीमल वेलफेयर की सक्रिय सदस्य इशिता गोंडली ने कहा, जानवरों की हत्या इंसान की लालच, स्वाद या सहूलियत के लिए हो रही है, जो कहीं से भी न्यायसंगत नहीं है। पेट भरने के लिए या यह सोचकर कि जानवरों को मारने से भगवान तक पहुंच जाएंगे, यह सोच पूरी तरह गलत है। यह न हमारे लिए न्याय है और न ही जानवरों के लिए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम और जागरूकता

कार्यक्रम में आईटीसी पार्क में जानवरों के लिए श्रद्धांजलि सत्र, नुक्कड़ नाटक और नृत्य प्रस्तुतियां हुईं, जिनके जरिए इंसानी लालच और आस्था के नाम पर जानवरों के शोषण को दर्शाया गया।

इसके अलावा, जागरूकता सत्र में प्रतिभागियों ने टी-शर्ट पेंटिंग, फेस पेंटिंग जैसी गतिविधियों के साथ अपनी बात साझा की। यह आयोजन जानवरों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने और उनकी रक्षा के लिए समाज में जागरूकता फैलाने का प्रयास था।

भोपाल में 1200 साल पुराने नाट्य सिद्धांतों पर वर्कशॉप

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में 21 जून तक चलेगी कार्यशाला, देशभर से आए 70 रंगकर्मी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में रविवार को कार्यशाला की शुरुआत की गई। यहां करीब 1200 साल पुराने नाट्य सिद्धांतों पर मंथन होगा। यह 21 जून साल 2025 तक चलेगी। इस वर्कशॉप में पूरे देश के अलग-अलग हिस्सों से आए करीब 70 रंगकर्मी (नाट्य कलाकार) हिस्सा ले रहे हैं। ये सभी शारदा तनय नाम के महान नाट्याचार्य के ग्रंथ भाव प्रकाशन पर चर्चा करेंगे।

क्यों खास है भाव प्रकाशन ग्रंथ- यह ग्रंथ भरतमुनि के मशहूर नाट्यशास्त्र की परंपरा में आता है और इसका नाट्य कला में बहुत महत्व है। शारदा तनय ने इसमें नाटक में भावनाओं और रसों को कैसे दिखाया जाए, इस पर खास बातें बताई हैं।

उन्होंने एक्टर और दर्शक, दोनों को ध्यान में रखकर अपनी बातें समझाई हैं, जिन्हें देश-विदेश में काफी पसंद किया जाता है। शारदा तनय ने अपने से पहले के गुरुओं से बहुत कुछ सीखा और महाराज भोज के शृंगार प्रकाश से प्रभावित होकर अपने ग्रंथ का नाम भाव प्रकाशन रखा।रविवार सुबह 9:30 बजे इस कार्यशाला का उद्घाटन प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने किया।

देशभर से आए विद्वान देंगे ट्रेनिंग- केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. रमाकांत पांडेय ने बताया कि इस 21 दिन की कार्यशाला में 70 प्रतिभागी हैं। जिन्हें देश के बड़े विद्वान ट्रेनिंग देंगे। इनमें प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी (वाराणसी), प्रो. शिवराम शर्मा (वाराणसी), प्रो. बालकृष्ण शर्मा (उज्जैन), प्रो. मार्गी मधु (केरल), प्रो. इंदु (केरल) और प्रो. रामकुमार शर्मा (जयपुर) जैसे नाम शामिल हैं।

प्रो. पांडेय ने कहा कि कश्मीर से मिली ज्ञान की इस विरासत को आज के समय में फैलाना और उस पर रिसर्च करना बहुत जरूरी है। इस वर्कशॉप में ये विद्वान अपने अनुभव और नए तरीकों से समाज के बीच नाट्य कला को और प्रभावी बनाने के सूत्रों को उजागर करेंगे।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

छत्तीसगढ़ में सरकार और संगठन का काम अटका

कहते हैं भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की नियुक्ति नहीं होने के कारण छत्तीसगढ़ में मंत्रिमंडल का विस्तार नहीं हो पा रहा है और न ही प्रदेश संगठन में नई नियुक्ति हो पा रही है। प्रदेश भाजपा की पुरानी कार्यकारिणी ही अभी अस्तित्व में हैं। दोबारा प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद किरण देव अपनी कार्यकारिणी नहीं बना पाए हैं। पुरानी कार्यकारिणी में महामंत्री संजय श्रीवास्तव राज्य नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष बन गए हैं तो जगदीश रामू रोहरा प्रदेश भाजपा महामंत्री (मुख्यालय) के साथ धमतरी के महापौर भी हैं। कहते हैं प्रदेश भाजपा का कई काम जगदीश रामू रोहरा के स्केन किए हुए हस्ताक्षर से चल रहा है। इन दोनों के अलावा कुछ और पदाधिकारियों के सिर पर सत्ता का सेहरा बंध गया है, पर उनकी जगह नए लोगों को जिम्मेदारी देने का काम राष्ट्रीय अध्यक्ष के इंतजार में अटका पड़ा है। मंत्रिमंडल के विस्तार का मामला भी नए राष्ट्रीय अध्यक्ष का बाट जोह रहा है। राज्य में मुख्यमंत्री समेत 13 मंत्री का फार्मूला है। पहले ही एक मंत्री कम बनाया गया था, फिर बृजमोहन अग्रवाल के सांसद बन जाने से एक और मंत्री पद खाली हो गया। दोनों मंत्री पद को भरने की चर्चा कई बार चल चुकी है, पर अब तक नतीजा सिफर रहा है। जून महीने में मंत्रिमंडल विस्तार की बात फिर चली, लेकिन इसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष का पेंच फंस गया। बताते हैं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का कार्यकाल बिहार चुनाव तक बढ़ सकता है। नड्डा जी वैसे तो रहने वाले हिमाचल प्रदेश के हैं, पर पढ़ाई-लिखाई पटना में की है। इस नाते नड्डा जी बिहार निवासी भी हो गए। नड्डा जी के बिहार कनेक्शन के कारण उनका कार्यकाल दिसंबर तक बढ़ने की चर्चा होने लगी है। ऐसे में दिसंबर के बाद ही छत्तीसगढ़ में सरकार व संगठन में नए चेहरे की संभावना व्यक्त की जाने लगी है।

अटका फुलटाइम डीजीपी का आदेश

छत्तीसगढ़ के फुलटाइम डीजीपी के लिए यूपीएससी ने करीब हफ्तेभर पहले पैनल भेज दिया था, पर अब तक राज्य सरकार ने फुलटाइम डीजीपी का आदेश जारी नहीं किया है। इसको लेकर तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। बताते हैं छत्तीसगढ़ सरकार ने फुलटाइम डीजीपी के लिए अरुणदेव गौतम,पवनदेव, जीपी सिंह और हिमांशु गुप्ता का नाम यूपीएससी भेजा था। यूपीएससी ने स्क्रीनिंग करके अरुणदेव गौतम और हिमांशु गुप्ता के नाम का पैनल राज्य को भेज दिया। कहा जा रहा है कि पैनल में नाम नहीं होने से पवनदेव और जीपी सिंह ने यूपीएससी में अभ्यावेदन लगा दिया है। चर्चा है कि यूपीएससी के फैसले के खिलाफ पवनदेव कैट पहुँच गए हैं और अगले हफ्ते जीपी सिंह भी कैट में आवेदन लगा देंगे। यूपीएससी के पैनल पर अंतिम निर्णय राज्य सरकार को लेना है, पर पवनदेव और जीपी सिंह के कैट पहुँचने से मामला और लटक जाने की संभावना बताई जा रही है। दूसरी तरफ डीजीपी के दावेदारों में से एक अफसर का राजस्थान कनेक्शन भी चर्चा में है। कहते हैं राजस्थान कनेक्शन के कारण भी फैसला इधर-उधर हो रहा है। कुल मिलकर छत्तीसगढ़ में फुलटाइम डीजीपी का मामला बीरबल की खिचड़ी की तरह हो गया है।

दिल्ली दरबार में मंत्रियों की शिकायत

चर्चा है कि प्रदेश भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने राज्य के दो मंत्रियों की दिल्ली दरबार में शिकायत की है। बताते हैं कि भाजपा के नेता पिछले हफ्ते ही दिल्ली जाकर अमित शाह के सामने अपनी बातें रखी। अब नेताजी की बात पर फैसला क्या होता है, यह तो समय ही बताएगा। कहा जाता है दोनों ही मंत्री सरकार में वजनदार हैं। एक अनुभव के कारण तो एक योग्यता के कारण। इनमें से एक मंत्री जी मुंहफट हैं तो दूसरे सुर्खियों में रहने के शौकीन हैं। एक मंत्री जी पिछले दिनों एक जिला स्तर के अफसर को फटकार भी लगा दी थी। इस फटकार के बाद कुछ अफसर मंत्री के मुखालफत भी करने लग गए हैं। कहते हैं नेताजी को मंत्री जी का मुंहफट होना और सुर्खियों वाला शौक भा नहीं रहा है।

अमिताभ जैन को एक्सटेंशन मिलेगा ?

चर्चा है कि मुख्य सचिव अमिताभ जैन को छह महीने का एक्सटेंशन मिलेगा। खबर है कि अमिताभ जैन के एक्सटेंशन का प्रस्ताव राज्य सरकार ने केंद्र को भेज दिया है। अमिताभ जैन को छह महीने का एक्सटेंशन मिलता है तो वे दिसंबर 2025 तक राज्य के मुख्य सचिव रहेंगे और लंबे समय तक छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव रहने का रिकार्ड भी बना लेंगे। अमिताभ जैन 21 जून को 60 साल के हो जाएंगे। एक्सटेंशन नहीं मिलेगा तो 30 जून को रिटायर हो जाएंगे, पर एक्सटेंशन की पूरी संभावना बताई जा रही है। केंद्र और राज्य में एक ही पार्टी की सरकार होने का फायदा अमिताभ जैन को मिलेगा। इस बीच भारत सरकार रिटायरमेंट की आयु 60 से बढाकर 62 वर्ष कर देती है तो अमिताभ जैन के लिए सोने पर सुहागा हो जाएगा।

अंबलगन और मंगई की केंद्र में पोस्टिंग

छत्तीसगढ़ कैडर के 2004 बैच के आईएएस अंबलगन पी और अलरमेल मंगई डी की भारत सरकार में पोस्टिंग हो गई है। अंबलगन पी को केंद्रीय कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव बनाया गया है। अलरमेल मंगई डी आयुष मंत्रालय में संयुक्त सचिव होंगी। माना जा रहा है कि दोनों अफसर जून के दूसरे हफ्ते में छत्तीसगढ़ से रिलीव हो जाएंगे। अंबलगन पी छत्तीसगढ़ सरकार में सचिव संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक धर्मस्व हैं। अलरमेल मंगई डी के पास श्रम विभाग का प्रभार है। दोनों आईएएस के कार्यमुक्त होने के बाद मंत्रालय स्तर पर कुछ सचिवों के प्रभार बदल सकते हैं। वहीं सुशासन तिहार की रिपोर्ट के आधार पर कुछ कलेक्टर भी प्रभावित हो सकते हैं। अनुमान है कि लिस्ट छोटी ही रहेगी।

लटक गए सूर्यकांत तिवारी

कांग्रेस शासन में सुर्खियों में रहने वाले कारोबारी सूर्यकांत तिवारी जेल से बाहर नहीं आ पाए। कोल स्कैम और अन्य मामलों में फंसे आईएएस समीर विश्नोई, रानू साहू और राज्य सेवा की अधिकारी सौम्या चौरसिया समेत छह लोग महीनों बाद जेल से निकल आए। ये सभी कांग्रेस शासन में गड़बड़ी करने के आरोप में कांग्रेस का राज रहते ही ईडी की चपेटे में आए थे। जेल से रिहा होने के बाद ये छत्तीसगढ़ में नहीं रह पाएंगे। गवाहों को प्रभावित करने की आशंका के चलते सुप्रीम कोर्ट ने इन्हें राज्य से बाहर रहने के निर्देश दिए हैं। बताते हैं सूर्यकांत तिवारी को डीएमएफ मामले में जमानत नहीं मिल पाई इस कारण इन लोगों के साथ वे जेल से बाहर नहीं आ पाए। डीएमएफ मामले में जुलाई में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होनी है, तब तक तो सूर्यकांत को जेल में ही बिताना पड़ेगा।

अब आलोक चंद्रवंशी के भरोसे सूचना आयोग

राज्य सूचना आयोग में अब एकमात्र सूचना आयुक्त आलोक चंद्रवंशी रह गए हैं। मुख्य सूचना आयुक्त का पद करीब तीन साल से रिक्त है। सूचना आयुक्त नरेंद्र शुक्ला 21 मई को रिटायर हो गए। सूचना आयुक्त का एक पद पहले से खाली है। मुख्य सूचना आयुक्त और दो सूचना आयुक्त के पद पर नियुक्ति की प्रक्रिया चल ही रही थी कि पिछले दिनों छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट का स्टे आ गया। अब मुख्य सूचना आयुक्त और सूचना आयुक्तों की नियुक्ति जल्द होने की उम्मीद नजर नहीं आ रही है। पिछले दिनों मुख्य सूचना आयुक्त के पद के लिए पूर्व डीजीपी अशोक जुनेजा का नाम सामने आया था, पर कोर्ट के फैसले तक तो मामला लटक गया। ऐसे में सूचना आयुक्त आलोक चंद्रवंशी ही राज्य सूचना आयोग को चलाएंगे।

पीसीसी अध्यक्ष के लिए उमेश और देवेंद्र सुर्खियों में

एक तरफ प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज पैदल यात्रा और धरना-प्रदर्शन के जरिए राज्य में कांग्रेस को सुर्खियों में बनाए रखने की कोशिश में हैं, वहीं उनको बदले जाने की भी सुगबुगाहट चल रही है। पहले प्रदेश अध्यक्ष के लिए पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव का नाम चला। अब विधायक उमेश पटेल और देवेंद्र यादव का नाम चर्चा में है। देवेंद्र यादव अभी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव और बिहार के प्रभारी हैं। उमेश पटेल ने पार्टी में अब तक कोई खास जगह नहीं बनाई है, जो कुछ है, वह उन्हें नंदकुमार पटेल के पुत्र के कारण मिला है। देवेंद्र यादव बिलासपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़े। युवक कांग्रेस में खासे सक्रिय रहे, पर भाई धर्मेंद्र यादव पर निर्भरता चर्चा में रहता है। लेकिन उमेश पटेल और देवेंद्र यादव दोनों राहुल गांधी की पसंद के माने जा रहे हैं, इस कारण दोनों का नाम प्रदेश अध्यक्ष के लिए चर्चा में है।